A Daily News Magazine
इंदौर
बुधवार, 25 मार्च, 2026

इंदौर एवं भोपाल से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 11 अंक 171, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

सुबह सवेरे

प्रसंगवश

चीन अब करेगा पानी से वार, भारत कैसे देगा जवाब?

नीरज कुमार दुबे

चीन ने तिब्बत के यारलुंग सांगपो नदी पर जिस विशाल जलविद्युत परियोजना की शुरुआत की है, उसने एशिया की भू-राजनीति में हलचल नहीं बल्कि भूकंप ला दिया है। यह कोई साधारण बांध नहीं, बल्कि पानी के जरिये ताकत हासिल करने की खुली रणनीति है। और सबसे खतरनाक बात यह है कि इसकी मार सीधे भारत और बांग्लादेश जैसे निचले देशों पर पड़ने वाली है। इस साल की शुरुआत में चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग ने अपने नववर्ष संबोधन में जब इस परियोजना का ऐलान किया तो दुनिया को साफ संदेश मिला कि चीन अब न तो पर्यावरण की चिंता करेगा और न ही पड़ोसी देशों की। करीब 167 अरब डॉलर की लागत से बन रही यह परियोजना दुनिया की सबसे बड़ी जलविद्युत योजना बताई जा रही है जिसकी क्षमता 67 से 80 गीगावाट तक आंकी जा रही है। तुलना करें तो यह थ्री गॉर्जेस बांध से भी लगभग तीन गुना बड़ी हो सकती है।

यह वही नदी है जो भारत में सियांग और फिर ब्रह्मपुत्र बनती है और आगे बांग्लादेश में जमुना के रूप में बहती है। अकेले ब्रह्मपुत्र घाटी में भारत के करीब तेरह करोड़ लोगों की आजीविका इस नदी पर निर्भर है जबकि बांग्लादेश में यह संख्या करोड़ों में है। यानी यह परियोजना सीधे करोड़ों जिंदगियों पर असर डालने वाली है।

चीन इस परियोजना को 'हरित ऊर्जा' का नाम दे रहा है, लेकिन असल खेल कहीं ज्यादा गहरा है। नदी के ऊपरी हिस्से पर नियंत्रण का मतलब है नीचे बहने वाले पानी पर नियंत्रण। और यही वह बिंदु है जहां यह परियोजना एक रणनीतिक हथियार बन जाती है।

विशेषज्ञों का साफ कहना है कि यदि चीन चाहे तो सूखे के समय पानी रोक सकता है और तनाव के समय अचानक छोड़ सकता है। इससे बाढ़ जैसी तबाही पैदा हो सकती है। यही वजह है कि भारत के पूर्वोत्तर में इसे वाटर बम कहा जा रहा है।

लोवी संस्थान की एक रिपोर्ट ने चेतावनी दी है कि तिब्बत के पठार पर चीन का बढ़ता जल नियंत्रण भारत की अर्थव्यवस्था पर गला घोंटने वाला दबाव बना सकता है। यह केवल जल संकट नहीं बल्कि खाद्य संकट और ऊर्जा संकट को भी जन्म दे सकता है।

जिस इलाके में यह परियोजना बन रही है वह भूगर्भीय दृष्टि से बेहद अस्थिर है। यह क्षेत्र दुनिया की सबसे गहरी घाटियों में गिना जाता है और यहां भूकंप तथा भूस्खलन आम बात है। ऐसे में इतनी बड़ी संरचना बनाना सीधे आपदा को निमंत्रण देना है। यदि किसी भी कारण से बांध को नुकसान पहुंचता है तो उसका असर हजारों किलोमीटर दूर तक जा सकता है। ब्रह्मपुत्र की तेज धारा और विशाल जल प्रवाह इसे और भी खतरनाक बना देते हैं।

इसके अलावा नदी के प्राकृतिक प्रवाह में बदलाव से पूरे पारिस्थितिकी तंत्र पर असर पड़ेगा। अनुमान है कि ब्रह्मपुत्र हर साल लगभग सात सौ मिलियन टन गाद लेकर आती है जो असम और बांग्लादेश की जमीन को उपजाऊ बनाती है। यदि यह प्रवाह बाधित हुआ तो खेती पर सीधा असर पड़ेगा।

इस पूरे मामले में सबसे ज्यादा चिंता पारदर्शिता को लेकर है। न तो पर्यावरणीय रिपोर्ट सार्वजनिक की गई है और न ही स्थानीय लोगों से कोई राय ली गई है। तिब्बती समुदाय और पर्यावरण कार्यकर्ताओं की आवाज को पूरी तरह नजरअंदाज किया जा रहा है। भारत के पूर्व विदेश सचिव कंवल सिब्बल ने इसे चीन का दोहरा रवैया बताया है। उन्होंने हाल ही में कहा कि चीन जब अपने हित में होता है तो अंतरराष्ट्रीय नियमों की बात करता है और जब नहीं होता तो उन्हें कुचल देता है।

चीन की इस चाल के जवाब में भारत ने भी अपनी रणनीति तेज कर दी है। भारत पूर्वोत्तर में 208 बांध बनाने की योजना पर काम कर रहा है जिसकी कुल क्षमता 75 गीगावाट से ज्यादा होगी। इसमें सबसे बड़ा प्रोजेक्ट अपर सियांग है जिसकी ऊंचाई लगभग तीन सौ मीटर और क्षमता ग्यारह गीगावाट होगी। इसका मकसद केवल बिजली बनाना नहीं बल्कि चीन के जल नियंत्रण के खतरे को संतुलित करना है। भारत की योजना है कि वर्ष 2047 तक ब्रह्मपुत्र बेसिन से छिहत्तर गीगावाट से अधिक बिजली पैदा की जाए। यानी यह साफ है कि यह अब ऊर्जा की दौड़ नहीं बल्कि रणनीतिक टकराव बन चुका है।

अब यह संघर्ष केवल नदी तक सीमित नहीं रहा। जलविद्युत परियोजनाएं अब कृत्रिम बुद्धिमत्ता और डिजिटल नेटवर्क से जुड़ चुकी हैं। चीन अपने बांधों को स्मार्ट ऊर्जा तंत्र से जोड़ रहा है जबकि भारत भी कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित निगरानी और डेटा विश्लेषण पर काम कर रहा है। इसका सीधा मतलब है कि जो देश पानी को नियंत्रित करेगा वही ऊर्जा और डेटा दोनों पर नियंत्रण हासिल करेगा। यानी भविष्य की ताकत अब पानी और तकनीक के गठजोड़ में छिपी है।

सबसे बड़ा खतरा यह है कि ब्रह्मपुत्र को लेकर भारत और चीन के बीच कोई औपचारिक जल समझौता नहीं है। यानी कोई बाध्यता नहीं, कोई जवाबदेही नहीं। अतीत में चीन ने साल 2000 में आई बाढ़ के दौरान जरूरी आंकड़े साझा नहीं किए थे, जिससे भारी नुकसान हुआ था। इससे भरोसे की कमी और गहरी हो गई है।

आज हिमालय केवल सीमाओं का नहीं बल्कि पानी और ऊर्जा का युद्ध क्षेत्र बन चुका है। चीन अपनी तकनीकी और आर्थिक ताकत के बल पर बढ़त लेने की कोशिश कर रहा है, जबकि भारत जवाबी संतुलन बनाने में जुटा है। बांग्लादेश के लिए यह स्थिति और भी गंभीर है क्योंकि वह पूरी तरह इस नदी पर निर्भर है। यदि सूखे के समय पानी घटा तो वहां खाद्य संकट गहरा सकता है।

बहरहाल, चीन का यह मेगा बांध विकास का प्रतीक कम और वर्चस्व की रणनीति ज्यादा लगता है। यह परियोजना आने वाले समय में एशिया की स्थिरता को प्रभावित कर सकती है। अब यह केवल पर्यावरण या ऊर्जा का मुद्दा नहीं रहा। यह सत्ता, संसाधन और भविष्य की दिशा तय करने वाली जंग बन चुका है। ब्रह्मपुत्र की हर बूंद अब सिर्फ पानी नहीं रही, बल्कि वह आने वाले समय की शक्ति और संघर्ष की कहानी लिख रही है।

(प्रभासाक्षी डॉट कॉम पर प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

subahsaverenews@gmail.com
facebook.com/subahsaverenews
www.subahsavere.news
twitter.com/subahsaverenews

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव का जन्मदिन आज

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव का 25 मार्च को जन्मदिन है। उन्होंने 11 दिसंबर 2023 को प्रदेश के मुखिया की कमान संभाली थी। इसके पहले वो राज्य सरकार में मंत्री व अन्य पदों पर भी रहे। उच्च शिक्षित डॉ. मोहन यादव का राजनीतिक जीवन उपलब्धियों से भरा रहा है। राज्य के मुख्यमंत्री के रूप में भी उन्होंने अपनी विशिष्ट कार्यशैली से अलग छाप छोड़ी है।

शरद की सुबह

मैं हंस रहा हूँ
जब कि हंसना
इस समय का
प्रतिरोध है

मैं हंस रहा हूँ
जब कि हंसना
राज-सत्ता के प्रति
विद्रोह है

मैं हंस रहा हूँ
जब कि हंसना
अपने अंदर के
रोने की खिलाफ़त है

मैं हंस रहा हूँ
जब कि हंसना
अपने आदमी होने को
नकारना है

मैं हंस रहा हूँ
जबकि हंसना
अपने हृदय के सत्य को
झूठा बताना है।

-दुर्गाप्रसाद झाला

महिला अफसर सेना में स्थायी कमीशन की हकदार

- सुप्रीम कोर्ट ने कहा- इससे इनकार करना भेदभाव था

कहा- जिनकी सर्विस खत्म हुई, उन्हें भी पेंशन मिलेगी

नई दिल्ली (एजेंसी)। आर्मी, नेवी और एयर फोर्स की महिला शॉर्ट सर्विस कमीशन अफसर, जिन्हें परमानेंट कमीशन नहीं मिला अब उन्हें पूरी पेंशन मिलेगी। सुप्रीम कोर्ट ने यह फैसला मंगलवार को सुनाया। कोर्ट ने कहा कि महिला अफसरों को स्थायी कमीशन न देना उनकी योग्यता की कमी नहीं, बल्कि व्यवस्था में मौजूद भेदभाव का नतीजा था। जस्टिस सूर्यकांत, जस्टिस उज्जवल भुईयां और जस्टिस एन कोटिश्वर सिंह की बेंच ने कहा- अब यह माना जाएगा कि इन महिला अफसरों ने पेंशन के लिए जरूरी 20 साल की सर्विस पूरी कर ली है, भले ही उन्हें पहले ही सेवा से हटा दिया गया हो। दरअसल, कोर्ट का यह फैसला सुचेता एडन समेत अन्य महिला अफसरों की याचिकाओं पर आया, जिनमें केंद्र की परमानेंट कमीशन से जुड़ी 2019 की पॉलिसी के फैसलों को चुनौती दी गई थी।

लापरवाही से दिया जाता था ग्रेड

फैसला सुनाते हुए सीजेआई ने कहा कि महिला अधिकारियों की सालाना गोपनीय रिपोर्ट को अक्सर लापरवाही से ग्रेड दिया जाता था, इस सोच के साथ कि वे करियर में आगे बढ़ने या परमानेंट कमीशन के लिए योग्य नहीं होंगी। इससे उनकी कुल योग्यता पर बुरा असर पड़ा। वायु सेना के मामले में, बेंच ने पाया कि 2019 में लागू किए गए सेवा की अवधि के मानदंड और न्यूनतम प्रदर्शन के मानदंड जल्दबाजी में लागू किए गए थे, जिससे अधिकारियों को उन्हें पूरा करने का उचित मौका नहीं मिला।

1 नवंबर 2025 से लागू होगी पेंशन

सभी एसएससी अधिकारियों को जिनमें 2021 में सेवामुक्त की गई अधिकारी भी शामिल हैं- 20 साल की योग्य सेवा पूरी की हुई माना जाएगा। इसमें कहा गया कि पेंशन इस 20 साल की मानी गई सेवा के आधार पर तय की जाएगी, और यह 1 नवंबर, 2025 से लागू होगी। हालांकि, कोर्ट ने ऑपरेशनल प्रभावशीलता का हवाला देते हुए दोबारा नौकरी पर रखने का आदेश देने से इनकार कर दिया, लेकिन कहा कि यह वित्तीय लाभ देने से मना करने का आधार नहीं हो सकता। आर्मी और नेवी से जुड़े मामलों पर सुनवाई करते हुए, कोर्ट ने उनके मूल्यांकन मॉडलों में भी इसी तरह की कमियां पाईं और कहा कि मूल्यांकन के मापदंडों का खुलासा न करने से इन अधिकारियों पर बुरा असर पड़ा। कोर्ट ने उन अधिकारियों के लिए विंग कमांडर के पद तक काल्पनिक टाइम-स्केल प्रमोशन की मांग को खारिज कर दिया।

रेलवे टिकट 8 घंटे पहले कैंसिल करने पर ही रिफंड

4 घंटे का नियम खत्म

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय रेलवे ने टिकट कैंसिल करने के नियम बदल दिए हैं। अब अगर कोई यात्री ट्रेन के समय से 8 घंटे से कम समय पहले टिकट रद्द करता है, तो उसे कोई पैसा वापस नहीं मिलेगा। यानी अगर आपकी ट्रेन शाम 6 बजे है, तो आपको सुबह 10 बजे से पहले टिकट कैंसिल करनी होगी, तभी रिफंड मिलेगा। पहले यह समय 4 घंटे था और तब 50 फीसदी रिफंड मिलता था। अब समय बढ़ाकर 8 घंटे कर दिया गया है, लेकिन 24 से 8 घंटे के बीच कैंसिल करने पर अभी भी 50 फीसदी पैसा ही वापस मिलेगा। इसके अलावा, अब यात्री ट्रेन छूटने से 30 मिनट पहले तक अपना बोर्डिंग स्टेशन भी बदल सकते हैं। रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने मंगलवार को कहा कि यह बदलाव इसलिए किया गया है, ताकि जमाखोरी न कर सकें।

केवल हिंदू-बौद्ध-सिख ही अनुसूचित जाति का कर सकते हैं दावा

- सुप्रीम कोर्ट का फैसला- धर्म बदला तो अनुसूचित जाति का दर्जा भी खत्म हो जाता है

नई दिल्ली (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट ने मंगलवार को कहा कि केवल हिंदू, सिख और बौद्ध धर्म से जुड़े लोग ही अनुसूचित जाति का दर्जा प्राप्त कर सकते हैं। अगर कोई ईसाई या किसी और धर्म में धर्मांतरण करता है तो वह अनुसूचित जाति का दर्जा खो देगा। जस्टिस पीके मिश्रा और जस्टिस एनवी अंजारिया की बेंच ने फैसला सुनाते हुए कहा कि ईसाई धर्म अपनाने वाला दलित व्यक्ति अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति (अत्याचार निवारण) अधिनियम के तहत मिलने वाले किसी भी लाभ का दावा नहीं कर सकता है। यह फैसला आंध्र हाईकोर्ट के फैसले के खिलाफ याचिका पर सुनाया गया।

कोर्ट बोला-

- **1950 में यह बात साफ कर दी गई थी** - कोर्ट ने कहा कि संविधान (अनुसूचित जाति) आदेश, 1950 में यह बात साफ कर दी गई थी और इस आदेश के तहत लगाई गई रोक पूरी तरह से लागू होती है। कोर्ट ने साफ किया कि 1950 के आदेश के क्लॉज 3 में बताए गए धर्मों के अलावा किसी और धर्म को अपनाने पर जन्म की स्थिति चाहे जो भी हो, अनुसूचित जाति का दर्जा तुरंत खत्म हो जाता है। न्यायालय ने यह फैसला सुनाया, खंड 3 के तहत, कोई भी ऐसा व्यक्ति जिसे अनुसूचित जाति का सदस्य नहीं माना जाता है, वह गलत है।

हमें सावधान, सतर्क और तैयार रहना है

- पश्चिम एशिया में संकट को लेकर राज्यसभा में बोले पीएम मोदी
- दुनिया भर में गंभीर ऊर्जा संकट, भारत के लिए चिंताजनक हालात

नई दिल्ली (एजेंसी)। पश्चिम एशिया में चल रहे संघर्ष पर राज्यसभा में बोलते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मंगलवार को कहा कि हालात भारत के लिए भी चिंताजनक हैं और व्यापार के रास्ते प्रभावित हुए। उन्होंने कहा कि हमें सावधान, सतर्क और तैयार रहना है। भारत के सामने अप्रत्याशित चुनौतियां हैं। उन्होंने कहा कि पेट्रोल डीजल गैस और फर्टिलाइजर जैसे जरूरी सामानों की सप्लाई प्रभावित हुई। गल्फ में एक करोड़ भारतीय रहते हैं। उनके जीवन और आजीविका भारत के लिए चिंता का विषय है। होर्मुज स्ट्रेट में भारतीय क्रू मेंबर फंसे हैं, ये भी बारत के लिए चिंता का विषय है। प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि भारतीयों की सुरक्षा प्राथमिकता है और गल्फ के सभी देशों के साथ लगातार संपर्क में हैं।

पीएम बोले-हॉर्मुज में जहाजों पर हमला अस्वीकार्य

उन्होंने कहा कि कमर्शियल जहाजों पर हमला और हॉर्मुज स्ट्रेट जैसे अंतर्राष्ट्रीय जलमार्ग में रुकावट अस्वीकार्य है। भारत ने नागरिकों पर, सिविल इंफ्रास्ट्रक्चर पर, एनर्जी और ट्रांसपोर्ट से जुड़े इंफ्रास्ट्रक्चर पर हमलों का विरोध किया है। भारत डिप्लोमेसी के जरिए युद्ध के इस माहौल में भी भारतीय जहाजों के सुरक्षित आवागमन के लिए सतत प्रयास कर रहा है।

क्या है भारत सरकार का लक्ष्य, पीएम ने बताया

प्रधानमंत्री ने कहा कि युद्ध की शुरुआत के बाद से मैंने पश्चिम एशिया के ज्यादातर देशों के राष्ट्राध्यक्षों के साथ दो राउंड फोन पर बात की है। हम गल्फ के सभी देशों के साथ लगातार बातें कर रहे हैं। हम ईरान, इजराइल और अमेरिका के साथ भी संपर्क में हैं। हमारा लक्ष्य, डायलॉग और डिप्लोमेसी के माध्यम से क्षेत्र में शांति की बहाली का है।

मुख्यमंत्री दतिया जिले के भांडेर में राज्य स्तरीय किसान सम्मेलन में हुए शामिल

किसान ही देश के भाग्य विधाता हैं, उनकी समृद्धि ही है हमारा संकल्प : सीएम यादव

दतिया (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव मंगलवार को दतिया जिले के भांडेर दौरे पर पहुंचे, जहां उन्होंने 62 करोड़ रुपए से अधिक लागत के 10 विकास कार्यों का भूमिपूजन और लोकार्पण कर क्षेत्र को बड़ी सौगात दी। इस दौरान उन्होंने खेत में पहुंचकर किसानों से सीधा संवाद भी किया और आधुनिक कृषि तकनीकों को अपनाने का संदेश दिया।

निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार सीएम दोपहर 2.22 बजे हेलीकॉप्टर से बेरछ रोड स्थित हेलीपैड पर उतरे। वहां से मंडी प्रांगण जाते समय उन्होंने बिछरेटा गांव में एक किसान के खेत पर रुककर स्ट्रा रीपर मशीन को काम करते देखा। मुख्यमंत्री खुद ट्रैक्टर पर बैठे और किसानों से फसल प्रबंधन की जानकारी ली। इसके बाद वे सीधे मंडी प्रांगण पहुंचे, जहां उनका भव्य स्वागत किया गया।

कहा- सरकार समग्र विकास के लिए प्रतिबद्ध- कार्यक्रम स्थल पर मुख्यमंत्री ने विभिन्न विभागों की प्रदर्शनी का अवलोकन किया और हितग्राहियों को शासकीय योजनाओं के लाभ वितरित किए। जनसभा को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार किसानों, युवाओं और महिलाओं के समग्र विकास के लिए प्रतिबद्ध है।

उन्होंने किसानों से पराली न जलाने और सुपर सीडर जैसी वैज्ञानिक तकनीकों के उपयोग की अपील की, जिससे पर्यावरण संरक्षण के साथ भूमि की उर्वरता भी बनी रहे। सीएम ने कहा कि हमारी सरकार हर वर्ग के विकास के लिए काम कर रही है।

दो नए कार्यों का शिलान्यास भी किया- मुख्यमंत्री ने जिन प्रमुख कार्यों की सौगात दी, उनमें पीजी कॉलेज दतिया में विज्ञान भवन व कैंटीन, संदीपनी उत्कृष्ट विद्यालय भांडेर, ततारपुर स्टेडियम, पुलिस लाइन में नया कार्यालय भवन, पंडोखर धाम व रामगढ़ माता मंदिर के पास विश्राम गृह शामिल हैं। साथ ही माता रतनगढ़ योजना के तहत यात्री निवास का निर्माण भी किया जाएगा। इसके अलावा 7 करोड़ रुपए से अधिक लागत के दो नए कार्यों - रतनगढ़ माता मंदिर पर विद्युत उपकेंद्र और भांडेर में छात्रावास निर्माण का शिलान्यास किया गया।

इन परियोजनाओं से शिक्षा, पर्यटन और आधारभूत सुविधाओं को मजबूती मिलने की उम्मीद है। कार्यक्रम को लेकर प्रशासन ने व्यापक तैयारियां की थीं। कलेक्टर स्वप्निल वानखड़े और एसपी सूरज वर्मा सहित प्रशासनिक अधिकारी पूरे समय व्यवस्थाओं की निगरानी में जुटे रहे। बताया जा रहा है कि भांडेर के जिस सांदीपनी स्कूल भवन का लोकार्पण मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने किया, उसका निर्माण अब तक अधूरा है।

भोपाल का तापमान
अधिकतम 20 °c
न्यूनतम 18°c

सुबह सवेरे

इंदौर ■ बुधवार, 25 मार्च 2026

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

संक्षिप्त समाचार

कोलंबिया में वायुसेना का विमान क्रैश, 66 की मौत

- 114 कोलंबियाई सैनिक और 11 क्रू मेंबर सवार थे

बोगोटा (एजेंसी)। कोलंबिया में सोमवार को एयरफोर्स का हरक्यूलिस सी-130 विमान टेक-ऑफ के दौरान क्रैश हो गया। हादसे में अब तक 66 लोगों की मौत हो गई और 50 से ज्यादा घायल हो गए। जबकि 4 सैनिक अभी भी लापता है। एक सैन्य सूत्र ने बताया कि 58 सैनिक, छह वायुसेना कर्मी और दो पुलिस अधिकारी मारे गए हैं। यह हादसा पेरू सीमा के पास दक्षिणी अमेजन क्षेत्र के प्यूर्टो लेगुइजामो में

हुआ। रक्षा मंत्री पेड्रो सांचेज ने बताया कि विमान रनवे से करीब 1.5 किलोमीटर दूर जाकर गिरा। विमान में 114 सैनिक और 11 क्रू मेंबर सवार थे। कोलंबिया की सेना ने बताया कि इस हादसे में करीब 80 सैनिकों के मारे जाने की आशंका है। कोलंबिया के राष्ट्रपति गुस्तावो पेट्रो ने सैन्य विमान हादसे पर दुख जताया है। उन्होंने कहा कि यह एक गंभीर हादसा है। ऐसी घटना नहीं होनी चाहिए थी और जवानों की सुरक्षा सबसे जरूरी है। सरकार सेना को मजबूत बनाने और बेहतर सुविधाएं देने पर काम कर रही है, ताकि आगे ऐसे हादसे न हों। पेट्रो ने कहा कि सेना के हथियार और संसाधनों को आधुनिक बनाने का फैसला पहले ही लिया जा चुका है, लेकिन प्रशासनिक देरी के कारण इसे लागू नहीं किया जा सका।

हिजबुल्ला का 5 इजराइली ठिकानों पर मिसाइल अटैक

- ईरान में गैस प्लांट और पाइप लाइन पर इजराइल का हमला

तेल अवीव/तेहरान (एजेंसी)। अमेरिका-इजराइल और ईरान जंग का मंगलवार को 25वां दिन था। ईरान में मंगलावर को कई जगह एनर्जी इन्फ्रास्ट्रक्टचर पर हमला हुआ। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, ईरान के इस्फहान शहर में गैस प्लांट और गैस कंट्रोल स्टेशन को निशाना बनाया गया। इसके अलावा खोर्रमशहर के पावर प्लांट और उसकी गैस पाइपलाइन पर भी हमला हुआ। वहीं

लेबनान में ईरान समर्थक उग्रवादी संगठन हिजबुल्लाह ने आज इजराइल के 5 ठिकानों पर मिसाइल और ड्रोन अटैक किया। हिजबुल्लाह ने बताया कि उसने इजराइली सैनिकों की एक छावनी, रडार और तोपखाने को निशाना बनाया। ट्रम्प ने कहा कि अमेरिका और ईरान के बीच हालिया बातचीत के बाद 15 मुद्दों पर सहमति बनी है। इन मुद्दों की पूरी लिस्ट सार्वजनिक नहीं की गई है। उन्होंने ईरान के पावर प्लांट पर हमले 5 दिन के लिए टाल दिए, जबकि इससे पहले होर्मुज खोलने के लिए 48 घंटे की चेतावनी दी थी। ईरान के विदेश मंत्रालय ने कहा कि तेहरान और वॉशिंगटन के बीच कोई बातचीत नहीं हो रही है। वहीं, पाकिस्तान और तुर्किये मध्यस्थता कर रहे हैं।

नीतिश कुमार फिर चुने गए जेडीयू के राष्ट्रीय अध्यक्ष

- राज्यसभा जाने के बाद भी पार्टी पर रहेगी पूरी नजर

पटना (एजेंसी)। मुख्यमंत्री नीतिश कुमार मंगलवार को चौथी बार जदयू के निर्विरोध राष्ट्रीय अध्यक्ष चुने गए। पार्टी के राष्ट्रीय चुनाव अधिकारी से जदयू के कार्यकारी राष्ट्रीय अध्यक्ष संजय झा ने नीतिश कुमार के निर्वाचन का प्रमाण पत्र हासिल किया। जदयू के राष्ट्रीय अध्यक्ष के रूप में अभी काम कर रहे नीतिश कुमार इसी महीने के 16 तारीख को

राज्यसभा के लिए निर्वाचित हुए हैं। वह मुख्यमंत्री का पद छोड़ दिल्ली जा रहे हैं। उसी समय नीतिश कुमार ने जदयू के विधायकों की बैठक में यह स्पष्ट किया था कि वह राज्यसभा जरूर जा रहे पर पार्टी और सरकार दोनों को वह देखते रहेंगे। नीतिश कुमार की तरफ से जदयू के कार्यकारी राष्ट्रीय अध्यक्ष ने दिल्ली स्थित पार्टी के राष्ट्रीय कार्यालय में 19 मार्च को नामांकन किया था। नामांकन की आखिरी तारीख 22 मार्च थी। नीतिश कुमार के अलावा जदयू के राष्ट्रीय अध्यक्ष पद के लिए कोई और नामांकन नहीं हुआ। यह 22 मार्च को ही तय हो गया था कि नीतिश ही अध्यक्ष होंगे।

अगले चुनाव में 273 होगी महिला सांसदों की संख्या

- महिला आरक्षण के बाद लोकसभा सीटें बढ़कर हो जाएंगी 816
- 2029 चुनाव से पहले लागू होगा 33 फीसदी महिला आरक्षण

नई दिल्ली (एजेंसी)। केंद्र सरकार 2029 के लोकसभा चुनाव से पहले महिलाओं के लिए 33 फीसदी आरक्षण लागू करने की तैयारी में है। इसके लिए संसद के मौजूदा सत्र में दो बिल लाए जा सकते हैं। इसके जरिए महिला आरक्षण लागू करने की मौजूदा शर्त में बदलाव किया जाएगा। इससे लोकसभा में सदस्यों की संख्या 543 से बढ़कर 816 हो सकती है। इनमें महिला सांसदों के लिए आरक्षित सीटों की संख्या 273 हो जाएगी। गृहमंत्री अमित शाह ने इस पर सहमति बनाने के लिए सोमवार को एनडीए और गैर-कांग्रेसी विपक्षी दलों के नेताओं के साथ बैठक की। सहमति बनने पर बिल इसी हफ्ते पेश किए जा सकते हैं। दरअसल, 2023 में महिला आरक्षण कानून संविधान के 106वें संशोधन के रूप में पास हुआ था। इसके तहत महिला आरक्षण नई जनगणना के बाद लागू होना है। अब सरकार का प्रस्ताव है कि नई जनगणना से पहले ही परिसीमन किया जाए।

- **इस सत्र में 2 बिल लाए जाएंगे, एससी और एसटी कोटा होगा-** एक बिल के जरिए नारी शक्ति वंदन अधिनियम में संशोधन होगा, जबकि दूसरा परिसीमन कानून में बदलाव से जुड़ा होगा। इसे पास कराने के लिए संसद में दो-तिहाई बहुमत जरूरी होगा। इसी वजह से सरकार विपक्ष का समर्थन जुटाने में लगी है। प्रस्ताव के मुताबिक 273 सीटें महिलाओं के लिए आरक्षित होंगी। आरक्षण का ढांचा ऐसा होगा, जिसमें एससी और एसटी वर्ग की महिलाओं को उनके कोटे के भीतर हिस्सा मिलेगा।
- **महिला आरक्षण को लेकर कांग्रेस से चर्चा बाकी-** गृहमंत्री अमित शाह ने पिछले दिनों इसके लिए कई नेताओं से बैठकें की हैं। इनमें वाईएसआर कांग्रेस, समाजवादी पार्टी, एनसीपी (एसपी), आरजेडी और एआईएमआईएम के नेता शामिल रहे। बीजेडी और शिवसेना (यूबीटी) से भी बातचीत हुई है, जबकि कांग्रेस से चर्चा बाकी है। सहमति बनने पर बिल इसी हफ्ते संसद में पेश किए जा सकते हैं। महिला आरक्षण कानून 2023 में संविधान के 106वें संशोधन के रूप में पास हुआ था।

सप्तम मां कालरात्रि

मां के सप्तम रूप का नाम है माँ कालरात्रि। यह मां का अति भयावह व उग्र रूप है। सम्पूर्ण सृष्टि में इस रूप से अधिक भयावह और कोई दूसरा नहीं। किन्तु तब भी यह रूप मातृत्व को समर्पित है। देवी मां का यह रूप ज्ञान और वैराग्य प्रदान करता है।

'ग्लोबल आइकॉनिक आर्टिस्ट अवॉर्ड' से उस्ताद कमाल साबरी सम्मानित

लंदन में सरोद नहीं, सारंगी के उस्ताद, विरासत की अनोखी मिसाल

लंदन। भारतीय शास्त्रीय संगीत की मधुर परंपरा एक बार फिर लंदन के वैश्विक मंच पर गूँज उठी, जब प्रख्यात सारंगी वादक उस्ताद कमाल साबरी को 'ग्लोबल आइकॉनिक आर्टिस्ट अवार्ड' से सम्मानित किया गया। यह सम्मान उन्हें वर्ल्ड हार्ट बीट अवॉर्ड 2026 के भव्य समारोह में प्रदान किया गया, जो वर्ल्ड हार्ट बीट म्यूजिक एकेडमी द्वारा एम्बेसी गार्डन में आयोजित किया गया था।

यह विशेष आयोजन संगीत के जरिए शांति थीम पर आधारित था, जिसका उद्देश्य संगीत के माध्यम से वैश्विक शांति, सांस्कृतिक संवाद और एकता को बढ़ावा देना था। समारोह में दुनिया भर के प्रतिष्ठित कलाकारों, संगीतज्ञों और सांस्कृतिक संस्थाओं को उनके योगदान के लिए सम्मानित किया गया। उस्ताद कमाल साबरी, महान सारंगी उस्ताद साबरी खान के पुत्र हैं और लगभग 400 वर्ष पुरानी मुरादाबाद घराने की सातवीं पीढ़ी का प्रतिनिधित्व करते हैं। यह घराना भारतीय शास्त्रीय संगीत में सारंगी की समृद्ध परंपरा के लिए विश्वभर में जाना जाता है।

कमाल साबरी ने अपने वादन में पारंपरिक गहराई के साथ आधुनिक प्रयोगों का सुंदर समावेश किया है। उनकी प्रस्तुति में न केवल रागों की शास्त्रीय शुद्धता झलकती है, बल्कि उसमें वैश्विक संगीत की विविधता भी दिखाई देती है, जो उन्हें आज के समय के सबसे विशिष्ट सारंगी वादकों में स्थान दिलाती है। उस्ताद कमाल साबरी ने यूरोप, अमेरिका, मध्य-पूर्व और एशिया के कई प्रतिष्ठित संगीत समारोहों में प्रस्तुति देकर भारतीय शास्त्रीय संगीत को अंतरराष्ट्रीय पहचान दिलाई है।

उन्होंने कई अंतरराष्ट्रीय कलाकारों के साथ सहयोग कर फ्यूज़न संगीत को नई दिशा दी है, जिससे युवा पीढ़ी भी सारंगी जैसे पारंपरिक वाद्य की ओर आकर्षित हो रही है। उनकी कला की विशेषता यह है कि वे सारंगी की भावपूर्ण ध्वनि के माध्यम से श्रोताओं के साथ गहरा भावनात्मक संबंध स्थापित करते हैं। यही कारण है कि उनके कार्यक्रमों में शास्त्रीय संगीत के पारखी ही नहीं, बल्कि नए श्रोता भी बड़ी संख्या में शामिल होते हैं।

सम्मान और उपलब्धियां- 'ग्लोबल आइकॉनिक आर्टिस्ट अवॉर्ड' उनके लंबे और समर्पित संगीत सफर का एक महत्वपूर्ण पड़ाव है। इससे पहले भी उन्हें 'हॉनर डॉक्टरेट इन म्यूजिक' और 'प्रोफेसर ऑफ़ प्रैक्टिस अवॉर्ड' जैसे कई अंतरराष्ट्रीय सम्मानों से नवाज़ा जा चुका है। यह सम्मान न केवल उस्ताद कमाल साबरी की व्यक्तिगत उपलब्धि है, बल्कि भारतीय शास्त्रीय संगीत और विशेष रूप से सारंगी की परंपरा के लिए भी गौरव का क्षण है। इस अवसर पर यह भी रेखांकित किया गया कि संगीत सीमाओं से परे एक ऐसी भाषा है, जो संस्कृतियों को जोड़ती है। उस्ताद कमाल सबरी का योगदान इसी विचार को साकार करता है, जहाँ एक पारंपरिक भारतीय वाद्य, आधुनिक वैश्विक मंच पर नई पहचान बना रहा है। उस्ताद कमाल साबरी का यह सम्मान उनके उस सतत प्रयास की सराहना है, जिसके माध्यम से वे सदियों पुरानी सारंगी परंपरा को न केवल संरक्षित कर रहे हैं, बल्कि उसे नई पीढ़ी और अंतरराष्ट्रीय दर्शकों तक भी पहुँचा रहे हैं।

हरीश राणा का निधन, दिल्ली के एम्स में पाई इच्छामृत्यु

गाजियाबाद (एजेंसी)। पिछले 13 साल से कोमा में पड़े गाजियाबाद के हरीश राणा का एम्स में निधन हो गया है। सुप्रीम कोर्ट से इच्छामृत्यु की इजाजत मिलने के बाद हरीश राणा को बीते रविवार को दिल्ली के एम्स में शिफ्ट किया गया था, जहां डॉक्टरों की निगरानी में उनकी इच्छामृत्यु की प्रक्रिया पूरी की गई। करीब 13 साल पहले हरीश चंडीगढ़ में अपने पीजी के चौथे फ्लोर से गिर गए थे, जिसके बाद से ही वह कोमा में थे। उनके ठीक होने की उम्मीदें टूटने के बाद परिवार ने हरीश के लिए सुप्रीम कोर्ट से इच्छामृत्यु मांगी थी और आखिरकार उन्हें 13 साल के दर्द से मुक्ति मिल गई।

हरीश इच्छामृत्यु पाने वाले पहले व्यक्ति

भारत में इच्छामृत्यु पाने वाले हरीश राणा पहले व्यक्ति थे। हरीश उस समय पंजाब यूनिवर्सिटी से इंजीनियरिंग की पढ़ाई कर रहे थे, जब यह दर्दनाक हादसा हुआ। वह चंडीगढ़ स्थित अपने पीजी में फोन पर अपनी बहन से बातें कर रहे थे कि अचानक चौथे फ्लोर से नीच गिर गए। हादसे में उनकी कमर और सिर में गहरी चोटें आईं और वह कोमा में चले गए। परिवार ने उनके इलाज के लिए सब कुछ किया, लेकिन हरीश फिर से खड़े ना हो सके।

महिला सम्मान का असली अर्थ तब होगा जब महिलाओं के खिलाफ अपशब्द हो बंद : एआईजी सुश्री सिंह

भोपाल। मध्यप्रदेश राज्य महिला आयोग का 28वां स्थापना दिवस समारोह मंगलवार को गरिमामय वातावरण में आयोजित किया गया। राज्य शासन द्वारा 23 मार्च 1998 को मध्यप्रदेश राज्य महिला आयोग की स्थापना की गई थी। इस अवसर पर महिला सशक्तिकरण, लैंगिक समानता और महिलाओं की सुरक्षा से जुड़े मुद्दों पर व्यापक चर्चा की गई।

एआईजी महिला सुरक्षा शाखा सुश्री बीना सिंह, ने कहा कि आज समाज में महिलाओं के प्रति दृष्टिकोण तेजी से बदल रहा है। अब लगभग सभी विभागों में महिलाओं की संख्या बढ़ रही है और वे हर क्षेत्र में अपनी भागीदारी दर्ज करा रही हैं। उन्होंने कहा कि जिस दिन महिलाओं के खिलाफ बोले जाने वाले अपशब्द बंद हो जाएंगे, उसी दिन वास्तविक अर्थों में महिला सम्मान स्थापित होगा। आयोग के सचिव सुरेश तोमर ने कहा कि लैंगिक भेदभाव, पितृसत्तात्मक सामाजिक व्यवस्था और घरेलू हिंसा जैसे विषयों पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि मध्यप्रदेश राज्य महिला आयोग, राष्ट्रीय महिला आयोग तथा अन्य संस्थाओं के साथ मिलकर महिलाओं के अधिकारों की रक्षा और सशक्तिकरण के लिए लगातार कार्य कर रहा है। कार्यक्रम में संयुक्त संचालक महिला एवं बाल विकास श्रीमती नकी जहां कुरैशी, POSH की विशेषज्ञ श्रीमती भावना त्रिपाठी और शिखा छिब्बर, विभिन्न सामाजिक संस्थाओं के प्रतिनिधि, जवाहर बाल भवन के बच्चे तथा आयोग कार्यालय के अधिकारी-कर्मचारी उपस्थित रहे। समारोह में विशेष रूप से उन पुरुषों को भी सम्मानित किया गया, जो समाज में जेंडर समानता के लिए सक्रिय रूप से कार्य कर रहे हैं।

संकट के बीच भारत पहुंचे ट्रंप के खास 'दूत'

- अमेरिकी युद्ध नीति में एलब्रिज कोल्बी का बड़ा रोल

नई दिल्ली (एजेंसी)। पश्चिम एशिया संकट के बीच अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप सरकार ने एक बड़े रक्षा अधिकारी एलब्रिज कोल्बी को भारत भेजा है। एलब्रिज कोल्बी अमेरिका के युद्ध विभाग में अंडर सेक्रेटरी हैं। अपनी भारत यात्रा के दौरान उनकी बड़े भारतीय अधिकारियों के साथ बातचीत होनी है। वैसे कोल्बी की भारत यात्रा पहले से निर्धारित थी, लेकिन ईरान और अमेरिका-इजरायल के बीच जारी युद्ध की वजह से इसकी अहमियत बहुत बढ़ गई है। भारत में अमेरिकी राजदूत सर्जियो गोर ने अमेरिका

के बड़े रक्षा अधिकारी की भारत यात्रा की पहले ही घोषणा की थी। उन्होंने अपने एक्स पोस्ट में इसकी जानकारी देते हुए कहा, अंडर सेक्रेटरी ऑफ वॉर एलब्रिज कोल्बी का भारत में स्वागत करने का इंतजार कर रहा हूं! एलब्रिज कोल्बी को अमेरिकी रक्षा नीति तैयार करने वाले एक प्रमुख चेहरे के तौर पर जाना जाता है।

भारत और अमेरिकी के द्विपक्षीय संबंधों में बदलाव

डोनाल्ड ट्रंप के दूसरे कार्यकाल में भारत और अमेरिका के कूटनीतिक संबंध पिछले साल काफी तनावपूर्ण हो गए थे। लेकिन, इस साल के शुरू में जब दोनों देशों ने ट्रेड डील की घोषणा की और अमेरिका ने टैरिफ को भी कम किया, उसके बाद इन संबंधों में फिर से गर्मजोशी दिखने लगी। लेकिन, उसके तुरंत बाद पश्चिम एशिया में युद्ध छिड़ गया। इस युद्ध की वजह से दोनों देशों के बीच तेजी से पटरी पर लौट रहे रिश्तों को दोबारा से मजबूत करने में समय लग रहा है और अमेरिकी अधिकारियों की लगातार भारत यात्रा से इस काम में तेजी आने की संभावना है।

पश्चिम एशिया संकट की वजह से भारत बहुत प्रभावित

अमेरिका के शीर्ष रक्षा अधिकारी की यात्रा से पहले उसके इंडो-पैसिफिक कमांडर एडमिरल सैमुअल पैपारो और स्पेस कमांड के चीफ जनरल स्टीफन वाइटिंग भी भारत आकर लौट चुके हैं। इस समय पश्चिम एशिया में जारी युद्ध की वजह से ईरान की ओर से होर्मुज स्ट्रेट बंद किए जाने की वजह से सबसे ज्यादा मुश्किलें झेल रहे एशियाई देशों में भारत भी शामिल है, जिसका कच्चा तेल, गैस और फर्टिलाइजर सप्लाई चेन बुरी तरह से प्रभावित हुआ है।

वनवासी कहकर बदली जा रही आदिवासियों की पहचान

- गुजरात पहुंचे राहुल गांधी ने आरएसएस पर बोला हमला

नई दिल्ली (एजेंसी)। कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने आदिवासियों के लिए वनवासी शब्द इस्तेमाल पर भाजपा और आरएसएस की आलोचना की है। उन्होंने कहा कि यह शब्द जानबूझकर बनाया गया है ताकि आदिवासियों की जो जंगल, जमीन और पानी पर जो पुराना हक है उसे खत्म किया जा सके। वडोदरा में एक कार्यक्रम के दौरान गांधी ने फिर से जाति जनगणना की मांग की और कहा कि आदिवासियों को देश की सत्ता और धन में अपना सही हिस्सा पाने के लिए यह बहुत जरूरी है। राहुल गांधी ने यह भी कहा कि आदिवासियों को वनवासी कहना संविधान और आदिवासी नेता बिरसा मुंडा का अपमान है। वडोदरा में आयोजित आदिवासी अधिकार संविधान सम्मेलन में राहुल गांधी ने कहा कि आदिवासी से तात्पर्य भारत के मूल निवासियों से है। यदि आप इस भूमि पर 1,000, 2,000 या यहां तक कि 5,000 वर्ष पहले भी आते तो आप पाते कि जमीन का एक-एक इंच

आदिवासियों के हाथों में थी।

आदिवासी शब्द का अर्थ है कि यह देश आपका- राहुल गांधी ने आगे कहा कि अब 21वीं सदी में एक नया शब्द सामने आया है। यह शब्द है वनवासी, यह आरएसएस और भाजपा द्वारा गढ़ा गया है। वनवासी शब्द का तात्पर्य है कि आप इस जमीन के मूल स्वामी नहीं थे। वहीं आदिवासी शब्द का अर्थ है कि यह देश आपका था। भारत की जमीन, जल और जंगल सही मायने में आपकी थी। राहुल गांधी ने कहा कि आदिवासियों को वनवासी कहना संविधान और पूज्य आदिवासी नेता बिरसा मुंडा पर हमला है। वनवासी शब्द का प्रयोग यह दिखाता है कि आप मूल स्वामी नहीं थे।

- **बिरसा मुंडा, आंबेडकर, फुले के विचारों को बचा नहीं पा रहे-** राहुल गांधी ने आगे कहा कि जैसा कि किसी ने सही कहा है कि हम संविधान के लिए लड़ रहे हैं जिसमें हजारों साल पुरानी सोच जुड़ी है। मोदी समेत बीजेपी के लोग बिरसा मुंडा, आंबेडकर, फुले और गांधी की मूर्तियों के आगे सिर झुकाते हैं लेकिन वे उन विचारों को नहीं बचा पा रहे हैं जिनके लिए बिरसा मुंडा खड़े थे। वे उस मकसद को भी पूरा नहीं कर पा रहे हैं जिसके लिए उन्होंने अपनी जान दी थी। राहुल गांधी ने कहा कि संविधान में बिरसा मुंडा की सोच बसी है। जब भाजपा आदिवासियों को वनवासी कहती है और उनकी जमीन और जंगल बड़े व्यापारियों को दे देती है तो वह सिर्फ संविधान का अपमान नहीं करती बल्कि बिरसा मुंडा का भी अपमान करती है। अक्सर विकास के नाम पर आदिवासियों से उनकी जमीन बिना किसी मुआवजे के छीन ली जाती है क्योंकि भाजपा मानती है कि जमीन पर कोई हक नहीं है।

अमेरिका से ट्रेड डील पर सरकार को घेरा

अमेरिका के साथ ट्रेड डील पर राहुल गांधी ने कहा कि भारत के इतिहास में किसी भी प्रधानमंत्री ने कृषि क्षेत्र को इतना नहीं खोला। इसके पीछे एक कारण है। हमारे खेत छोटे हैं। अमेरिका में खेत 1,000, 5,000 या 10,000 एकड़ तक फैले हुए हैं। भारत में लोग हाथों से काम करते हैं और मशीनीकरण सीमित है जबकि अमेरिका में सब कुछ मशीनीकृत है। यदि उनके उत्पाद भारत के बाजारों में भर दिए गए तो देश के किसान पूरी तरह बर्बाद हो जाएंगे। राहुल गांधी ने कहा कि भारत ने दालों, सोयाबीन, फलों और कपास समेत अन्य के लिए बाजार खोल दिए हैं। भारत अगले 5 वर्षों में अमेरिका से 9 लाख करोड़ रुपये का सामान खरीदने के लिए तैयार है। यदि हम अमेरिकी कंपनियों से 9 लाख करोड़ रुपये का सामान खरीदते हैं तो हमारी कंपनियों का क्या होगा। हमारे छोटे उद्योगों का क्या होगा। भारत की सरकार ने अमेरिकी उत्पादों पर टैक्स शून्य कर दिया है।

शहर के 47 बड़े जल स्रोतों में अधिकांश के जल स्तर की गुणवत्ता गंभीर स्थिति में

इंदौर। जल स्रोतों की सेहत को लेकर एक चिंताजनक तस्वीर सामने आई। आईआईटी इंदौर के हाल के अध्ययन में शहर के 47 प्रमुख जल स्रोतों का विश्लेषण किया गया। इसमें अधिकांश जलाशयों में पानी की गुणवत्ता लगातार गिरती पाई गई। सबसे गंभीर स्थिति सिरपुर तालाब की सामने आई, जो अपनी जैव विविधता और अंतरराष्ट्रीय पहचान के बावजूद प्रदूषण के दबाव में है। रिपोर्ट के अनुसार, सिरपुर झील का क्षेत्रफल 2017 के मुकाबले लगातार घट रहा है। सैटेलाइट विश्लेषण में यह भी सामने आया है कि अतिक्रमण के कारण जल क्षेत्र सिकुड़ रहा है। पानी में क्लोरोफिल-ए का स्तर 16.149 एमजी/एम दर्ज किया गया, जो एल्गी (काई) की अधिकता का संकेत है। इसके साथ ही टर्बिडिटी का औसत स्तर 5.091 एनटीयू पाया गया, जो निर्धारित मानक 4.87 एनटीयू से अधिक है। झील में बड़ी मात्रा में जलकुंभी की मौजूदगी भी इस बात की ओर इशारा करती है कि इसमें नालों और सीवेज का पानी मिल रहा है। विशेषज्ञों के मुताबिक, यह स्थिति लंबे समय में झील के पारिस्थितिक तंत्र को गंभीर नुकसान पहुंचा सकती है।

आईआईटी का अध्ययन, अंतरराष्ट्रीय पहचान के बावजूद ये स्रोत प्रदूषित

रामसर साइट का दर्जा खतरे में

सिरपुर झील को वर्ष 2022 में रामसर साइट का दर्जा मिला था, जो अंतरराष्ट्रीय स्तर पर महत्वपूर्ण आर्द्रभूमि (वेटलैंड) के रूप में मान्यता है। यदि प्रदूषण और अतिक्रमण की स्थिति में सुधार नहीं हुआ, तो इस दर्जे पर भी खतरा मंडरा सकता है। नगर निगम अधिकारियों के अनुसार, झील के संरक्षण के लिए एक इंटीग्रेटेड मैनेजमेंट प्लान तैयार किया गया था, जिसके लिए 43 करोड़ रुपये का बजट प्रस्तावित है। हालांकि, अब तक यह राशि प्राप्त नहीं हुई है, जिससे सुधार कार्य अटके हुए हैं।

अन्य जल स्रोत भी असुरक्षित

अध्ययन में यशवंत सागर और बिलावली जैसे जलाशयों को भी शामिल किया गया। हाल ही में सेंट्रल पोलुशन कंट्रोल बोर्ड की रिपोर्ट में यशवंत सागर में खतरनाक स्तर पर ई-कोलाई बैक्टीरिया की पुष्टि हुई थी। इसके अलावा पानी में घुलित ऑक्सीजन का स्तर भी कम पाया गया, जो जलीय जीवों के लिए खतरे का संकेत है।

कैसे हुई स्टडी- यह अध्ययन आईआईटी इंदौर के मनीष कुमार गोयल और सृजा रॉय के नेतृत्व में किया गया। इसमें सैटेलाइट आधारित 'अर्बन वाटर एनालाइजर टूल' का उपयोग कर जल स्रोतों के क्षेत्रफल और पानी की गुणवत्ता की निगरानी की गई। फिलहाल डेटा वेलिडेशन की प्रक्रिया में है, लेकिन शुरुआती निष्कर्षों ने चिंता बढ़ा दी है।

सिरपुर झील क्यों खास - करीब 130 वर्ष पुरानी होलकर कालीन यह झील लगभग 800 एकड़ क्षेत्र में फैली है और समृद्ध जैव विविधता का केंद्र है। यहाँ 200 से अधिक पक्षी प्रजातियां पाई जाती हैं, जिनमें 55 प्रवासी प्रजातियां शामिल हैं। इनमें युरेशिया विगोन, रेड क्रेस्टेड पोचार्ड, ग्रेटर फ्लेमिंगो और पेंटेड स्टोर्क जैसे पक्षी प्रमुख हैं। झील का बैकवाटर और सुखनिवास चैनल क्षेत्र पक्षियों के प्रजनन और निवास के लिए बेहद अनुकूल माना जाता है। विशेषज्ञों का मानना है कि यदि समय रहते सीवेज रोकने, अतिक्रमण हटाने और जल गुणवत्ता सुधारने के ठोस कदम नहीं उठाए गए, तो सिरपुर झील की पारिस्थितिकी पर गंभीर असर पड़ेगा। यह न केवल जैव विविधता के लिए नुकसानदेह होगा, बल्कि इंदौर की पर्यावरणीय पहचान पर भी प्रश्नचिह्न खड़ा कर सकता है।

गैरेज में आग लगने से दो कारें जलकर खाक, कारण अज्ञात

स्प्रे और केमिकल्स के कारण तेजी से फैली आग

इंदौर। शहर में आग लगने की घटनाएं थमने का नाम नहीं ले रही है। 24 घंटे में आग लगने की यह दूसरी घटना है। सोमवार सुबह चोइथराम अस्पताल के पास स्थित लेक पार्क कॉलोनी में गैरेज में अचानक आग लग गई, जिससे इलाके में अफरा-तफरी मच गई। आग की सूचना मिलते ही फायर ब्रिगेड और राजेंद्र नगर थाना पुलिस मौके पर पहुंची और राहत कार्य शुरू किया। गैरेज में खड़ी दो कारें आग की चपेट में आकर पूरी तरह जल गईं। हालांकि दमकल टीम ने समय रहते आग पर काबू पा लिया, जिससे आसपास के इलाकों में बड़ा नुकसान होने से बच गया। बताया जा रहा है कि यह गैरेज एक ऑटो डीलिंग कंपनी का था, जहां कारों की रिपेयरिंग और बिक्री का काम होता है। आग जिस शेड में लगी, वह चोइथराम अस्पताल की दीवार से सटा हुआ था। आग लगते ही अस्पताल की ओर से भी पानी डालकर इसे नियंत्रित करने की कोशिश की गई।

स्प्रे और केमिकल से आग - फायर ब्रिगेड के अनुसार, गैरेज में मौजूद कलर स्प्रे और अन्य ज्वलनशील केमिकल्स के कारण आग ने तेजी से विकराल रूप ले लिया। हालांकि दमकलकर्मियों की तत्परता से आग को पास के शेड तक फैलने से रोक लिया गया। गौरतलब है कि रविवार को भी सांवेर रोड स्थित नरवल इलाके में स्क्रैप गोदाम में आग लग गई थी। प्लास्टिक स्क्रैप के कारण आग के साथ धुआं फैल गया, जिससे आसपास के लोगों को परेशानी का सामना करना पड़ा। फिलहाल दोनों ही घटनाओं में आग लगने के कारणों की जांच की जा रही है।

शादीशुदा महिला से दुष्कर्म

इंदौर। लसूड़िया थाना क्षेत्र में शादीशुदा महिला से दुष्कर्म करने का मामला सामने आया है। महिला ने बताया कि उसकी पहचान कुछ दिन पहले फेसबुक पर विनय कुमार नामक युवक से हुई थी। महिला का पति से विवाद चल रहा था, इसी का फायदा उठाकर आरोपी ने उसे भरोसा दिलाया कि वह उससे शादी करेगा और उसे उसके मायके छोड़ देगा। 17 जनवरी को महिला अपने दो बच्चों के साथ आरोपी के साथ चली गई, लेकिन वह उसे मायके ले जाने की बजाय अलग-अलग होटलों में रखता रहा। इस दौरान आरोपी ने जान से मारने की धमकी देकर कई बार महिला के साथ दुष्कर्म किया और उसके साथ मारपीट भी की। पुलिस ने महिला और उसके बच्चों को महाराष्ट्र से सुरक्षित बरामद कर आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है।

राजस्व वसूली अभियान तेज, पंप सील

इंदौर। जिले में कलेक्टर शिवम वर्मा के निर्देशन में राजस्व बकाया वसूली के लिए सघन अभियान चलाया जा रहा है। अभियान के तहत बकाया राशि जमा नहीं करने वाले व्यक्तियों एवं संस्थानों के विरुद्ध सख्त कार्रवाई की जा रही है। इस क्रम में एक बड़ी कार्रवाई करते हुए तहसील कनाडिया के ग्राम छिटकाना में स्थित एक रिलायंस पेट्रोल पंप को सील किया गया। संबंधित पेट्रोल पंप पर डायवर्शन टैक्स के रूप में 2 लाख 35 हजार रुपए की बकाया राशि लंबित थी। बार-बार नोटिस दिए जाने के बावजूद राशि जमा नहीं करने पर प्रशासन द्वारा यह कार्रवाई की गई। राजस्व बकाया की वसूली के लिए जिला प्रशासन का यह अभियान लगातार जारी रहेगा और बकायेदारों के विरुद्ध इसी तरह की सख्त कार्रवाई आगे भी की जाएगी।

फर्जी वीडियो वाले यूट्यूब चैनलों पर केस

इंदौर। पिछले दिनों पंजाबी सिंगर करण औजला के कॉन्सर्ट में मारपीट का, जो वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा था, वह पूरी तरह झूठा निकला। पुलिस जांच में पता चला कि यह वीडियो इंदौर का नहीं, बल्कि मुंबई में आयोजित एक कार्यक्रम का है। क्राइम ब्रांच के एडिशनल डीसीपी राजेश दंडोतिया के अनुसार, सोशल मीडिया मॉनिटरिंग के दौरान यह सामने आया कि कुछ अकाउंट्स और यूट्यूब चैनलों ने बिना पुष्टि किए इस वीडियो को इंदौर का बताकर फैला दिया। इससे शहर में भ्रम फैल गया और लोगों के बीच गलत संदेश गया। जांच में यह भी खुलासा हुआ कि मुंबई की घटना के वीडियो को एडिट करके उसे इंदौर से जोड़कर पेश किया गया था। पुलिस ने चेतावनी दी है कि इस तरह की अफवाहें कानून-व्यवस्था पर असर डाल सकती हैं। क्राइम ब्रांच ने ऐसे 5 सोशल मीडिया अकाउंट्स को चिन्हित किया है, जिन पर एफआईआर दर्ज की गई है। इनमें ओ बेन न्यूज, इंदौर एक्सप्रेस न्यूज, मेट्रो सिटी इंदौर 'रुह ए इंदौर' और 'इंदौर वायरल' शामिल हैं। पुलिस उन लोगों की पहचान कर रही है जिन्होंने इस वीडियो को फैलाने में भूमिका निभाई।

किराएदार के कमरे में आग लगाई

इंदौर। हीरानगर थाना क्षेत्र में मकान मालिक और किराएदार के बीच विवाद का गंभीर मामला सामने आया है, जिसने खतरनाक रूप ले लिया। जानकारी के अनुसार, मकान मालिक ने कथित तौर पर रविवार रात अपने किराएदार के कमरे में आग लगा दी। आग इतनी तेजी से फैली कि वह पास के दूसरे मकान तक पहुंच गई, जिससे बड़ा हादसा हो सकता था। घटना के समय घर में मौजूद अरविंद पाल, चांदनी पाल और उनके छोटे बच्चों को आसपास रहने वाले दो लोगों ने समय रहते बाहर निकाल लिया, जिससे सभी की जान बच सकी। आग लगने की घटना के बाद लोगों ने मशक्कत कर काबू पाया। किराएदार वेदनाथ साहू ने आरोप लगाया है कि उनका मकान मालिक ताराबाई पटेल से काफी समय से विवाद चल रहा था। यह भी बताया जा रहा है कि मकान मालिक ने फुटपाथ पर कमरे बनाकर किराए पर दिए थे और इसके बदले लगभग एक लाख रुपए वसूले थे। फिलहाल पुलिस पूरे मामले की जांच कर रही है और आग लगने के कारणों के साथ-साथ लगाए गए आरोपों की सच्चाई की पुष्टि करने में जुटी हुई है।

गर्लफ्रेंड से विवाद, दूसरी मंजिल से कूदा

इंदौर। प्रेम प्रसंग में विवाद के बाद नशे में धुत एक युवक ने दूसरी मंजिल से छलांग लगा दी। गंभीर रूप से घायल युवक को अस्पताल में भर्ती कराया गया है, जहां उसकी स्थिति नाजुक बनी है। जूनी इंदौर थाना पुलिस के मुताबिक घटना गली नंबर 4 की है। युवक एक किराएदार युवती से मिलने पहुंचा था, जो दूसरे शहर की रहने वाली है और यहां एक निजी अस्पताल में काम करती है। घटना के समय दोनों कमरे में मौजूद थे, इसी दौरान किसी बात को लेकर दोनों के बीच बहस हो गई। बताया जा रहा है कि विवाद अचानक इतना बढ़ गया कि युवक ने आवेश में आकर दूसरी मंजिल से छलांग लगा दी। छलांग लगाने के बाद वह बिल्डिंग के पीछे बनी बैक लेन में जा गिरा। तेज आवाज सुनकर आसपास के लोग मौके पर पहुंचे तो युवक खून से लथपथ हालत में पड़ा मिला। स्थानीय लोगों ने तुरंत उसे निजी वाहन से अस्पताल पहुंचाया। सूचना मिलते ही जूनी इंदौर थाना पुलिस मौके पर पहुंची और जांच शुरू की। पुलिस का कहना है कि युवक को गंभीर चोटें आई हैं और उसकी हालत चिंताजनक बनी हुई है। फिलहाल उसका इलाज एक निजी अस्पताल में जारी है।

बीटेक के छात्र को पुलिस ने अफीम के साथ पकड़ा, कैफ़े वाले उसके ग्राहक

पिता अफीम के किसान, वहीं से चुराकर लाता, पूछताछ में राज खुलेगा

इंदौर। नशे के बढ़ते नेटवर्क को लेकर एक चौंकाने वाला मामला सामने आया। जूनी इंदौर पुलिस ने बीटेक के एक छात्र को अफीम तस्करी करते हुए गिरफ्तार किया। आरोपी के पास से करीब एक लाख रुपए कीमत की 518 ग्राम अफीम बरामद की गई। आरोपी को रेलवे ट्रैक के पास पकड़ा गया। पुलिस को सूचना मिली थी कि एक युवक रेलवे पटरी के पास अफीम बेचने की फिराक में घूम रहा है। सूचना के आधार पर घेराबंदी कर 20 वर्षीय गोविंद पाटीदार को गिरफ्तार किया गया। वह मूल रूप से नीमच जिले के सेमली जागीर (तहसील मनासा) का रहने वाला है। गोविंद वर्तमान में तेजाजी नगर क्षेत्र की जोशी कॉलोनी में किराए से रह रहा था और शहर की एक निजी यूनिवर्सिटी से बीटेक (कंप्यूटर साइंस) थर्ड ईयर की पढ़ाई कर रहा है।

खेत से चुराता था अफीम

जांच में सामने आया कि आरोपी के पिता नीमच में लाइसेंस लेकर अफीम की खेती करते हैं। उनके पास लगभग 14 बीघा जमीन है, जिसमें से 10 आरे में वैध खेती होती है। गोविंद इसी खेत से चोरी-छिपे अफीम निकालकर इंदौर लाता था और यहाँ बेचता था। पुलिस पूछताछ में आरोपी ने

बताया कि उसने कुछ महीने पहले तेजाजी नगर क्षेत्र में 'द रॉयल कैफे' नाम से कैफे शुरू किया था, लेकिन लगातार नुकसान के चलते उसे बंद करने की नौबत आ गई। आर्थिक दबाव के चलते उसने जल्दी पैसा कमाने के लिए अफीम तस्करी का रास्ता चुन लिया। उसने न केवल जूनी इंदौर की बस्तियों में अपना नेटवर्क तैयार किया, बल्कि कॉलेज के छात्रों तक भी सप्लाई शुरू कर दी थी। मांग आने पर वह सीधे डिलीवरी करता था।

कैफे कल्चर का खुलासा

पूछताछ में एक और गंभीर पहलू सामने आया है। आरोपी ने कबूल किया कि शहर के कुछ कैफे और चाय दुकानदार भी उससे अफीम खरीदते थे। आरोप है कि युवाओं को लत लगाने के लिए चाय और कॉफी में अफीम का घोल मिलाया जाता था, ताकि ग्राहक बार-बार उन्हीं जगहों पर आएं। हालांकि इस दावे की पुलिस द्वारा विस्तृत जांच की जा रही है, लेकिन इस खुलासे ने शहर के कैफे कल्चर को लेकर चिंता बढ़ा दी है।

आगे की जांच जारी

मादक पदार्थों की तस्करी रोकने के लिए पुलिस ने बस्तियों, चाय-पान की दुकानों और संदिग्ध स्थानों पर निगरानी बढ़ा दी है। इस कार्रवाई के बाद अब एक विशेष टीम कैफे, कॉलेज और अन्य संभावित नेटवर्क की गहराई से जांच कर रही है। पुलिस यह पता लगाने में जुटी है कि इस नेटवर्क में और कौन-कौन लोग शामिल हैं और किन-किन स्थानों पर अफीम की सप्लाई की जा रही थी। साथ ही यह भी जांच की जा रही है कि क्या वास्तव में पेय पदार्थों में नशीले तत्व मिलाकर युवाओं को लत लगाई जा रही थी।

नवरात्रि में वेज ऑर्डर की जगह पहुंचा नॉनवेज खाना, केस दर्ज

पूजा के बीच पहुंचा गलत ऑर्डर, परिवार की नाराजगी

इंदौर। नवरात्रि के दौरान फूड डिलीवरी से जुड़ी एक गंभीर लापरवाही सामने आई है। शहर के गुलाब बाग इलाके में रहने वाले राहुल तिवारी के परिवार ने झोमेटो के जरिए वेज कॉम्बो मील और चिली पनीर ऑर्डर किया था, लेकिन डिलीवरी में उन्हें चिली चिकन भेज दिया गया। यह घटना उस समय हुई, जब घर में नवरात्रि की पूजा चल रही थी और परिवार व्रत के नियमों का पालन कर रहा था। रविवार शाम करीब 15 मिनट में 363 रुपये का ऑर्डर घर पहुंचा। शुरुआत में सब कुछ सामान्य लगा, लेकिन जैसे ही पैकेट खोला गया, परिवार हैरान रह गया। कॉम्बो के बाकी आइटम सही थे, लेकिन एक डिश में चिली पनीर की जगह चिली चिकन निकला। धार्मिक माहौल में नॉनवेज खाना देखकर परिवार ने तुरंत उसे अलग रख दिया और इस पर कड़ी आपत्ति जताई।

ऐप पर शिकायत, लौटाए पैसे- घटना के तुरंत बाद राहुल तिवारी ने ऐप के माध्यम से शिकायत दर्ज कराई। कंपनी ने अपनी गलती स्वीकार करते हुए पूरी राशि वापस कर दी। हालांकि, जिस रेस्टोरेंट नाईट किंग से ऑर्डर आया था, उसने गलती मानने के बावजूद पार्सल वापस लेने से इनकार कर दिया।

एफआईआर दर्ज- घटना से आहत होकर राहुल तिवारी ने सोमवार को लसूडिया थाने में लिखित शिकायत दी। पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। परिवार का कहना है कि यह सिर्फ एक गलती नहीं, बल्कि उनकी धार्मिक भावनाओं से जुड़ा मामला है। उन्होंने आगे उपभोक्ता आयोग में भी शिकायत करने की बात कही है। थाना प्रभारी लसूड़िया तारेश सोनी ने कहा कि फरियादी ने जोमैटो कंपनी द्वारा नानवेज खाना भेजने की शिकायत की है। पुलिस ने केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

डॉक्टर पर दुष्कर्म व ब्लैकमेल के आरोप, क्षेत्र में तनाव, चक्काजाम

आपत्तिजनक हालत में पकड़े जाने पर ग्रामीणों का आक्रोश

इंदौर। बड़गोंदा थाना क्षेत्र के पातालपानी स्थित एक रिसॉर्ट में रविवार को उस समय हंगामा खड़ा हो गया, जब एक डॉक्टर को युवती के साथ संदिग्ध परिस्थितियों में पकड़ लिया गया। घटना की जानकारी मिलते ही मौके पर मौजूद लोगों ने आरोपी की जमकर पिटाई कर दी और उसे पुलिस के हवाले कर दिया। देखते ही देखते मामला तूल पकड़ गया और पूरे क्षेत्र में तनावपूर्ण स्थिति बन गई। पीड़िता ने पुलिस को दिए बयान में बताया कि कुछ माह पूर्व वह गुजर खेड़ा स्थित डॉक्टर के क्लिनिक पर इलाज के लिए गई थी। आरोप है कि डॉक्टर ने उसे नशीला इंजेक्शन देकर दुष्कर्म किया और आपत्तिजनक फोटो व वीडियो बना लिए। बाद में इनके आधार पर उसे लगातार ब्लैकमेल कर संबंध बनाने के लिए दबाव बनाया जाता रहा।

ग्रामीणों का फूटा गुस्सा- घटना के बाद ग्रामीणों में भारी आक्रोश देखने को मिला। गुस्साए लोगों ने आरोपी के अंबा चंदन स्थित घर पर पथराव कर नुकसान पहुंचाया और आगजनी का प्रयास भी किया। वहीं गुजर खेड़ा स्थित क्लिनिक में भी तोड़फोड़ की गई, जिससे क्षेत्र में अफरा-तफरी का माहौल बन गया। सूचना मिलते ही पुलिस बल मौके पर पहुंचा और हालात को नियंत्रित किया। अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक रूपेश द्विवेदी के अनुसार आरोपी के खिलाफ दुष्कर्म और ब्लैकमेलिंग सहित विभिन्न धाराओं में मामला दर्ज कर उसे हिरासत में ले लिया गया है। एहतियात के तौर पर क्षेत्र में अतिरिक्त पुलिस बल तैनात कर निगरानी बढ़ा दी गई है।

महू में विरोध, चक्का जाम- सोमवार को मामले को लेकर महू में हिंदूवादी संगठनों ने जोरदार विरोध प्रदर्शन किया। इंदौर-महू मार्ग पर चक्का जाम कर करीब तीन घंटे तक यातायात बाधित रहा। प्रदर्शनकारियों ने पुलिस की कार्यप्रणाली पर सवाल उठाते हुए आरोपियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की मांग की है।

फर्जी वीडियो बनाकर व्यापारी से वसूली, पुलिस ने केस दर्ज किया

पड़ोसियों ने फरियादी को बदनाम करने की साजिश रची

इंदौर। बाणगंगा थाना क्षेत्र में ब्लैकमेलिंग का गंभीर मामला सामने आया है। यहां फर्नीचर व्यापारी को फर्जी वीडियो के जरिए बदनाम कर उससे पैसे वसूले गए और फिर लगातार और रकम की मांग की जाती रही। बाणगंगा पुलिस ने ब्लैकमेलिंग और अवैध वसूली के मामले में एफआईआर दर्ज की। पीड़ित 51 वर्षीय रामराज शर्मा, जो प्रिंस नगर के निवासी हैं, ने पुलिस को बताया कि उनके पड़ोस में रहने वाले उदय मौर्य, पिंकी मौर्य, अंकित परमार और उनके परिवार से उनका विवाद चल रहा था। करीब चार महीने पहले दोनों पक्षों के बीच झगड़ा और मारपीट भी हुई थी, जिसकी शिकायत थाने में की गई थी। इसके बाद से आरोपी उनसे रंजिश रखने लगे। आरोप है उदय ने अंकित के साथ मिलकर फरियादी को बदनाम करने की साजिश रची।

छवि खराब करने की कोशिश

उन्होंने सोशल मीडिया पर फर्जी वीडियो वायरल किया, जिसमें उन्हें बीजेपी नेता, इलाके का गुंडा और महिलाओं से छेड़छाड़ करने वाला बताया गया। इस वीडियो के कारण उनकी सामाजिक छवि को काफी नुकसान पहुंचा और लोग उनसे तरह-तरह के सवाल करने लगे। फरियादी का कहना है कि वह न तो किसी राजनीतिक दल से जुड़े हैं और न ही उनके खिलाफ पहले कोई आपराधिक मामला दर्ज है।

रेप में फंसाने की धमकी- शिकायत के अनुसार, वीडियो वायरल करने के बाद आरोपियों ने उन्हें फोन कर बदनामी और झूठे केस में फंसाने की धमकी दी और पितृ पर्वत पर मिलने बुलाया। वहां आरोपियों ने उन्हें धमकाया कि यदि 50 हजार रुपए नहीं दिए तो और वीडियो वायरल कर देंगे और झूठे रेप केस में फंसा देंगे। डर के चलते पीड़ित ने आरोपियों को 50 हजार रुपए दे दिए। इसके बावजूद आरोपी लगातार और पैसे की मांग करते रहे। परेशान होकर फरियादी ने डीसीपी राजेश व्यास से शिकायत की। जांच के बाद बाणगंगा पुलिस ने आरोपियों पर ब्लैकमेलिंग और अवैध वसूली के मामले में एफआईआर दर्ज कर ली है।

जले मकान के केबल, एमसीबी और सॉकेट की जांच सागर में

मृतक मनोज के बेटों ने मां बीमार होने से बयान नहीं दिए

इंदौर। करीब छह दिन पहले तिलक नगर थाना क्षेत्र के ब्रजेश्वरी एनेक्स में भीषण अग्निकांड हुआ था। इसमें दो परिवारों के आठ लोगों की मौत हो गई थी। मामले में पुलिस लगातार जांच कर रही है। आग की इस घटना की विस्तार से जांच की जा रही है। यह घटना इलेक्ट्रिक कार की चार्जिंग से होना समझा गया है। लेकिन, प्रशासन इसके हर पहलू की जांच कर रहा है। सोमवार को पुलिस ने घटनास्थल पर लगी केबल, एमसीबी, सॉकेट आदि विद्युत उपकरणों को जब्त किया है। इन उपकरणों की एसएफएल जांच के लिए सागर भेजा जाएगा। वहां से रिपोर्ट आने के बाद आगे की जांच पर पुलिस काम करेगी। अब तक पुलिस ने सभी जिम्मेदार विभागों के अधिकारियों-कर्मचारियों से बयान ले लिए हैं। बयान में कुछ भी संदेहास्पद नजर नहीं आया। फायर ब्रिगेड की जांच रिपोर्ट अब तक नहीं आई है। उसकी रिपोर्ट के बाद पुलिस किसी नतीजे पर पहुंचेगी। उधर, मृतक के तीनों बेटों को बयान के लिए बुलाया था, लेकिन उन्होंने बयान देने में अभी असमर्थता जताई है।

बेटों का कहना है कि मां बीमार है, जब तक वे ठीक नहीं होती, पुलिस से बात नहीं कर पाएंगे। उल्लेखनीय है कि रात पौने 4 बजे हुई इस घटना के समय मकान में 12 लोग मौजूद थे, जिनमें 6 मेहमान किशनगंज (बिहार) से आए थे और 6 पुगलिया परिवार के थे। इनमें 4 लोगों को पड़ौसियों ने बचा लिया, जिनमें मनोज पुगलिया के तीन बेटे और पत्नी थी। इस बारे में मनीष लोधा, टीआई थाना तिलक नगर ने कहा कि हादसे में नष्ट हुए विद्युत उपकरणों को जब्त कर उन्हें जांच के लिए सागर भेजा जा रहा है। मृतक के बेटों के बयान नहीं हो पाए हैं।

हेड कांस्टेबल का अश्लील वीडियो वायरल, कार्रवाई पर उठे सवाल

पड़ोसियों ने वीडियो बनाया, बाद में इसे वायरल कर दिया

इंदौर। पुलिस लाइन में रहने वाले हेड कांस्टेबल दीपक थापा का आपत्तिजनक वीडियो सामने आया है। इसके बाद पुलिस की कार्यप्रणाली पर सवाल खड़े हो गए हैं। बताया जा रहा है कि यह वीडियो चार दिन पहले पड़ोसियों ने ही बनाया था, जो उसकी हरकतों से परेशान थे और बाद में इसे सोशल मीडिया पर वायरल कर दिया गया। वीडियो में थापा अपने घर की बालकनी में अर्धनग्न अवस्था में अश्लील हरकत करते हुए नजर आ रहा है। मामला सामने आने के बाद शुरुआत में पुलिस द्वारा कार्रवाई को लेकर टालमटोल की गई। हालांकि, बाद में पुलिस कमिश्नर के हस्तक्षेप के बाद उसे लाइन अटैच कर दिया गया, लेकिन अब तक उसके खिलाफ कोई एफआईआर दर्ज नहीं की गई है। रहवासियों का कहना है कि यह कार्रवाई केवल औपचारिकता भर है।

पुलिस की पक्षपाती कार्रवाई

पुलिस अधिकारियों का तर्क है कि कोई औपचारिक शिकायतकर्ता सामने नहीं आया, इसलिए केवल विभागीय कार्रवाई की गई। शिकायत मिलने पर मामला दर्ज किया जा सकता था। वहीं, दूसरी ओर लोग यह सवाल कर रहे हैं कि जब हवाई फायरिंग या खतरनाक ड्राइविंग जैसे मामलों में वीडियो के आधार पर पुलिस खुद संज्ञान लेकर केस दर्ज करती है तो इस मामले में ऐसा क्यों नहीं किया गया। सार्वजनिक स्थान पर अश्लील हरकत करने जैसे गंभीर आरोपों के बावजूद एफआईआर दर्ज न होना चर्चा का विषय बना हुआ है।

पहले भी कर चुका विवाद

बताया जा रहा है कि थापा पहले भी विवादों में रह चुका है। पुलिस लाइन में रहने वाले लोग खासकर महिलाएं, उसकी हरकतों से नाराज थीं। इसी वजह से उसकी करतूत का वीडियो बनाकर सार्वजनिक किया गया। थापा के परिवार का संबंध भाजपा नेता से जुड़ा हुआ है, जिसके चलते शुरू में अधिकारियों ने मामले को दबाने की कोशिश की। हालांकि, मामला तूल पकड़ने के बाद केवल लाइन अटैचमेंट की कार्रवाई कर दी गई है।

संपादकीय

निशांत को नीतीश बनाने की जुगत!

बिहार में मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की औपचारिक विदाई के पहले उनके पुत्र और अब तक राजनीति से दूर रहे निशांत कुमार को जिस ढंग से पार्टी का नेतृत्व करने के लिए तैयार किया जा रहा है, वह वैसा ही है कि जैसे किसी कठिन प्रतियोगी परीक्षा पास करने के लिए किया जाता है। नीतीश के राज्यसभा सदस्य चुने जाने के बाद यह तय है कि राज्य की कमान अब भाजपा के हाथ में जाने वाली है और सत्ता में भागीदार जद यू की भरसक कोशिश है कि वो डिप्टी सीएम के दोनो पद हथिया ले। इनमें से एक उपमुख्यमंत्री निशांत कुमार का बनना भी तय है। हालांकि उन्हें कौन सा विभाग मिलेगा, यह भी तय होना बाकी है। हाल में उनको जद यू का राष्ट्रीय अध्यक्ष बनाने की भी चर्चा थी, लेकिन फिर नीतीश को ही दल का राष्ट्रीय अध्यक्ष भी चुना गया। नीतीश का बिहार से जाना निश्चित होने के बाद जद यू में परिवारवाद का राज्याभिषेक एक पूर्व लिखित स्क्रिप्ट की माफिक हो रहा है। पहले निशांत का जद यू में प्रवेश कराया गया। फिर कल तक लालू के परिवारवाद पर चोट करने वाले नीतीश ने अपने बेटे को सफल होने का आशीर्वाद दिया। जद यू भाजपा के साथ गठबंधन में रहते हुए यह संकेत भी लगातार दे रही है कि उसकी राजनीतिक लाइन अलग है। यानी वह मध्यमार्ग ही अपनाएगी। निशांत मंदिर और मस्जिद दोनो जगह मत्था टेकेंगे। हाल में ईदुल फितर पर गांधी मैदान पर होने वाली ईद की नमाज में मुस्लिम भाइयों को बधाई देने के लिए नीतीश की जगह निशांत को भेजा गया ताकि लोगों में अलग संदेश जा सके। कोशिश यही है कि निशांत की छवि अति पिछड़ा वर्ग के साथ-साथ अल्पसंख्यकों में भी सकारात्मक बने। दरअसल राजनीति में हथौड़े की कितनी चोट मारनी है, ये मायने नहीं रखता, लेकिन कहां मारनी है, यही सबसे बड़ा अनुभव होता है। सीएम नीतीश कुमार की राजनीति में अनुभव की बिल्कुल ऐसी ही झलक देखने को मिलती रही है। उन्होंने सत्ता में बने रहने मंत्र सिद्ध कर लिया था। लिहाजा हर मामले में निशांत को इस तरह प्रोजेक्ट किया जा रहा है कि बिहार के अगले मुख्यमंत्री वही होने वाले हैं। दूसरी भाजपा राज्य में अपनी कट्टर हिंदुत्व की लाइन पर आगे बढ़ रही है, और यह किसी भाजपा नेता के सीएम बनने पर और गहरी होगी। भाजपा ने तय कर लिया है कि उसे मुसलमानों के वोट नहीं चाहिए। लेकिन अगर जद यू गैर भाजपा दलों और खासकर राजद के वोटों में सेंध लगा सकती है तो खुशी से लगाए। वैसे बिल्ली के भाग से जैसे निशांत का छींका टूटा है, वैसी किस्मत कम ही लोगों की होती है। यहां असल सवाल यह है कि लाख उन्हें ट्रेनिंग दी जाए, चाल चलन और अदाएं सिखाई जाएं, लेकिन क्या वो अपने पिता की तरह सफल राजनीतिज्ञ भी साबित होंगे? निशांत कुमार बेशक एक ऐसे पिता के बेटे हैं, जिनके पास राजनीति का विशाल अनुभव है। लेकिन निशांत कुमार सियासत में अभी एक कोरे कागज वाली किताब के जैसे हैं, जिसने लाइब्रेरी में अभी जगह बनाई ही है। उनके पास राजनीति का कोई अनुभव नहीं है। क्योंकि वो न तो जद यू या किसी पार्टी के सांगठनिक ढांचे का हिस्सा रहे और न ही कभी कोई चुनाव लड़ा। ऐसे में निशांत का सामना खुर्राट नेताओं (चाहे पक्ष हो या विपक्ष) से होना तय है। ऐसे में पार्टी के वरिष्ठ नेता ही निशांत को सिखाएंगे कि सरकार कैसे चलाई जाती है। निशांत इन सबके अलावा राजनीतिक दांव पेंच कितने और कब तक सीख पाएंगे, यह देखने की बात है। अगर निशांत वाला दांव फेल हुआ तो बिहार में जद यू का खत्म होना भी तय है।

धर्म बदलते ही खत्म होगा एससी दर्जा, सुप्रीम कोर्ट ने दोहराया सख्त नियम

नजरिया

अजय कुमार

लेखक लखनऊ निवासी वरिष्ठ पत्रकार हैं।

भारत के सुप्रीम कोर्ट ने मंगलवार को एक ऐसा फैसला सुनाया जिसने सामाजिक न्याय की पूरी बहस को फिर से गरमा दिया है। अदालत ने साफ कहा कि हिंदू, सिख या बौद्ध धर्म के अलावा किसी और धर्म में जाने वाला व्यक्ति अनुसूचित जाति का दर्जा तुरंत खो देता है। यह फैसला आंध्र प्रदेश हाईकोर्ट के पुराने आदेश को बरकरार रखते हुए आया, जिसमें गुंटूर जिले के चिंतादा आनंद नाम के एक पादरी की याचिका खारिज की गई थी। चिंतादा आनंद ने कुछ लोगों पर जातिगत गाली-गलौज और हमले का आरोप लगाते हुए एससी-एसटी अत्याचार निवारण कानून के तहत मुकदमा दर्ज कराया था, लेकिन आरोपियों ने कहा कि वह तो दशक से ज्यादा समय से ईसाई धर्म अपनाकर पादरी का काम कर रहे हैं, इसलिए उन्हें अब वह संरक्षण नहीं मिल सकता। हाईकोर्ट ने इस दलील को माना और अब सुप्रीम कोर्ट की दो जजों की पीठ ने भी वही रुख अपनाया। जस्टिस प्रशांत कुमार मिश्रा और जस्टिस एनवी अंजारिया की बेंच ने कहा कि अपीलकर्ता के ईसाई बनने और सक्रिय रूप से प्रार्थनाएं कराने के सबूत साफ हैं, इसलिए एससी का दर्जा खत्म माना जाएगा।यह फैसला कोई नया कानून नहीं बनाता, बल्कि 1950 के संविधान (अनुसूचित जाति) आदेश की धारा 3 को दोहराता है। उस आदेश में लिखा है कि अनुसूचित जाति का दर्जा सिर्फ उन लोगों को मिलता है जो हिंदू, सिख या बौद्ध धर्म मानते हैं। कोई अन्य धर्म अपनाने पर जन्म से मिला यह हक स्वतः खत्म हो जाता है। कोर्ट ने जोर देकर कहा कि यह प्रतिबंध पूर्ण है, इसमें कोई छूट या अपवाद नहीं। चाहे व्यक्ति का जन्म किसी भी दलित परिवार में हुआ हो, अगर वह ईसाई या मुस्लिम बन जाता है तो वह अब अनुसूचित जाति का सदस्य नहीं रहता। ईसाई धर्म में जाति की कोई व्यवस्था नहीं मानी जाती, इसलिए जातिगत अत्याचार का कानून भी उस पर लागू नहीं होता। चिंतादा आनंद गांव में घर-घर रविवार की प्रार्थनाएं कराते थे, पादरी के रूप में काम करते थे। कोर्ट ने इन तथ्यों को देखते हुए कहा कि घटना के समय वह ईसाई धर्म का पालन कर रहे थे, इसलिए एससी-एसटी एक्ट के तहत शिकायत का आधार ही नहीं बनता।

इस फैसले की गहराई समझने के लिए हमें संविधान की मूल भावना को याद करना होगा। डॉक्टर भीमराव आंबेडकर और संविधान सभा ने अनुसूचित जाति को विशेष दर्जा इसलिए दिया क्योंकि हिंदू समाज में सदियों से छुआछूत और अस्पृश्यता का भयानक अन्याय चला था। यह दर्जा ऐतिहासिक दमन की याद दिलाता है, न कि किसी व्यक्तिगत पसंद का। 1950 का आदेश शुरू में सिर्फ हिंदुओं के लिए था। बाद में सिखों को 1956 में और बौद्धों को 1990 में शामिल किया गया क्योंकि इन धर्मों में भी जातीय संरचना बनी रही। लेकिन इस्लाम और ईसाई धर्म खुद को जातिविहीन बताते हैं। कोर्ट ने कहा कि अगर कोई इनमें चला जाता है तो ऐतिहासिक पीड़ा का आधार भी खत्म हो जाता है। इसलिए आरक्षण, सरकारी नौकरियां, शिक्षा में सीटें, छात्रवृत्तियां और कानूनी सुरक्षा जैसे लाभ अब नहीं मिल सकते।फैसले के बाद सबसे बड़ा सवाल यह उठता है कि क्या इससे धर्मांतरण रुकेगा? अनुच्छेद 25 के तहत धर्म बदलना हर भारतीय का मौलिक अधिकार है। कोई भी व्यक्ति अपनी आस्था बदल सकता है, प्रचार कर सकता है। लेकिन क्या यह अधिकार राज्य द्वारा दिए गए आरक्षण जैसे लाभों पर भी लागू होता है? सुप्रीम कोर्ट ने जवाब दिया नहीं। लाभ उस धर्म में झेली गई पीड़ा से जुड़े हैं, न कि व्यक्ति की नई आस्था से। अगर कोई दलित ईसाई बनकर भी पुराना एससी सर्टिफिकेट दिखाकर फायदा उठाता रहे तो असली हिंदू दलितों का हक छिन जाएगा। कोटा सीमित है, संसाधन सीमित हैं। नई आबादी जुड़ने से मौजूदा लाभार्थियों का हिस्सा कम हो जाएगा। राजनीति में भी असर पड़ेगा। आरक्षित सीटों पर उम्मीदवारों का चरित्र बदल सकता है। जो लोग धर्म बदलकर लाभ लेते रहे, उनके लिए अब रास्ता बंद हो गया।

लेकिन यह मुद्दा इतना सरल भी नहीं है। लंबे समय से एक बड़ा विवाद चल रहा है क्या ईसाई और मुस्लिम दलितों को भी अनुसूचित जाति का दर्जा देना चाहिए? 2007 में रंगनाथ मिश्रा आयोग ने सिफारिश की थी कि सभी धर्मों के दलितों को आरक्षण मिले क्योंकि सामाजिक पिछड़ापन धर्म बदलने से नहीं मिटता। लेकिन केंद्र सरकार ने इस रिपोर्ट को खारिज कर दिया। सरकार का कहना था कि आयोग ने बिना जमीनी अध्ययन के सिफारिश कर दी। अब पूर्व मुख्य न्यायाधीश के जी बालकृष्णन की अध्यक्षता में नया आयोग इस पूरे मसले पर गहराई से विचार कर रहा है। सुप्रीम कोर्ट में भी कई याचिकाएं लंबित हैं। इस फैसले ने उस बहस को और तेज कर दिया है। फिलहाल कोर्ट ने कहा कि बदलाव अगर करना है तो संसद करे, अदालत नहीं। 1950 का आदेश अभी पूरी तरह लागू है।सामाजिक रूप से देखें तो धर्मांतरण अक्सर बेहतर जीवन की तलाश में होता है। कई दलित परिवार सोचते हैं कि हिंदू समाज में मिलने वाला अपमान ईसाई या मुस्लिम बनकर कम हो जाएगा। लेकिन हकीकत में

कई जगहों पर जाति की छाया उन नए धर्मों में भी दिखती है। फिर भी कानून साफ है। अगर कोई व्यक्ति वापस हिंदू हो जाता है और उसका समुदाय उसे स्वीकार कर लेता है तो दर्जा बहाल हो सकता है। लेकिन एक साथ दो धर्मों का पालन करके एससी का दावा नहीं किया जा सकता। कोर्ट ने इस मामले में सबूतों पर जोर दिया। अगर कोई पादरी का काम कर रहा है, प्रार्थनाएं आयोजित कर रहा है तो वह ईसाई ही माना जाएगा। चिंतादा आनंद के मामले में यही हुआ।

आरक्षण का मकसद सामाजिक समानता लाना है, न कि धर्म बदलने को बढ़ावा देना। अगर बदलने से भी लाभ मिलते रहें तो मूल उद्देश्य ही खत्म हो जाएगा। सरकारी नौकरियों, विधानसभाओं और लोकसभा में सीटें उन लोगों के लिए आरक्षित हैं जिन्होंने हिंदू समाज में दमन झेला। ईसाई या मुस्लिम बनकर वे अब उस दमन की श्रेणी से बाहर हो जाते हैं। हालांकि वे ओबीसी या आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग में शामिल हो सकते हैं अगर उनका समुदाय सूची में है, लेकिन एससी का विशेष दर्जा नहीं मिलेगा। यह फैसला उन लोगों के लिए भी चेतावनी है जो धर्मांतरण को सिर्फ फायदे का साधन बनाते हैं। सच्चा परिवर्तन आस्था से होना चाहिए, आरक्षण के लालच से नहीं।देश की एकता के नजरिए से भी यह फैसला अहम है। भारत विविधताओं का देश है, लेकिन संविधान ने सामाजिक न्याय को कुछ धर्मों तक सीमित रखा है। अगर हर धर्म को एससी दर्जा दे दिया जाए तो पूरी आरक्षण व्यवस्था चरमरा सकती है। कोटा बढ़ाने से पहले आर्थिक और सामाजिक सर्वेक्षण जरूरी है। सरकार ने यही रुख अपनाया है। नया आयोग इसी दिशा में काम कर रहा है। फैसले से दलित समाज में दो धड़ों में बंटाव हो सकता है एक वे जो हिंदू रहकर संघर्ष कर रहे हैं, दूसरे वे जो धर्म बदल चुके हैं। लेकिन कोर्ट ने कहा कि कानून सबके लिए बराबर है। कोई भी व्यक्ति दो श्रेणियों का लाभ एक साथ नहीं ले सकता।

इस फैसले ने एक बार फिर साबित किया कि संविधान सर्वोच्च है। अदालत न भावनाओं से प्रभावित होती है, न राजनीतिक दबाव से। उसने 1950 के आदेश को दोहराया और कहा कि यह पूर्ण प्रतिबंध है। अब अगर बदलाव करना है तो संसद करे। चिंतादा आनंद की याचिका खारिज होने से उनका मुकदमा भी प्रभावित होगा। लेकिन इससे बड़े सवाल पर बहस शुरू हो गई है क्या सामाजिक पिछड़ापन धर्म से ऊपर है? जवाब अभी लंबित है, लेकिन फिलहाल संविधान की मूल भावना जीत गई।भारत जैसे देश में सामाजिक न्याय की राह हमेशा कठिन रही है। एक तरफ आरक्षण जरूरी है पिछड़ेपन को मिटाने के लिए, दूसरी तरफ इसके दुरुपयोग को रोकना भी उतना ही जरूरी। इस फैसले ने दुरुपयोग की एक बड़ी खिड़की बंद कर दी। अब जरूरत है कि सरकार और समाज मिलकर उन दलितों की मदद करें जो बिना धर्म बदले संघर्ष कर रहे हैं। शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार की योजनाएं और मजबूत हों। जातिगत भेदभाव पर सख्ती बढ़े। तभी सच्चा बदलाव आएगा।सुप्रीम कोर्ट का यह फैसला सिर्फ कानूनी नहीं, नैतिक भी है। यह कहता है कि संविधान की रक्षा करो, उसकी भावना को मत तोड़ो। धर्म परिवर्तन व्यक्तिगत आस्था का मामला है, लेकिन राज्य के लाभ संवैधानिक सीमाओं में बंधे रहेंगे। यह फैसला देश को याद दिलाता है कि न्याय की राह पर चलते हुए संतुलन बनाए रखना होगा न तो धर्म की आड़ में लाभ लूटने दो, न ही असली दलितों का हक किसी को छीनने दो। सामाजिक न्याय की यह लड़ाई अभी जारी रहेगी, लेकिन संविधान की दीवार मजबूत बनी रहेगी।

समाज

डॉ. नरेश गौतम

सहायक प्रोफेसर, समाज कार्य विभाग, एसआरयू रायपुर

क्या संबंधों का मूल्य केवल अपेक्षाओं की पूर्ति से है?

यह समय केवल तकनीक के बदलने का नहीं है; यह समय मनुष्य के भीतर संबंधों को देखने और जीने की समझ के बदलने का है। सोशल मीडिया और रील्स ने हमारे सामने एक ऐसी आभासी दुनिया खड़ी कर दी है जो केवल मनोरंजन नहीं करती बल्कि हमारी इच्छाओं, हमारी अपेक्षाओं और हमारी भावनाओं की संरचना तक को पूरी तरह से प्रभावित करती है। एल्गोरिदम हमें वही दिखाता है जो हमें अच्छा लगता है या हम जैसा सोच रहे होते। लेकिन धीरे-धीरे यही अच्छा लगना, या सोचना हमारी वास्तविकता में तब्दील होने लगता है।

हर दिन हमारी स्क्रीन पर परफेक्ट रिश्तों की रिल्स परोसी जाती हैं मुस्कुराते चेहरे सरप्राइज गिफ्ट्स, रोमांटिक ट्रिप्स आदि आदि। इन चमकदार रिल्स और तस्वीरों के बीच हम अनजाने में अपने रिश्तों को उसी तराजू पर तौलने लगते हैं वैसी ही उम्मीद करने लगते हैं। यहीं से एक अंजाना असंतोष पैदा होता है। क्योंकि असली रिश्ते कैमरे के लिए नहीं जीते, वे उन अनगिनत साधारण एकांत क्षणों में सांस लेते हैं, जो कभी पोस्ट नहीं किए जाते। इन्हीं सोसल मीडिया और रिल्स के चलते अब रिश्तों के भीतर एक खतरनाक बदलाव दिखने लगे हैं। वे सहमति और साझेदारी से अधिक प्रदर्शन बनते जा रहे हैं। भावनाएँ पीछे छूट रही हैं, सब कुछ दिखाने की होड़ में हैं, हर एक छोटी बड़ी खुशी को दिखाना जरूरी हो गया है, हर पल को परफेक्ट बनाने/दिखाने का एक अनकहा दबाव बन गया है। लेकिन जीवन कोई रिल्स का फ़िल्टर नहीं है, जिसे मनचाहे ढंग से रंगों में ढाला जा सके!

सोशल मीडिया ने एक नया ट्रेंड सेट किया है जहाँ समस्या खुश रहने में नहीं है बल्कि समस्या खुश दिखने की बाध्यता में है। जब दिखावा अनुभव पर हावी हो जाता है, तो रिश्ते अपनी स्वाभाविकता खो देते हैं। लोग अपने संबंधों को महसूस करने से अधिक उन्हें प्रदर्शित करने में ऊर्जा लगाने लगते हैं। और जब वास्तविक जीवन उस ऑनलाइन छवि से मेल नहीं खाता, तो निराशा, असंतोष और दूरी जन्म लेने लगते हैं। धीरे-धीरे रिश्तों के भीतर एक नया प्रश्न जन्म लेने लगता है कि तुमने मेरे लिए क्या किया है? यह प्रश्न संबंधों को लेन-देन में बदल देता है। जबकि किसी भी रिश्ते की बुनियाद यह होनी चाहिए थी तुम मेरे लिए क्या महसूस करते हो? लेकिन यह भी विडंबना है कि भावनाएँ कभी मापी नहीं जा सकतीं, इसलिए उन्हें महत्व भी कम दिया जाता है। अपेक्षाएँ, जो कभी संतुलन बनाए रखने का माध्यम थीं, अब बोझ बनती जा रही हैं। किसी व्यक्ति का मूल्यांकन इस आधार पर होने लगा है कि वह कितनी अपेक्षाओं को पूरा कर पाता है। जो असफल होता है, वह केवल एक इंसान नहीं रहता, बल्कि एक असफल परिणाम में बदल दिया जाता है। रिश्ते मानो किसी गुणवत्ता परीक्षण की प्रक्रिया बन गए हैं, जहाँ अस्वीकृति बहुत आसान है और स्वीकार करना उतना ही मुश्किल! इस पूरी प्रक्रिया में सबसे बड़ी हानि स्वीकार्यता की होती है। हम लोगों को वैसे स्वीकार करने की क्षमता खोते जा रहे हैं जैसे वे हैं। उसकी जगह हमने एक आदर्श छवि को कर लिया है। एक ऐसी छवि, जिसमें हर व्यक्ति को फिट होना है। यह भाव अंदर ही अंदर रिश्तों को भीतर से थका देता है। और यह बदलाव केवल व्यक्तिगत संबंधों तक सीमित नहीं रहता बल्कि यह हमारे जीवन के व्यापक दृष्टिकोण पर भी पूरा प्रभाव डालता है। सफलता की परिभाषा सिमटकर आर्थिक, पद, प्रतिष्ठा और दिखावे तक रह जाती है। ईमानदारी, संवेदनशीलता और संतुलन कोई महत्व नहीं रखते, जब तक रिश्तों के साथ आर्थिक चमक न जुड़ी हो।

रिश्तों में सच्चाई और सम्मान रखने वाले लोग भी अक्सर कमतर समझ लिए जाते हैं, क्योंकि वे उस चमकदार जीवनशैली का हिस्सा नहीं होते, जिसे समाज ने सफलता का पर्याय बना दिया है। सोशल मीडिया इस प्रवृत्ति को और तीव्र करता है। अब तुलना केवल अपने आसपास के लोगों से नहीं, बल्कि अनगिनत प्रचलित रिल्स से होती है। यह तुलना धीरे-धीरे भीतर एक खालीपन पैदा करती है जहाँ संतोष की जगह कमी का एहसास घर कर लेता है। और उसका परिणाम सीधा रिश्तों में विश्वास की जगह संदेह, समझ की जगह प्रतिस्पर्धा और स्वीकार्यता की जगह निर्णय ने ले ली है। हम अपने ही लोगों के साथ एक न्यायाधीश की तरह व्यवहार करने लगे हैं, जहाँ हर व्यवहार का मूल्यांकन होता है, हर भावना का परीक्षण होता है। ऐसे में मूल प्रश्न फिर सामने खड़ा होता है क्या हम अपने रिश्तों को सचमुच जी रहे हैं, या उन्हें लगातार साबित करने में लगे हैं? क्या हम अपने लोगों को उनकी अपूर्णताओं के साथ स्वीकार कर सकते हैं, या हम उन्हें एक आदर्श छवि में ढालने की जिद में उन्हें खोते जा रहे हैं? शायद समस्या सोशल मीडिया या अपेक्षाएँ नहीं हैं। समस्या यह है कि हमने अपेक्षाओं को केंद्र में रख दिया है और स्वीकार्यता को हाशिए पर धकेल दिया है।

तीसरे विश्वयुद्ध का डर कितनी हकीकत?

सामयिक

मनीषा मंजरी

लेखक व्यंग्यकार हैं।

आज के वैश्विक दुनिया में यदि कोई ऐसा डर है, जो हर देश, हर समाज और लगभग हर व्यक्ति के मन में कहीं ना कहीं चुपचाप अपनी जगह बना चुका है, तो वह है– तीसरे विश्व युद्ध का डर। यह डर सिर्फ सीमाओं पर खड़े सैनिकों के मन मैं हीं अपनी पैठ नहीं बना रहा बल्कि आम नागरिकों की रोज़मर्रा की सोच का भी हिस्सा बनता जा रहा है। कभी यह केवल कल्पनाओं, विश्लेषणों और इतिहास की किताबों तक सीमित था, लेकिन आज के बदलते वैश्विक परिदृश्य में यह सवाल और अधिक गंभीर हो गया है कि क्या यह डर अब हकीकत का रूप ले रहा है।

हाल के समय में अमेरिका और ईरान के बीच बढ़ता तनाव इस चिंता को और गहरा करता जा रहा है। यह तनाव अब केवल कूटनीतिक मतभेदों तक सीमित नहीं रहा, बल्कि उसने सैन्य गतिविधियों और प्रत्यक्ष टकराव का स्वरूप भी ग्रहण कर लिया है। हमले और जवाबी हमले, बढ़ती आक्रामक बयानबाजियां, और क्षेत्रीय अस्थिरता, ये सभी संकेत इस ओर इशारा करते हैं कि दुनिया एक बार फिर एक खतरनाक मोड़ पर खड़ी है।

इतिहास हमें यह सिखाता है कि विश्व युद्ध अचानक नहीं होते। वे धीरे-धीरे आकार लेते हैं, राजनीतिक असहमति, आर्थिक प्रतिस्पर्धा और शक्ति संतुलन की जटिलताओं के बीच। प्रथम और द्वितीय विश्व युद्ध भी ऐसे ही छोटे-छोटे संघर्षों से शुरू होकर वैश्विक तबाही में बदल गए थे। आज जब हम वर्तमान स्थिति का विश्लेषण करते हैं, तो हमें कुछ वैसी ही हलचलें दिखाई देती हैं जहां देशों के बीच दूरियाँ बढ़ती जा रही हैं, हथियारों की होड़ लगी हुई है,और वर्चस्व की चाह सार्वभौमिक बन चुकी है। लेकिन आज की दुनिया अतीत से बहुत अलग है। वैश्वीकरण ने देशों को एक-दूसरे से इस तरह जोड़ दिया है कि एक देश की समस्या दूसरे देश को भी प्रभावित करती है। आर्थिक, तकनीकी और सांस्कृतिक स्तर पर यह परस्पर निर्भरता इतनी गहरी हो चुकी है कि कोई भी बड़ा युद्ध केवल दो देशों तक सीमित नहीं रह सकता। उसका प्रभाव पूरी दुनिया को झकझोर देगा।

अब आधुनिक युद्ध का स्वरूप भी बदला हुआ है। आज के युद्ध केवल सीमाओं पर नहीं लड़े जाते, यह साइबर हमलों, आर्थिक प्रतिबंधों, सूचना के नियंत्रण और वैचारिक टकराव के रूप में भी सामने आते हैं। ये ऐसे युद्ध हैं जिसमें बंदूकें कम चलती हैं, लेकिन असर उससे कहीं अधिक गहरा और घातक होता है। अमेरिका और ईरान के बीच का वर्तमान संघर्ष भी इसी बदलते स्वरूप को दर्शाता है। यह केवल दो देशों की लड़ाई नहीं है, बल्कि इसके पीछे क्षेत्रीय और वैश्विक हित जुड़े हुए हैं। मध्य-पूर्व का संतुलन, तेल के स्रोत, समुद्री मार्ग और वैश्विक अर्थव्यवस्था–सब इस संघर्ष से प्रभावित हो रहे हैं। यही कारण है कि दुनिया भर की निगाहें इस पर टिकी हुई हैं।

इस पूरे परिदृश्य में मीडिया की भूमिका को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। मीडिया हमें घटनाओं से अवगत कराता है, लेकिन कई बार यह डर को भी बढ़ावा देता है। हर घटना को संभावित विश्व युद्ध के रूप में प्रस्तुत करना लोगों के मन में असुरक्षा और भय को गहरा कर देता है। सोशल मीडिया इस स्थिति को और जटिल बना देता है, जहाँ सूचनाएँ तेजी से फैलती हैं, लेकिन उनकी सत्यता हमेशा स्पष्ट नहीं होती। फिर भी, यह कहना उचित नहीं होगा कि तीसरे विश्व युद्ध का डर केवल एक भ्रम है। जब वास्तविक संघर्ष सामने हो, जब सैन्य गतिविधियाँ तेज हो रही हों, और जब निर्दोष नागरिक इसकी कीमत चुका रहे हों, तब यह डर एक सजीव हकीकत बन जाता है। यह हमें सोचने पर मजबूर करता है कि क्या हम सच में एक बड़े वैश्विक संघर्ष की ओर बढ़ रहे हैं। लेकिन इसके साथ ही एक और सच्चाई भी मौजूद है। दो विश्व युद्धों की भयावहता ने मानवता को यह सिखाया है कि युद्ध का परिणाम केवल विनाश होता है। लाखों जिंदगियाँ खत्म हो जाती हैं, समाज बिखर जाता है और पीढ़ियों तक उसका प्रभाव बना रहता है। यही कारण है कि आज अधिकांश देश प्रत्यक्ष युद्ध से बचने की कोशिश करते हैं और कूटनीतिक समाधान तलाशते हैं। इस आधार पर हम क्या यह कह सकते हैं कि तीसरे विश्व युद्ध का खतरा हमारे सिर पर मंडरा रहा है? या फिर यह केवल एक मानसिक भय है जिसे हमने खुद ही इतना बड़ा बना लिया है? शायद सच्चाई इन दोनों के बीच कहीं स्थित है। यह ना पूरी तरह हकीकत है और ना ही पूरी तरह भ्रम है। यह एक ऐसी स्थिति है जहाँ वास्तविक खतरे और मानसिक आशंकाएँ एक-दूसरे में घुलमिल जाती हैं। अमेरिका और ईरान के बीच का यह संघर्ष हमें एक चेतावनी देता है कि दुनिया अब भी पूरी तरह सुरक्षित नहीं है। शांति कोई स्थायी स्थिति नहीं, बल्कि एक निरंतर प्रयास है, जिसे बनाए रखने के लिए समझदारी, धैर्य और सहयोग की आवश्यकता होती है।

तो फिर यह कहना गलत नहीं होगा कि तीसरे विश्व युद्ध का डर अब केवल एक कल्पना नहीं रहा, बल्कि यह हमारे समय की एक सच्चाई से जुड़ा हुआ प्रश्न बन चुका है। सवाल यह नहीं है कि युद्ध होगा या नहीं, सवाल यह है कि क्या हम अपने निर्णयों, अपनी नीतियों और अपने दृष्टिकोण से उसे टालने में सक्षम होंगे। क्योंकि असली जीत किसी युद्ध को जीतने में नहीं, बल्कि उसे होने से रोक देने में है।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए उमेश त्रिवेदी द्वारा पंकज प्रिंटर्स एंड पैकेजिंग, 16, अल्फा इंडस्ट्रीयल पार्क, जाखिया, इंदौर, म.प्र.-453555 से मुद्रित एवं 662, साई कृपा कॉलोनी, बॉम्बे हॉस्पिटल के सामने, इंदौर से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
स्थानीय संपादक
हेमंत पाल
प्रबंध संपादक
रमेश रंजन त्रिपाठी

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2015/ 66040,
Mobile No.: 09893032101
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

व्यंग्य

मुकेश राठौर

लेखक व्यंग्यकार हैं।

मांग-पूर्ति के पीछे का अर्थशास्त्र अब मनोविज्ञान हुआ

हमारे यहां मांग बढ़ने की कोई तय वजह नहीं है। कब,कहां,कौन व्यक्ति और वस्तु की मांग बढ़ जाए कह नहीं सकते!आप अच्छे-भले गांव की चौपाल पर बैठे गप्पे लड़ा रहे हैं तभी किसी बीज कंपनी का नुमाइंदा यकायक प्रकट हो समोसे की शर्त पर फलां भाई के खेत पर 'सेल्फी विद सोयाबीन' का आग्रह करने लगें,लो बढ़ गई आपकी मांग। वैसे अवसर विशेष हमेशा से मांग बढ़ने के कारण रहे हैं। ये बात और है कि कुछ मांगें सार्थक तो कुछ निरर्थक होती हैं। दिवाली आने पर पटाखों की मांग बढ़ जाती है तो होली आने पर रंगों की। मानसून आते ही उर्वरक,तो फसल आते ही मजदूरों की मांग में इज़ाफ़ा हो जाता है। आटा-दाल,नून-तेल कुछ ऐसी वस्तुएं ऐसी है जिनकी मांग हमेशा ही बनी रहती है और बनी रहेगी क्योंकि ये मांगें आदमी के जीवन से जुड़ी है। यूं कहे कि इनकी मांग-आपूर्ति का नियम ही जीवन का नियम है। अर्थशास्त्र का नियम कहता है कि किसी वस्तु की मांग बढ़ती है तो पूर्ति कम हो जाती है और कीमत बढ़ जाती है। मांग बढ़ने पर पूर्ति का कम हो जाना समझ में आता है लेकिन मात्रा का कम हो जाना समझ से परे। मांग की पूर्ति के पीछे अर्थशास्त्र है तो मात्रा के पीछे मनोविज्ञान। रोटी एक खाने वाले दो एक को मिली,दूसरे को नहीं...ये अर्थशास्त्र है लेकिन एक रोटी के दो टुकड़े देकर दोनों को खुश करना मनोविज्ञान है। जब अर्थशास्त्र काम न आए तो मनोविज्ञान बड़ा काम आता है। उपभोक्ता के खीसें में छुपे धन के बरअक्स उसके मन को समझ लिया तो फिर धन का क्या है वह तो कहीं से भी दौड़ा चला आएगा। भयंकर व्यावसायिकता के दौर में उत्पादकों ने उपभोक्ताओं का मनोविज्ञान समझ लिया है। एक बार

किसी के मन का विज्ञान समझ आ जाए तो अर्थशास्त्र का क्या है वह तो स्वतः गले उतरने लगता है। बीस पैसे की माचिस रुपया छू गई। इससे पहले कि उपभोक्ता अर्थशास्त्र समझ जाए उत्पादकों ने उनका मनोविज्ञान समझ लिया। माचिस की साइज बढ़ाई, प्राइज यथावत रखीं लेकिन तीलियां कम कर दी। उत्पादक खुश और उपभोक्ता भी। रही बात विक्रेता की तो उसका क्या...उसके लिए तो बस इतना ही कहा जा सकता है कि गोबर गिरता है तो मिट्टी लेकर ही उठता है। हालांकि विक्रेता गोबर कतई नहीं। यही तरीका बीड़ी बंडल पर भी लागू होगा। हालांकि बंडल में बीड़ी कम करके उन्होंने बीड़ी पीने वालों के फेफड़ों पर ही उपकार किया। बस अब तंबाखू की मात्रा भी कम कर दें तो उनके बच्चे जिए और इनके भी...।

कृषि प्रधान देश में यूरिया हमेशा से किसानों की पहली पसंद रहा है। बैग में यूरिया की मात्रा कम कर सरकार ने किसानों की पीठ का बोझ ही कम किया है। बीते सालों में यकीनन आदमी बड़ा हुआ है। सामाजिक,आर्थिक स्तर पर उसका भाव बढ़ने से उसका सिबिल रिकॉर्ड भी सुधरा है काश! इतने भाव बढ़ने के साथ दया, करुणा, सहानुभूति, त्याग जैसे मन के भाव भी बढ़ते!

गणेश शंकर विद्यार्थी पर विशेष

अशोक भार्गव

निर्भीक हिंदी पत्रकारिता के अमर प्रहरी

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम केवल तलवारों और बंदूकों से नहीं लड़ा गया, बल्कि कलम की धार ने भी इस संघर्ष को दिशा दी। इस परंपरा के सबसे तेजस्वी, निर्भीक और सिद्धांत निष्ठ पत्रकारों में गणेश शंकर विद्यार्थी का नाम स्वर्णाक्षरों में अंकित है। उन्होंने पत्रकारिता को केवल पेशा नहीं, बल्कि राष्ट्र सेवा, सामाजिक न्याय और मानवीय मूल्यों की स्थापना का माध्यम बनाया। उनकी लेखनी अन्याय, शोषण और सांप्रदायिकता के विरुद्ध एक सशक्त आवाज थी, जिसने अंग्रेजी हुकूमत की नींव को चुनौती दी और समाज को जागृत किया।

है नहीं शमशीर मेरे हाथ में तो क्या हुआ, मैं अपनी कलम से ही करूंगा दुश्मनों के सर कलम। यह पंक्तियाँ गणेश शंकर विद्यार्थी के जीवन और व्यक्तित्व का सटीक परिचय देती हैं। वे न केवल एक क्रांतिकारी पत्रकार थे, बल्कि स्वतंत्रता सेनानी, समाजसेवी और दूरदर्शी राजनीतिज्ञ भी थे। उन्होंने अपनी निर्भीक लेखनी को ही अपना अस्त्र बनाकर अंग्रेजों की दमनकारी नीतियों, सामाजिक अन्याय, जमींदारों और सामंतों के अत्याचारों के विरुद्ध संघर्ष किया। 26 अक्टूबर 1890 को इलाहाबाद में जन्मे विद्यार्थी का बचपन मध्य प्रदेश के मुंगावली में बीता। प्रारंभिक शिक्षा प्रयागराज में हुई। छात्र जीवन में ही उनका विवाह हो गया था। आगे चलकर कानपुर उनकी कर्मभूमि बनी, जहाँ उन्होंने मजदूरों और शोषित वर्ग के अधिकारों के लिए संघर्ष किया। सूती मिलों के मजदूरों की दयनीय स्थिति देखकर उन्होंने उन्हें संगठित किया और उनके हक की लड़ाई लड़ी। अपने जीवन के प्रारंभिक दौर में उन्होंने नौकरी भी की। पहले कानपुर करेंसी में और बाद में एक विद्यालय में शिक्षक के रूप में। किंतु जब उन्हें देशभक्ति से प्रेरित साहित्य पढ़ने से रोका गया, तो उन्होंने स्वाभिमान के साथ नौकरी छोड़ दी। यह घटना उनके अडिग चरित्र और राष्ट्र के प्रति समर्पण को दर्शाती है।

1913 में उन्होंने 'प्रताप' नामक साप्ताहिक पत्र की स्थापना की। यह केवल एक समाचार पत्र नहीं था, बल्कि स्वतंत्रता, न्याय और जन जागरण का सशक्त मंच बन गया। 'प्रताप' के माध्यम से विद्यार्थी ने पत्रकारिता को सामाजिक दायित्व से जोड़ा। उन्होंने इसे किसी व्यक्ति, संस्था या विचारधारा का प्रवक्ता नहीं, बल्कि सत्य और न्याय का पक्षधर बनाया। 'प्रताप' के पहले अंक में प्रकाशित उनका लेख 'प्रताप की नीति' आज भी पत्रकारिता के लिए एक आदर्श घोषणा पत्र माना जाता है। उन्होंने स्पष्ट लिखा कि उनका उद्देश्य समस्त मानव जाति का कल्याण है और भारत की उन्नति उसके लिए आवश्यक साधन है। वे पत्रकारिता को समाज सेवा का पवित्र कार्य मानते थे और जनता को उनके अधिकारों एवं कर्तव्यों के प्रति जागरूक करने को अपना दायित्व समझते थे। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि किसी की प्रशंसा या आलोचना, किसी की धमकी या दबाव उन्हें अपने मार्ग से विचलितनहीं कर सकेगा। सत्य और न्याय ही उनके पथप्रदर्शक होंगे। वे सांप्रदायिक और व्यक्तिगत विवादों से दूर रहकर निष्पक्ष पत्रकारिता के पक्षधर थे। उनका मानना था कि पत्रकार का कर्तव्य समाज में समरसता, शांति और भाईचारे को बढ़ावा देना है।

विद्यार्थी का अपने आदर्शों के प्रति समर्पण अद्वितीय था। वे मानते थे कि यदि कोई व्यक्ति अपने सिद्धांतों से समझौता कर ले, तो वह नैतिक रूप से मृत हो जाता है। उन्होंने लिखा कि जिस दिन वे सत्य और निष्पक्षता से हटेंगे, वह उनके जीवन का सबसे दुर्भाग्यपूर्ण दिन होगा। उनकी लेखनी इतनी प्रभावशाली और क्रांतिकारी थी कि अंग्रेज सरकार ने कई बार 'प्रताप' पर जुर्माना लगाया, दंड दिया और उन्हें पाँच बार जेल भेजा। इसके बावजूद उन्होंने अपने विचारों से कभी समझौता नहीं किया। वे महात्मा गांधी के अहिंसक आंदोलन के समर्थक थे, लेकिन साथ ही उन्होंने भगत सिंह जैसे क्रांतिकारियों की भी हर संभव सहायता की। यह उनके व्यापक दृष्टिकोण और राष्ट्रहित के प्रति समर्पण को दर्शाता है। भाषा के प्रति उनका दृष्टिकोण भी अत्यंत गहरा था। उन्होंने अपने लेखन की शुरुआत उर्दू में की, लेकिन हिंदी के प्रति उनके प्रेम ने उन्हें हिंदी पत्रकारिता की ओर अग्रसर किया। वे हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने के प्रबल समर्थक थे। उनका मानना था कि भाषा केवल संप्रेषण का माध्यम नहीं, बल्कि संस्कृति, आत्मा और राष्ट्रीय अस्मिता की संरक्षिका है।

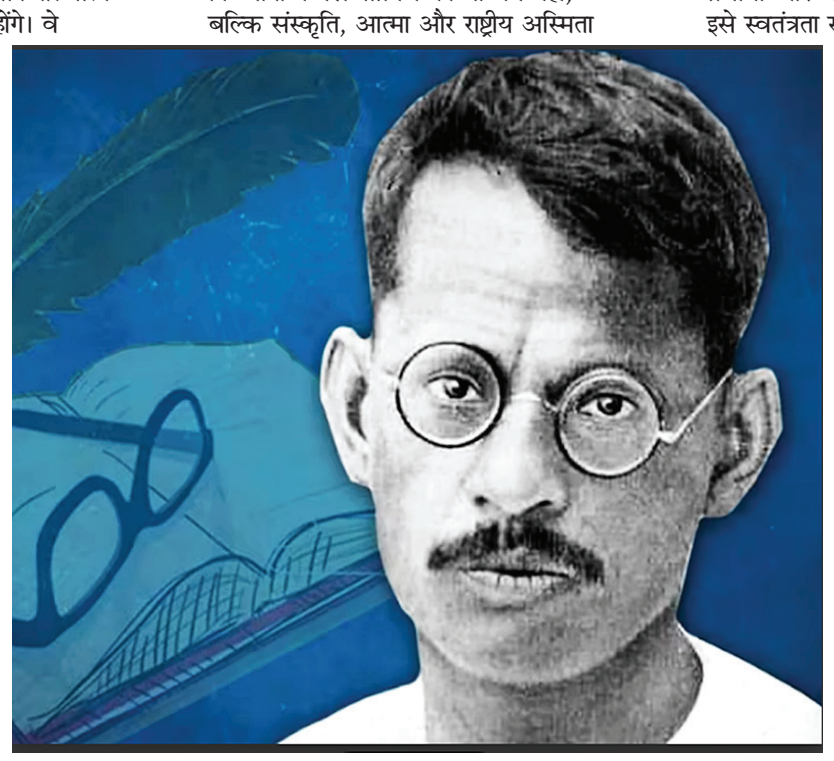

उन्होंने लिखा कि यदि उन्हें देश की स्वतंत्रता और भाषा की स्वतंत्रता में से किसी एक को चुनना पड़े, तो वे भाषा की स्वतंत्रता को प्राथमिकता देंगे। उनका तर्क था कि भाषा की स्वतंत्रता से ही देश की वास्तविक स्वतंत्रता संभव है, क्योंकि पराधीन भाषा व्यक्ति की मौलिकता और आत्मबल को कमजोर कर देती है। विद्यार्थी ने हिंदी को जटिल साहित्यिकता से मुक्त कर जनभाषा बनाया। उनकी भाषा सरल, प्रभावी और जनमानस से जुड़ी हुई थी। उन्होंने इसे स्वतंत्रता संग्राम, सामाजिक चेतना और जन जागरण का माध्यम बनाया। उनके लेखों में विद्रोह की चेतना, संवेदना और परिवर्तन की आकांक्षा स्पष्ट झलकती है। उन्होंने साहित्य के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया। विक्टर ह्यूगो के प्रसिद्ध उपन्यास 'नाइंटी थ्री' का हिंदी अनुवाद 'बलिदान' नाम से किया और शेखचिल्ली की कहानियाँ लिखीं। वे विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में सक्रिय रहे और हिंदी साहित्य सम्मेलनों में भाग लेते रहे।

1924 में कानपुर कांग्रेस अधिवेशन में उनके प्रेरणा से श्यामलाल गुप्त पार्षद द्वारा रचित झंडा गीत 'विजयी विश्व तिरंगा प्यारा' का सामूहिक गायन हुआ, जो आज भी देशभक्ति का प्रतीक है। विद्यार्थी का जीवन केवल लेखन तक सीमित नहीं था; वे समाज में सक्रिय हस्तक्षेप करने वाले कर्मयोगी थे। 1931 में जब कानपुर में सांप्रदायिक दंगे भड़के, तो वे स्वयं लोगों की जान बचाने के लिए मैदान में उतर गए। वे हिंदू-मुस्लिम एकता के प्रबल समर्थक थे और मानते थे कि यही भारत की आत्मा है। दंगों के दौरान वे पीड़ितों को सुरक्षित स्थान पर पहुंचाने का प्रयास कर रहे थे, तभी उन्मादी भीड़ ने उनकी हत्या कर दी। दो दिन बाद उनका शव लाशों के ढेर में मिला। यह घटना न केवल एक महान पत्रकार की मृत्यु थी, बल्कि मानवीय मूल्यों और सांप्रदायिक सद्भाव के लिए दिए गए सर्वोच्च बलिदान का प्रतीक भी थी। उनका जीवन इस बात का उदाहरण है कि सच्ची पत्रकारिता केवल खबरें देने का काम नहीं करती, बल्कि समाज को दिशा देती है, अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाती है और मानवता की रक्षा करती है। उन्होंने धर्म और धार्मिक आडंबर के अंतर को स्पष्ट करते हुए कहा कि धर्म ज्ञान और नैतिकता का मार्ग दिखाता है, जबकि आडंबर अज्ञान और विभाजन को बढ़ावा देता है।

आज के दौर में जब मीडिया पर बाजारवाद और प्रतिस्पर्धा का दबाव बढ़ता जा रहा है, पत्रकारिता का स्वरूप बदल रहा है। समाचार पत्र और मीडिया संस्थान उत्पाद के रूप में प्रस्तुत किए जा रहे हैं। ऐसे समय में गणेश शंकर विद्यार्थी के आदर्श और सिद्धांत अत्यंत प्रासंगिक हो जाते हैं। आवश्यकता इस बात की है कि पत्रकारिता को पुनः जनसेवा और सत्य के मार्ग पर स्थापित किया जाए। विद्यार्थी की निर्भीकता, निष्पक्षता और राष्ट्रप्रेम से प्रेरणा लेकर ही पत्रकारिता को उसके वास्तविक स्वरूप में लौटाया जा सकता है। उनकी विचारधारा आज भी भारतीय पत्रकारिता के लिए प्रकाश स्तंभ है। गणेश शंकर विद्यार्थी का जीवन हमें यह सिखाता है कि सच्चाई और न्याय के लिए संघर्ष कभी व्यर्थ नहीं जाता। उनकी शहादत हमें यह संदेश देती है कि कलम की ताकत तलवार से कम नहीं होती, बशर्ते उसमें सत्य, साहस और जनहित की भावना हो।

जन्मदिवस पर विशेष

अनूप पौराणिक

लेखक पत्रकार हैं।

डॉ. मोहन यादव: संघर्ष, अध्ययन और संस्कारों से गढ़ा नेतृत्व

राजनीतिक जीवन में संघर्ष भी उनके साथ-साथ चला। वर्ष 2003 में भारतीय जनता पार्टी द्वारा बड़नगर विधानसभा से टिकट मिलने के बाद परिस्थितियोंवश उसे लौटाना उनके जीवन का एक कठिन निर्णय था। लेकिन इस चुनौती ने उन्हें कमजोर नहीं किया, बल्कि उनके धैर्य और निष्ठा को और मजबूत किया। उन्होंने प्रतीक्षा को अपनी शक्ति बनाया और संगठन के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को बनाए रखा। यह प्रसंग उनके व्यक्तित्व की गहराई और परिपक्वता को दर्शाता है। प्रशासनिक अनुभव के क्षेत्र में भी उन्होंने उल्लेखनीय कार्य किया। उज्जैन विकास प्राधिकरण के अध्यक्ष के रूप में उन्होंने नगर विकास और अधोसंरचना को नई दिशा दी। उनके कार्यकाल में विकास योजनाओं को इस प्रकार लागू किया गया कि शहर की सांस्कृतिक और धार्मिक पहचान सुरक्षित बनी रहे। यह संतुलन उनके नेतृत्व की विशेषता है—जहाँ विकास और विरासत साथ-साथ चलते हैं।

मध्यप्रदेश की राजनीति में कुछ व्यक्तित्व ऐसे होते हैं, जो केवल पद प्राप्त नहीं करते, बल्कि अपने विचार, व्यवहार और कार्यशैली से नेतृत्व की नई परिभाषा गढ़ते हैं। डॉ. मोहन यादव ऐसे ही नेताओं में शामिल हैं, जिनका जीवन संघर्ष, अध्ययन, संगठन और संस्कारों के संतुलन का सशक्त उदाहरण है। 25 मार्च 1965 को उज्जैन में जन्मे डॉ. यादव का प्रारंभिक जीवन सादगी और अनुशासन से परिपूर्ण रहा। धार्मिक और सांस्कृतिक चेतना से समृद्ध उज्जैन की भूमि ने उनके व्यक्तित्व को गहराई और संतुलन प्रदान किया, जहाँ परंपरा और आधुनिकता का सुंदर समन्वय देखने को मिलता है।

उनकी शैक्षिक यात्रा उनके नेतृत्व की सबसे बड़ी आधारशिला रही है। विज्ञान, प्रबंधन (एमबीए), विधि और राजनीतिक शास्त्र में पीएचडी जैसी विविध शिक्षा ने उन्हें व्यापक दृष्टिकोण प्रदान किया। उनके लिए शिक्षा केवल डिग्री प्राप्त करने का माध्यम नहीं, बल्कि समाज और शासन को समझने का उपकरण रही। यही कारण है कि उनके निर्णयों में संवेदनशीलता के साथ-साथ तर्क, तथ्य और दूरदृष्टि का संतुलन दिखाई देता है।

डॉ. मोहन यादव का सार्वजनिक जीवन छात्र राजनीति से शुरू हुआ। माधव विज्ञान महाविद्यालय में छात्रसंघ के पदों पर रहते हुए उन्होंने नेतृत्व की प्रारंभिक झलक प्रस्तुत की। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद में सक्रिय भूमिका निभाते हुए उन्होंने संगठन, अनुशासन और सामूहिक निर्णय की प्रक्रिया को निकट से समझा। नगर स्तर से लेकर राष्ट्रीय स्तर तक की जिम्मेदारियों ने उन्हें एक सशक्त संगठनकर्ता के रूप में स्थापित किया। यही अनुभव उनके राजनीतिक जीवन की मजबूत नींव बना।

राजनीतिक जीवन में संघर्ष भी उनके साथ-साथ चला। वर्ष 2003 में भारतीय जनता पार्टी द्वारा बड़नगर विधानसभा से टिकट मिलने के बाद परिस्थितियोंवश उसे लौटाना उनके जीवन का एक कठिन निर्णय था। लेकिन इस चुनौती ने उन्हें कमजोर नहीं किया, बल्कि उनके धैर्य और निष्ठा को और मजबूत किया। उन्होंने प्रतीक्षा को अपनी शक्ति बनाया और संगठन के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को बनाए रखा। यह प्रसंग उनके व्यक्तित्व की गहराई और परिपक्वता को दर्शाता है।

प्रशासनिक अनुभव के क्षेत्र में भी उन्होंने उल्लेखनीय कार्य किया। उज्जैन विकास प्राधिकरण के अध्यक्ष के रूप में उन्होंने नगर विकास और अधोसंरचना को नई दिशा दी। उनके कार्यकाल में विकास योजनाओं को इस प्रकार लागू

किया गया कि शहर की सांस्कृतिक और धार्मिक पहचान सुरक्षित बनी रहे। यह संतुलन उनके नेतृत्व की विशेषता है—जहाँ विकास और विरासत साथ-साथ चलते हैं।

मध्यप्रदेश राज्य पर्यटन विकास निगम के अध्यक्ष के रूप में उन्होंने पर्यटन को आर्थिक और सांस्कृतिक सशक्तिकरण का माध्यम बनाया। उनके नेतृत्व में प्रदेश को लगातार दो वर्षों तक राष्ट्रीय स्तर पर सम्मान प्राप्त हुआ। यह उपलब्धि उनके दूरदर्शी दृष्टिकोण और प्रशासनिक क्षमता का प्रमाण है।

विधायक के रूप में लगातार तीन बार जनता का विश्वास जीतना उनकी जनसंपर्क क्षमता और लोकप्रियता को दर्शाता है। वे संवाद आधारित राजनीति में विश्वास रखते हैं, जहाँ जनता के साथ सीधा जुड़ाव प्राथमिकता होता है। उच्च शिक्षा मंत्री के रूप में उनका कार्यकाल विशेष रूप से उल्लेखनीय रहा, जब मध्यप्रदेश ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 को प्रभावी रूप से लागू करने में अग्रणी भूमिका निभाई। नए महाविद्यालयों की स्थापना, कौशल आधारित शिक्षा और पाठ्यक्रमों के आधुनिकीकरण ने शिक्षा को रोजगार और नवाचार से जोड़ा।

डॉ. मोहन यादव केवल राजनीति तक सीमित नहीं रहे, बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक और खेल गतिविधियों में भी सक्रिय रहे हैं। विभिन्न संगठनों में उनकी भूमिका ने युवाओं को प्रेरित करने का कार्य किया। उज्जैन की सांस्कृतिक पहचान को वैश्विक स्तर पर स्थापित करने के लिए उन्होंने कई महत्वपूर्ण पहलें कीं, जिनमें विक्रमादित्य परंपरा का पुनर्स्थापन और सांस्कृतिक आयोजनों का विस्तार शामिल है। 13 दिसंबर 2023 को मुख्यमंत्री पद की शपथ ग्रहण करना उनके लंबे राजनीतिक और सामाजिक साधना का परिणाम था। यह उपलब्धि केवल व्यक्तिगत सफलता नहीं, बल्कि उनके निरंतर परिश्रम, संगठन निष्ठा और जनविश्वास का प्रतीक है।

उनकी जीवन यात्रा यह स्पष्ट करती है कि नेतृत्व कोई संयोग नहीं होता, बल्कि यह निरंतर प्रयास, धैर्य और आत्मसंयम से विकसित होता है। डॉ. मोहन यादव का नेतृत्व इस बात का उदाहरण है कि जब व्यक्ति अपने मूल्यों, शिक्षा और संगठन के प्रति समर्पित रहता है, तो वह न केवल सफलता प्राप्त करता है, बल्कि समाज के लिए प्रेरणा भी बनता है।

विचार

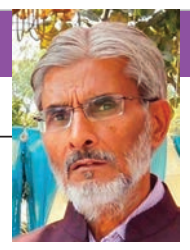

गौरव अवस्थी

लेखक समाजसेवी हैं।

भगत सिंह का भाषाई दृष्टिकोण और हिन्दी का महत्व

क्रांतिवीर शहीद ए आज़म भगत सिंह की भाषाई और साहित्यिक समझ अद्भुत थी। उनकी नजर में भी हिन्दी का राष्ट्रीय महत्व था। इसी से हिन्दी के प्रति उनका प्रेम अटूट था। मातृभाषा पंजाबी होते हुए भी अध्यवसायी भगत सिंह ने गणेश शंकर विद्यार्थी के क्रांतिकारी हिन्दी अखबार 'प्रताप' का प्रताप बढ़ाया। इस संदर्भ में उनका 'पंजाब की भाषा तथा लिपि विषयक समस्या' विषय पर लिखा एक लेख पढ़ा जाना जरूरी है। भगत सिंह ने यह लेख मात्र 15-16 वर्ष की उम्र में 1922-23 में पंजाबी हिंदी साहित्य सम्मेलन आयोजित एक निबंध प्रतियोगिता के संदर्भ में लिखा था। सम्मेलन ने सर्वश्रेष्ठ लेख पर रू. 50 पुरस्कार देने की घोषणा की थी। उनकी शहादत के 2 वर्ष बाद उनका यह लेख 28 फरवरी 1933 को 'हिंदी संदेश' में प्रकाशित हुआ। इस लेख में वह लिखते हैं-'जिस देश के साहित्य का प्रवाह जिस ओर बहा, ठीक उसी ओर वह देश भी अग्रसर होता रहा। किसी भी जाति के उत्थान के लिए ऊंचे साहित्य की आवश्यकता हुआ ही करती है।'

उनका मत है- 'शायद गैरीबाल्डी को इतनी जल्दी सेनाएं न मिल पातीं यदि मेजनी ने 30 वर्ष देश में साहित्य और साहित्यिक जागृति पैदा करने में ही न लगा दिए होते। आयरलैंड के पुनरुत्थान के साथ गैलिक भाषा के पुनरुत्थान का प्रयत्न भी इसी वेग से किया गया। शासक लोग आयरिश लोगों को दबाए रखने के लिए उनकी भाषा का दमन करना इतना आवश्यक समझते थे कि गैलिक भाषा की एक-आध कविता रखने के कारण छोटे-छोटे बच्चों तक को दंडित किया जाता था। रूसो, वॉल्तेयर के साहित्य के बिना फ्रांस की राज्य क्रांति घटित न हो पाती। यदि टॉलेस्टाय, कार्ल मार्क्स तथा मैक्सिम गोर्क इत्यादि ने नवीन साहित्य पैदा करने में वर्षों व्यतीत न कर दिए होते तो रूस की क्रांति न हो पाती। साम्यवाद का प्रचार तथा व्यवहार तो दूर रहा।'

भारत को एक राष्ट्र बनाने का स्वप्न देखने वाले भगत सिंह का स्पष्ट मत था कि इसके लिए एक भाषा होनी जरूरी है। वह मानते थे कि भाषा आदि के प्रश्नों को मार्मिक समस्या न बनाकर खूब विशाल दृष्टिकोण से देखा जाना चाहिए। वह लिखते हैं-'हमारे सामने इस समय सबसे मुख्य प्रश्न भारत को एक राष्ट्र बनाना है। एक राष्ट्र बनाने के लिए एक भाषा होना आवश्यक है परंतु यह एकदम नहीं हो सकता। उसके लिए कदम-कदम चलना पड़ता है। यदि हम अभी भारत की एक भाषा नहीं बना सकते तो कम से कम लिपि तो एक बना ही देनी चाहिए। उर्दू लिपि तो सर्वांग संपूर्ण नहीं

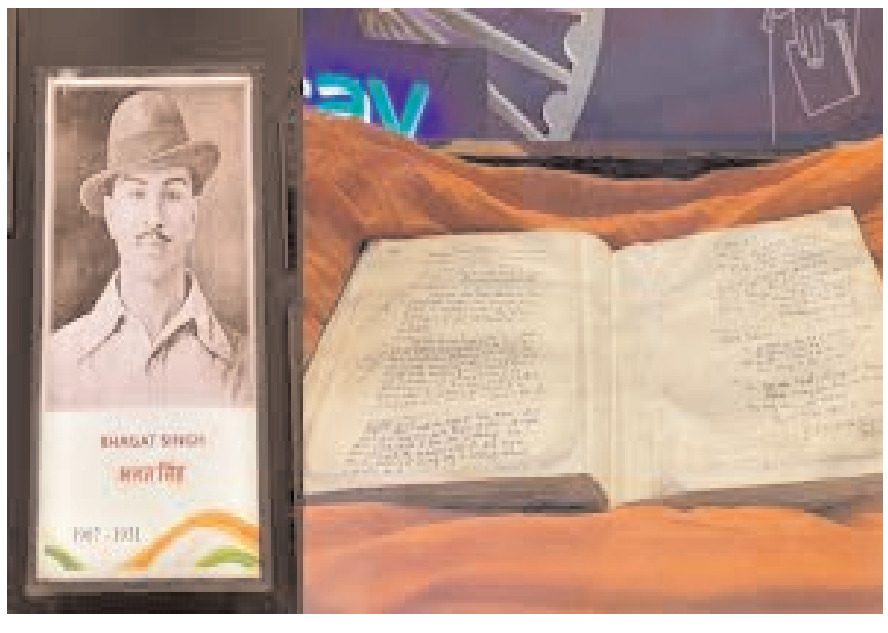

कहला सकती।' उर्दू के एक अनुवाद का उदाहरण देते हुए उन्होने हिन्दी के महत्व को समझाने की कोशिश इस तरह की-'अभी उस दिन श्री लाला हरदयाल की उर्दू पुस्तक (कौमें किस तरह जिंदा रह सकती हैं?) का अनुवाद करते हुए सरकारी अनुवादक ने ऋषि नचिकेता को उर्दू में लिखा होने से 'नीची कुतिया' समझकर 'ए बिच आफ लो ओरिजन' अनुवाद किया था। इसमें न तो लाला हरदयाल जी का अपराध था न अनुवादक महोदय का। इसमें कसूर था उर्दू लिपि का और उर्दू भाषा की हिंदी भाषा तथा साहित्य से विभिन्नता का।'

वह लिखते हैं-'समस्त देश में एक भाषा एक लिपि एक साहित्य एक आदर्श और एक राष्ट्र बनाना पड़ेगा परंतु समस्त एकता से पहले एक भाषा का होना जरूरी है। ताकि हम एक दूसरे को भली-भांति समझ सकें। एक पंजाबी और एक मद्रासी इकट्ठे बैठकर केवल एक दूसरे का मुंह ही ना ताका करें बल्कि एक दूसरे के विचार तथा भाव जानने का प्रयत्न करें परंतु यह पराई भाषा अंग्रेजी में नहीं बल्कि हिंदुस्तान की अपनी भाषा हिंदी में। यह आदर्श भी पूरा होते-होते अभी कई वर्ष लगेंगे। उसके लिए हमें सबसे पहले साहित्यिक जागृति पैदा करनी चाहिए। केवल गिनती के कुछ एक व्यक्तियों में नहीं बल्कि सर्वसाधारण में।'

पंजाब में जन्मे भगत सिंह हिन्दी के महत्व को इतनी कम उम्र में ही समझ गए थे। तभी उन्होने अपने उस लेख में साफ-साफ लिखा-'गुरुमुखी लिपि में लिखी जाने वाली मध्य पंजाब की बोलचाल की भाषा को ही इस समय पंजाबी कहा जाता है। वह न तो अभी तक विशेष रूप से प्रचलित ही हो पाई है और न ही साहित्यिक तथा वैज्ञानिक ही बन पाई है। उसकी ओर पहले तो किसी ने ध्यान ही नहीं दिया परंतु अब जो सज्जन उस ओर ध्यान भी दे रहे हैं तो उन्हें लिपि की अपूर्णता बेतरह अखरती है। संयुक्त अक्षरों के अभाव के चलते पंजाबी में पूर्ण शब्द भी नहीं लिखा जा सकता। यह लिपि तो उर्दू से भी अधिक अपूर्ण है। हमारे सामने वैज्ञानिक सिद्धांतों पर निर्भर सर्वांगसंपूर्ण हिंदी लिपि विद्यमान है। फिर उसे अपनाने में हिचक क्या?' हिंदी के पक्षपतियों को वो सचेत करते हुए लिखते हैं-'निश्चय ही हिंदी भाषा ही अंत में समस्त भारत की एक भाषा बनेगी परंतु पहले से ही उसका प्रचार करने से बहुत सुविधा होगी।'

क्रांति की ज्वाला में भगत सिंह की भाषाई समझ और और हिन्दी का महत्व झुलसकर रह गया। जिस तरह उनका आजाद भारत का सपना अधूरा है, उसी तरह हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में देखने की ललक भी।

(नोटः भगत सिंह के छोटे भाई कुलतर सिंह जी की सुपुत्री सुश्री वीरेंद्र सिंधु ने द्वारा लिखी गई पुस्तक 'सरदार भगत सिंह पत्र और दस्तावेज' में यह लेख संकलित है और उसी से साभार लिया गया है।)

जिले में पर्याप्त उर्वरक उपलब्ध

बैतूल। जिले में वर्तमान समय में यूरिया-17422 मीट्रिक टन, डीएपी-3044 मेट्रिक टन, सुपर फास्फेट-5922 मेट्रिक टन, पोटाश-1462 मेट्रिक टन एवं एनपीके-5572 मीट्रिक टन कुल-33422 मीट्रिक टन खाद उपलब्ध है। कृषि उप संचालक डॉ. आनंद बडोनिया ने बताया कि किसान कल्याण वर्ष में किसानों की सुविधा के लिए ई-टोकन सिस्टम प्रारम्भ किया जा चुका है। अब किसान घर बैठे एमपी कृषि पोर्टल के जरिए ऑनलाइन ई-टोकन जनरेट कर उर्वरक अपने निकट के निजी उर्वरक विक्रेता या संबंधित सहकारी संस्था से प्राप्त कर रहे है। इससे किसान को कतार में लगने व अनुचित उर्वरक दर से मुक्ति मिल गई है। ई-विकास के माध्यम से उन किसानों को भी उर्वरक दिया जा सकता है जिनके पास फार्मर आईडी नहीं है। हालांकि ऐसे मामलों में संबंधित तहसीलदार को एक संदेश भेजा जाता है, ताकि वे उन किसानों का फार्मर आईडी साथ ही बनवा लें और अगली बार से उन्हें फार्मर आईडी से बची हुई उर्वरक दी जाए। इसलिए ई-विकास में किसी भी प्रकार की कोई समस्या नहीं है। इसी प्रकार, मृत किसानों /सिकमी / पट्टा / संयुक्त स्वामित्व / विदेश / शहर में रहने वाले संयुक्त खाते के किसानों /लोगों आदि सभी संभावित प्रकार के मामलों में भी ई-विकास प्रणाली में कृषकों को आसानी से खाद मिलना सुनिश्चित किया गया है। किसान उर्वरक पर्याप्तता के दृष्टिगत जरूरत अनुरूप ही खाद का उठाव करें।

सर्वाइकल कैंसर से बचाव के लिए 6414 बालिकाओं का किया टीकाकरण

बैतूल। सर्वाइकल कैंसर से बचाव के लिए 23 मार्च 2026 तक बैतूल शहरी क्षेत्र में 206 बालिकाओं को टीकाकरण किया गया। साथ ही सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र आठनेर में 435 सेहरा में 851, भैंसदेही में 223, भीमपुर 794, चिचोली में 489, घोडाडोगरी में 1043, प्रभात पटटन में 360, आमला में 1055, मुलताई में 542, शाहपुर में 416 इस प्रकार जिले में कुल 6414 बालिकाओं को एचपीवी टीकाकरण किया गया। प्रभारी मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. रंजीत राठौर ने बताया कि सर्वाइकल कैंसर ह्यूमन पैपिलोमा वायरस एचपीवी से होता है। एचपीवी टीका एक सुरक्षित और प्रभावी टीका है जो कैंसर से बचाने में मदद करता है। यह टीका जिला चिकित्सालय बैतूल एवं सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र में निःशुल्क लगाया जा रहा है। समस्त अभिभावकों से अपील की है कि ऐसी बालिकाऐं जिनकी आयु 14 वर्ष तथा 15 वर्ष 3 माह तक की है वे अपनी बालिकाओं को एचपीवी टीकाकरण अवश्य कराएं एवं बेटियों का भविष्य सुरक्षित बनायें।

भवानी घाट पर जल गंगा संवर्धन अभियान के तहत श्रमदान, जल चौपाल एवं शपथ कार्यक्रम आयोजित

बैतूल। जल संरक्षण के प्रति जनजागरूकता बढ़ाने के उद्देश्य से जल गंगा संवर्धन अभियान के प्रथम चरण के अंतर्गत सपना नदी के भवानी घाट पर मध्यप्रदेश जन अभियान परिषद की नगर विकास प्रस्फुटन समिति बैतूल बाजार एवं अन्य सामाजिक संस्थाओं के प्रतिनिधियों द्वारा सांकेतिक श्रमदान किया गया। इस अवसर पर उपस्थित जनसमूह ने नदी घाट पर जल चौपाल आयोजित कर मानव श्रृंखला बनाते हुए जल संरक्षण की शपथ ली तथा जल स्रोतों के संरक्षण और संवर्धन का संकल्प लिया। कार्यक्रम का नेतृत्व मालवीय वार्ड की पार्षद पूजा भूपेंद्र पवार एवं भवानी वार्ड की पार्षद पूनम परिहार ने किया। श्रमदान कार्यक्रम में पर्यावरण संरक्षण गतिविधि अमोल

पानकर, गोल्डी पवार, वरिष्ठ समाजसेवी जवाहर शुक्ला, अनूप वर्मा, विक्की राठौर, पंकज लोणारे, सुनील परिहार, निर्भय काले, संजय पंडाग्रे, गजेंद्र पवार सहित नवांकुर संस्था प्रदीपन से रेखा गुजरे, परामर्शदाता सुनील पवार, आशीष कोकने, मीनाक्षी मालवी (एमएसडब्ल्यू), भावना पत्रिकर (बीएसडब्ल्यू), नीलम कवड़े एवं दीपा रावंधे, रश्मिवाला नामदेव, नगर परिषद बैतूल बाजार से रमेशचंद्र पवार, विशाल कारोचिया, विनोद चौहान, रोशन कुरेले, श्रीकांत कुमार सहित अनेक गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे। कार्यक्रम के दौरान जिला समन्वयक प्रिया चौधरी के मार्गदर्शन में दो दिवसीय सामूहिक श्रमदान की कार्ययोजना भी तैयार की गई।

जिले में 23 हजार 245 बच्चों को विद्यारंभ प्रमाण पत्र किए प्रदान

बैतूल। महिला एवं बाल विकास मंत्रालय भारत सरकार के निर्देशानुसार जिले के आंगनवाड़ी केंद्रों में पंजीकृत 5 से 6 वर्ष के बच्चों के लिए विद्यारंभ प्रमाण पत्र वितरण कार्यक्रम आयोजित किए गए। कार्यक्रम का उद्देश्य बच्चों को सहज रूप से प्राथमिक शालाओं में स्थानांतरण करना एवं प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा को सुदृढ़ बनाना रहा। महिला एवं बाल विकास विभाग जिला कार्यक्रम अधिकारी गौतम अधिकारी ने बताया कि जिले की 12 परियोजनाओं के 90 सेक्टरों एवं 2348 आंगनवाड़ी केंद्रों में आयोजित इस कार्यक्रम में जनप्रतिनिधियों और अभिभावकों की उपस्थिति में बच्चों को प्रमाण पत्र वितरित किए गए। महिला एवं बाल विकास परियोजना अधिकारियों एवं सेक्टर पर्यवेक्षकों ने कार्यक्रम की रूपरेखा एवं महत्व की जानकारी दी। ग्रेजुएशन सेरेमनी के रूप में आयोजित इस कार्यक्रम के तहत बैतूल जिले में कुल 23 हजार 245 बच्चों को विद्यारंभ प्रमाण पत्र प्रदान किए गए। कार्यक्रम में जिला पंचायत सदस्य, नपा उपाध्यक्ष महेश राठौर, जनपद उपाध्यक्ष प्रेमलता कास्दे, जनपद सदस्य धन्नू उईके, सुमरति कवड़े सहित वार्ड पार्षद, सरपंच, उप सरपंच, शिक्षकगण एवं गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

भाजपा किसान मोर्चा का सेवा सप्ताह प्रारंभ

किसानों को मिलेगा कृषि उपज मंडी बडोरा में शीतल पेयजल

बैतूल। भारतीय जनता पार्टी किसान मोर्चा के प्रदेश नेतृत्व के निर्देशानुसार भाजपा किसान मोर्चा ने सेवा सप्ताह का शुभारंभ कृषि उपज मंडी समिति बडोरा में जिला पंचायत उपाध्यक्ष हंसराज धुर्वे के हस्ते किसानो के लिए प्याउ की व्यवस्था कर किया। इस अवसर पर किसान मोर्चा के जिलाध्यक्ष महेश्वर सिंह चंदेल ने कहा कि हमारी मध्यप्रदेश की

डा.मोहन यादव के नेतृत्व वाली सरकार इस वर्ष को किसानो को समर्पित कर किसान कल्याण वर्ष के रूप में मना रही है। वहीं किसान मोर्चा किसानो की सेवा के उददेश्य को लेकर सेवा सप्ताह मना रहा है। इसके निमित्त मोर्चा द्वारा सप्ताह भर विभिन्न सेवा कार्य किए जाएगें। जिसमें 25 मार्च को उन्नतशील किसानो का सम्मान समारोह आयोजित किया जाएगा, 26 मार्च को किसानो के लिए स्वास्थ्य शिविर का आयोजन कृषि उपज मंडी परिसर बडोरा में किया जाएगा, 27 मार्च को सुन्दरकाण्ड का आयोजन किया जाएगा एवं 28 मार्च को वृहद स्तर पर स्वच्छता अभियान चलाकर उससे जुडी गतिविधियों का आयोजन किया जाएगा। किसान सेवा सप्ताह के शुभारंभ अवसर पर किसान मोर्चा के जिले सभी पदाधिकारियों से कार्यक्रम को सफल बनाने की अपील की है।

कक्षा पांचवीं के छात्रों ने देखे मौसम मापने के आधुनिक यंत्र

सतपुड़ा वैली पब्लिक स्कूल के छात्रों ने किया कृषि अनुसंधान केंद्र बैतूलबाजार का भ्रमण

बैतूल। विश्व मौसम विज्ञान दिवस के अवसर पर सतपुड़ा वैली पब्लिक स्कूल के छाओं ने कृषि अनुसंधान केंद्र बैतूलबाजार का शैक्षणिक भ्रमण किया, जहां उन्हें कृषि और मौसम विज्ञान से जुड़ी महत्वपूर्ण जानकारियां प्रायोगिक रूप से दी गईं। कक्षा पांचवीं के विद्यार्थियों ने केंद्र में पहुंचकर मौसम और जलवायु को मापने की पूरी प्रक्रिया को करीब से देखा और वैज्ञानिक संजय जैन से सीधे बातचीत कर जानकारी प्राप्त की। भ्रमण के दौरान छात्रों को बताया गया कि मौसम का पता कैसे लगाया जाता है, कौन-कौन से यंत्र उपयोग में लिए जाते हैं और मौसम पूर्वानुमान किस आधार पर तैयार किया जाता है। वैज्ञानिक संजय जैन ने विद्यार्थियों को थर्मामीटर से तापमान मापने की प्रक्रिया, बैरोमीटर से वायुमंडलीय दबाव मापने, हाइग्रोमीटर से

आर्द्रता जानने, एनिमोमीटर से हवा की गति मापने, रेन गेज से वर्षा की मात्रा दर्ज करने, पाइरोमीटर से सौर विकिरण मापने और डॉपलर रेडार के माध्यम से मौसम पूर्वानुमान और तूफान की चेतावनी देने की पूरी जानकारी विस्तार से दी।

स्कूल डायरेक्टर दीपाली निलय डागा ने बताया कि इस भ्रमण का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों को कृषि और मौसम विज्ञान से जुड़ा प्रैक्टिकल ज्ञान देना था, ताकि बच्चे भविष्य में इन क्षेत्रों में अपना करियर बनाने के लिए प्रेरित हो सकें। वहीं स्कूल प्राचार्य डॉ. ऋतु बाजपाई ने बताया कि स्कूल की शैक्षणिक गतिविधियों के तहत विश्व मौसम विज्ञान दिवस और जलवायु परिवर्तन से जुड़ी जागरूकता बढ़ाने के उद्देश्य से यह भ्रमण कराया गया।

भ्रमण के दौरान विद्यार्थियों को मौसम और जलवायु के महत्व को समझाया गया, पर्यावरण संरक्षण की आवश्यकता पर जोर दिया गया, जलवायु परिवर्तन के प्रभावों के बारे में बताया गया तथा मौसम पूर्वानुमान और चेतावनी प्रणाली की उपयोगिता से भी अवगत कराया गया। बच्चों ने कृषि अनुसंधान केंद्र में विभिन्न कृषि यंत्रों का भी अवलोकन किया और प्रकृति के साथ संतुलन बनाए रखने की आवश्यकता को समझा।

स्कूल प्रबंधन ने बताया कि इस तरह के शैक्षणिक भ्रमण से विद्यार्थियों को किताबों के ज्ञान के साथ-साथ प्रैक्टिकल अनुभव भी मिलता है, जो उनके व्यक्तित्व विकास और भविष्य की दिशा तय करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

विश्व क्षय दिवस पर टीबी मुक्त भारत 100 दिवसीय अभियान का किया शुभारंभ

बैतूल। जिला चिकित्सालय में 24 मार्च 2026 को विश्व क्षय दिवस मनाया गया। प्रभारी मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ रंजीत राठौर सर्जीकल विशेषज्ञ ने बताया कि मंगलवार से टीबी मुक्त भारत 100 दिवसीय अभियान का शुभारंभ किया गया। इस अभियान के अंतर्गत घनी आबादी, झुग्गी झोपडियों, निर्माण स्थल, परिवहन केन्द्र, औदयोगिक क्षेत्र एवं प्रवासी श्रमिक समूह, बेघर आश्रय स्थल आदि स्थलों पर टीबी स्क्रीनिंग की जाएगी। उन्होंने बताया कि हमें प्रारंभिक अवस्था में ही टीबी के मरीज को खोजना है, ताकि मरीज को आसानी से ठीक किया जा सके। उन्होंने कहा कि यदि टीबी का मरीज बीच में ही दवाई खाना छोड देता है, हमे उसे पूरी दवाई खाने के लिए प्रेरित करना होगा। नोडल अधिकारी क्षय रोग उन्मूलन कार्यक्रम डॉ श्रेयस ठाकुर ने बताया कि टीबी मुक्त भारत अभियान 100 दिवसीय अभियान में टीबी स्क्रीनिंग के साथ-साथ रक्त, शुगर के साथ अन्य जांच भी की जाएगी, टीबी को खत्म करना संभव है, संदिग्ध मरीज की समय पर जांच हो। जिले में अभी तक 222 पंचायत को टीबी मुक्त पंचायत किया है, हमारा लक्ष्य है कि हम जिले की

सभी पंचायतों को टीबी मुक्त बनायेंगे। अभियान अंतर्गत जनजागरूकता, अभियान चलाकर टीबी के लक्षणों, उपचार की जानकारी, निक्षय पोषण योजना, फूड बास्केट की जानकारी, ग्राम पंचायत, आशा कार्यकर्ता, स्व सहायता समूह के माध्यम से सामुदायिक बैठकों का आयोजन कर समुदाय तक पहुंचायेंगे, ताकि शत प्रतिशत लोगों की टीबी स्क्रीन की जा सके। इस वर्ष की थीम टीबी को खत्म कर सकते हैं, जन भागीदारी के सहयोग से है। डीपीएम डॉ विनोद शाक्य ने कहा कि हम सीएचओ, आशा कार्यकर्ताओं के माध्यम से क्षेत्र में टीबी के प्रति समुदाय को जागरूक करें, ताकि वे स्वयं टीबी की जांच के लिए आगे आयें एवं प्रारंभिक अवस्था में ही उसका उपचार प्रारंभ किया जा सके। टीबी मरीजों को फूड बास्केट प्रदान करने के लिए लोगों को प्रेरित करें। कार्यक्रम में आईसीटीसी प्रभारी डॉ छत्रपाल सिंह पंवार, सीपीएचसी सलाहकार रेजिना जेम्स, आरबीएसके मैनेजर योगेन्द्र कुमार, प्रभारी परिवार कल्याण भगत सिंह उइके, डीपीसी अजय नागले, टीबी कार्यालय स्टाफ, लक्ष्यगत हस्तगत परियोजना से निर्देश मदरेले एवं सदस्य, विकासखंड के एसटीएलएस एवं एसटीएस आदि मौजूद रहे।

जनसुनवाई में प्राप्त आवेदनों का तत्परता से करें निराकरण : कलेक्टर

बैतूल। बैतूल कलेक्टर नरेन्द्र कुमार सूर्यवंशी ने मंगलवार को कलेक्ट्रेट सभा कक्ष में प्रातः 11 बजे से आयोजित जनसुनवाई में नागरिकों की समस्याएं सुनीं। जनसुनवाई के दौरान राजस्व, भूमि विवाद, पेंशन, आवास, बिजली, पानी सहित अन्य विभागों से जुड़ी शिकायतें प्राप्त हुई। इस दौरान कलेक्टर श्री सूर्यवंशी ने कई प्रकरणों में संबंधित अधिकारियों से चर्चा कर मौके पर ही निराकरण कराया, वहीं शेष मामलों में समय-सीमा तय करते हुए अधिकारियों को शीघ्र समाधान के निर्देश दिए। जनसुनवाई में भीमपुर निवासी आशुतोष मालवीय ने कृषि भूमि पर अवैध कब्जा के संबंध में शिकायत आवेदन के माध्यम से की। आवेदक की समस्या को ध्यान पूर्वक सुन कलेक्टर ने भीमपुर तहसीलदार को आवेदक की समस्या के निराकरण के निर्देश दिए। जनसुनवाई में 120 आवेदन प्राप्त हुए। इस अवसर पर मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत श्री अक्षत जैन ने भी नागरिकों की समस्याएं सुनी। जनसुनवाई में सभी विभागीय अधिकारी, कर्मचारी उपस्थित रहे। जनसुनवाई में मुलताई निवासी संतोष बारंगे ने बीपीएल कार्ड बनाए जाने के लिए आवेदन दिया, जिस पर कलेक्टर ने संबंधित अधिकारी को आवेदक की समस्या के निराकरण के निर्देश दिए। हमलापुर निवासी बलवंत पवार की जमीन की खसरा संबंधि शिकायत पर कलेक्टर ने बैतूल तहसीलदार को तत्काल प्रकरण के निराकरण के निर्देश दिए। बडोरा भीमनगर निवासी पुष्पा रावत ने धोखाधड़ी की शिकायत करते हुए कृषि भूमि वापस दिलाने के लिए आवेदन दिया। जिस पर कलेक्टर ने संबंधित एसडीओ को प्रकरण की जांच कर निराकरण के निर्देश दिए।

बाल मंदिर सभाकक्ष में विद्यारंभ प्रमाण पत्र एवं ग्रेजुएशन सेरेमनी कार्यक्रम आयोजित

बैतूल। महिला एवं बाल विकास विभाग के तत्वावधान में मंगलवार को बाल मंदिर सभाकक्ष में विद्यारंभ प्रमाण पत्र एवं ग्रेजुएशन सेरेमनी कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में नपा उपाध्यक्ष महेश राठौर उपस्थित थे। महिला एवं बाल विकास जिला कार्यक्रम अधिकारी गौतम अधिकारी ने बताया कि मध्य प्रदेश में प्रारंभिक शिक्षा को नई पहचान देने की दिशा में राज्य में पहली बार आंगनबाड़ी केंद्रों में शाला पूर्व शिक्षा प्राप्त कर रहे 5 से 6 वर्ष के बच्चों को विद्यारंभ प्रमाण पत्र प्रदान कर उन्हें औपचारिक स्कूली

शिक्षा की ओर अग्रसर किया गया। कार्यक्रम में अभिभावक अपने बच्चों के साथ उपस्थित रहे एवं अभिभावक बच्चों को प्रमाण पत्र मिलते देख काफी प्रसन्न हुए। वहीं बच्चे भी कार्यक्रम में काफी उत्साहित नजर आए। कार्यक्रम में बच्चों द्वारा कविताएं भी सुनाई गई। लाडली बिटिया ज्ञानवी गुरबाने द्वारा सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है एवं इंकलाब जिंदाबाद जैसे देशभक्ति नारों को कविता के रूप में मनोहर प्रस्तुति दी गई। इस अवसर पर सहायक संचालक विवेक उईके एवं सीडीपीओ बैतूल शहर निरंजन सिंह उपस्थित रहे। इसके अलावा 24 मार्च को बाल चौपाल के अवसर पर जिले की सभी आंगनबाड़ी केंद्रों में समारोह पूर्वक प्रमाण पत्र वितरण गया, जिससे शाला पूर्व शिक्षा को सामाजिक और संस्थागत मान्यता मिल सके।

शहीद दिवस पर शहीदों को किया नमन

बैतूल। भीमराव रामराव अंबेडकर शिक्षा महाविद्यालय बैतूल में 23 मार्च को भगतसिंह, राजगुरू एवं सुखदेव के शहीद दिवस पर याद किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत महाविद्यालय के संचालक इंजी धुव्रप्रकाश अग्रवाल ने भगतसिंह, राजगुरु एवं सुखदेव को नमन कर श्रद्धासुमन अर्पित किए। प्राचार्य डॉ.जी.डी. देशमुख सर समस्त स्टाफ एवं बी.एड.स्कालर्स उपस्थित रहें।

नाबालिग का अपहरण वारदात होना चिंताजनक

सोहागपुर पुलिस की सफलता अपहृत बालिका सहित पांच आरोपी गिरफ्त में, दो चार पहिया वाहन जप्त

हीरालाल गोलानी सोहागपुर। सोहागपुर मे एक नाबालिग लड़की के अपहरण की वारदात ने नागरिकों के मन को झकझोर करके रख दिया है। ऐसा घटना को अंजाम देने वाली संभवतः पहली घटना है। हालांकि पुलिस की तत्परता से अपहरणकर्ताओं को पुलिस मय दो चार पहिया वाहनों के साथ गिरफ्तार कर लिया है। ऐसी घटना नगर के लिए बेहद चिंताजनक है। इस मामले में नगर निरीक्षक उषा मरावी एवं एएसआई गणेश राय बताया कि सोमवार को एक नाबालिग बालिका के अपहरण करने की शिकायत उसके परिजनों ने सोहागपुर पुलिस थाने में दर्ज करायी थी। जिसमें बालिका के पिता ने उसकी नाबालिक बालिका के अपहरण होने की सूचना पर दी थी। इस घटना को गंभीरता से लेकर तत्काल वरिष्ठ अधिकारियों को अवगत कराया गया। इस प्रकरण में पुलिस अधीक्षक श्री साई कृष्ण एस थोटा नर्मदापुरम,अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक श्री अभिषेक राजन एवं सोहागपुर एसडीओ पुलिस संजू चौहान ने तत्काल कार्रवाई के निर्देश दिए। वहीं राज्य हेल्पलाईन डायल 112 के माध्यम से भी घटना होने की सूचना

प्राप्त हुई। पता चला कि अपहृता को सोहागपुर मैन मार्केट की गली से लाल रंग की शिफ्ट कार एमपी 04 जेडआर 8590 में आरोपी हमजा खान, रिजवान खान, जाहिद खान के द्वारा कार में बैठाकर बाबई तरफ ले गये थे। जिसे अपहृता के भाई के देखकर पुलिस को सूचना देकर पीछा किया। वहीं सोहागपुर पुलिस ने माखन नगर पुलिस को सूचना दी। इसके अलावा सोहागपुर पुलिस ने रायसेन जिला पुलिस थाना बकतरा एवं रायसेन के ही थाना बाड़ी पुलिस से भी संपर्क करके घटना से अवगत कराया।आरोपियों को अंदेशा होने पर कि पुलिस पीछा कर रही है। तब रिजवान और जाहिद क्रियेटा कार लेकर अपहृता एवं हमजा को छोड़कर माखननगर से आगे चले गये थे। हमजा के दोस्त सलमान एवं संजू के द्वारा सफेद रंग की क्रियेटा कार क्रमांक एमपी 04 ईव्ही 5219 से वापिस फॉरेस्ट कॉलोनी सोहागपुर आए। घटना मे लिप्त उक्त सभी आरोपियों को पुलिस द्वारा तत्काल हिरासत में लिया गया। पुलिस की कार्यवाही में दो जिलों की पुलिस 4 थानों की पुलिस का तत्काल एक्शन एवं सतर्कता के कारण अपहृत नाबालिग बालिका को 04 घंटे के अंदर दस्तयाब किया गया। जिसमें सभी पांच आरोपीगण हमजा खान पिता मो. नजीर खान निवासी मस्जिद के पास बाड़ी जिला रायसेन रिजवान खान पिता रफीक खान निवासी वार्ड नं. 5 सोहागपुर सलमान खान उर्फ फैजल खान पिता जफ्फार खान निवासी पिजारा मोहल्ला माखननगर जाहिद खान पिता सलीम खान निवासी बजीरगंज कॉलोनी बाडी जिला रायसेन संजीव मीना पिता शेरसिंह मीना निवासी जमुनिया थाना माखननगर को पुलिस ने हिरासत में लिया है

इस मामले में मुख्य भूमिका:- निरीक्षक ऊषा मरावी, उपनिरीक्षक मेघा उदेनिया, प्रधान आरक्षक नरेन्द्र पटेल, आरक्षक दिनेश धुर्वे तथा सराहनीय भूमिका- एएसआई सार्जेंट गणेश राय, आरक्षक सुनील ओझा, आरक्षक विवेक सोनपुरे, आरक्षक राजकुमार की भूमिका रही।

किसानों को नहरों से मिलेगा पानी

हरदा में 27 मार्च, सिवनी मालवा को 1, इटारसी को 5 एवं सोहागपुर को 8 अप्रैल से नहरों का पानी छोड़ा जाएगा

सोहागपुर। कमिश्नर कार्यालय नर्मदापुरम में सोमवार को नर्मदापुरम संभागायुक्त श्री कृष्ण गोपाल तिवारी की अध्यक्षता में ग्रीष्मकालीन मूंग सिंचाई हेतु संभागीय जल उपयोगिता समिति की बैठक आयोजित संम्पन्न हुई। इस बैठक में पुलिस महानिरीक्षक श्री मिथलेश कुमार शुक्ला, डीआईजी श्री आशीष खरे, नर्मदापुरम कलेक्टर सुश्री सोनिया मीना, पुलिस अधीक्षक नर्मदापुरम श्री साई कृष्ण एस थोटा, नर्मदापुरम जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी श्री हिमांशु जैन, संयुक्त आयुक्त विकास श्री नवल मीना, मुख्य अभियंता जल संसाधन विभाग श्री राजाराम मीना सहित संबंधित अधिकारीगण उपस्थित थे। इस अवसर पर हरदा कलेक्टर श्री सिद्धार्थ जैन ऑनलाईन उपस्थित थे। बैठक में सर्व सहमति से निर्णय लिया

गया कि हरदा जिले हेतु बायीं तट मुख्य नहर से 27 मार्च 2026 को तवा नहर में पानी प्रवाहित किया जाएगा। तवा नहर संभाग सिवनी मालवा की रायगढ, मकढई एवं भिलाडिया उपनहर, मिसरोद उपनहर के लिए 1 अप्रैल 2026 से, तवा परियोजना संभाग इटारसी (सुपरली, इटारसी, होशंगाबाद उप नहर) के लिए 5 अप्रैल 2026 से तथा पिपरिया शाखा नहर संभाग सोहागपुर हेतु दायीं तट मुख्य नहर से किसानों की मांग के अनुसार 08 अप्रैल से जल प्रवाह शुरू कर दिया जाएगा।इस अवसर पर मुख्य अभियंता जल संसाधन विभाग श्री राजाराम मीना ने बताया कि तवा बांध में 865 एमसीएम/ 1143.30 फिट पानी है जिसमें से 771 एमसीएम पानी सिंचाई के लिए उपलब्ध रहेगा। कमिश्नर श्री कृष्ण गोपाल तिवारी ने नहरों की सुरक्षा के लिए पुलिस, जल संसाधन विभाग , राजस्व विभाग एवं एमपीबी के अमले को संयुक्त रूप से पेट्रोलिंग करने के निर्देश दिए हैं।

विश्व जल दिवस पर ग्राम हरदौट में सुजल ग्राम संवाद का आयोजन केंद्रीय मंत्री वीसी के माध्यम से हुए शामिल

विधायक डॉ चौधरी ने ग्रामीणों को जल का अपव्यय रोकने किया प्रेरित

रायसेन,(निप्र)। विश्व जल दिवस पर ग्राम हरदौट में सुजल ग्राम संवाद का आयोजन केंद्रीय मंत्री वीसी के माध्यम से हुए शामिल, विधायक डॉ चौधरी ने ग्रामीणों को जल का अपव्यय रोकने किया प्रेरित रायसेन, 22 मार्च 2026 रायसेन जिले के ग्राम हरदौट में दिनांक 22 मार्च 2026 को विश्व जल दिवस के उपलक्ष्य में जल जीवन मिशन अंतर्गत जल शक्ति मंत्रालय द्वारा 'सुजल ग्राम संवाद' का आयोजन किया गया। आयोजन में केंद्रीय मंत्री श्री सीआर पाटिल वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से जुड़े। सांची विधायक डॉ प्रभुराम चौधरी द्वारा बेगमगंज-गैरतगंज समूह जल प्रदाय योजना से हो रही नियमित जल आपूर्ति के संबंध में जानकारी दी गई तथा जल महोत्सव कार्यक्रम के सफल आयोजन हेतु शुभकामनाएँ एवं अभिनंदन किया गया। केंद्रीय मंत्री द्वारा जल सहभागिता के कार्यों, योजना के सुचारू एवं नियमित पेयजल प्रदाय के लिए बधाई दी गई।

साथ ही जलकर में जनभागीदारी, जल आपूर्ति व्यवस्था की जानकारी प्राप्त की तथा जल संरक्षण हेतु प्रेरणादायक संदेश दिया। इसके पश्चात जल शक्ति मंत्रालय के सचिव द्वारा वीसी के माध्यम से कलेक्टर श्री अरुण कुमार विश्वकर्मा से जिले में जल जीवन मिशन के अंतर्गत भविष्य की रूपरेखा एवं फेज-2 के कार्यों के संबंध में चर्चा की गई तथा जल संरक्षण हेतु किए जा रहे कार्यों की जानकारी ली गई।

जल महोत्सव कार्यक्रम के दौरान विधायक डॉ चौधरी द्वारा ग्रामीणों को योजना के प्रति जागरूक किया गया। साथ ही पानी के महत्व को समझाते हुए उसका अपव्यय न करने के लिए प्रेरित किया गया। कार्यक्रम में ग्राम जल एवं स्वच्छता समिति को योजना का नक्शा भेंट किया गया तथा उत्कृष्ट कार्य करने वाले समिति सदस्यों को प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया। ग्राम पंचायत की सरपंच श्रीमती राजबाई धाकड़, ग्राम जल एवं स्वच्छता समिति के सदस्यों तथा आंगनवाड़ी कार्यकर्ता श्रीमती राजकुमारी अहिरवार द्वारा सक्रिय सहभागिता करते हुए संवाद किया गया। इसके साथ ही जल गुणवत्ता जांच हेतु किट का प्रदर्शन किया गया।

कार्यक्रम के अंत में सभी ग्रामीणों को जल संरक्षण की शपथ दिलाई गई, जिससे भविष्य में जल संरक्षण के प्रति जागरूकता बढ़ाई जा सके। कार्यक्रम का समापन विधायक डॉ चौधरी द्वारा जल अर्पण एवं जल संरक्षण के संकल्प के साथ किया गया। कार्यक्रम में स्थानीय जनप्रतिनिधि, अधिकारी और ग्रामीणजन उपस्थित रहे।

निर्माणाधीन पुलिया में बाइक सहित गिरा युवक, मौत:शरीर में सरिया घुसा

2 दिन में दूसरा हादसा, 1 दिन पहले मिनी ट्रक गिरा था

रायसेन,(निप्र)। रायसेन से राहतगढ़ तक बन रहे स्टेट हाईवे पर निर्माणाधीन पुलिया में एक बाइक गिर गई। इस हादसे में भोपाल निवासी 32 वर्षीय ट्रक ड्राइवर अब्दुल कय्यूम की मौके पर ही मौत हो गई। पुलिया में निकले सरिए उसके शरीर में कई जगह घुस गए, जिससे मौत हो गई। सोमवार सुबह नकतरा चौकी पुलिस मौके पर पहुंची। शव को बाहर निकालकर पोस्टमॉर्टम के लिए जिला अस्पताल भेजा गया। इस सड़क पर दो दिन में यह दूसरा हादसा है। परिजन ने सड़क निर्माण कंपनी और ठेकेदार पर लापरवाही के आरोप लगाए हैं। उनका कहना है कि मौके पर कोई चेतावनी बोर्ड या सुरक्षा इंतजाम नहीं किए गए थे।

दोस्तों के साथ बेगमगंज जा रहा था युवक

भोपाल के शहीद नगर वार्ड-8 का रहने वाला अब्दुल कय्यूम रविवार-सोमवार की देर रात भोपाल से बेगमगंज जा रहा था। मामा लाजिम खान ने बताया कि कय्यूम रविवार को दोस्तों के साथ जाने की बात कहकर घर से निकला था।

ईद की छुट्टी पर आए थे घर, पीछे छोड़ गए 3 बच्चे

सोमवार सुबह नकतरा चौकी पुलिस को हादसे की सूचना मिली। इसके बाद पुलिस मौके पर पहुंची और शव को बरामद किया। परिजन के अनुसार अब्दुल ईद मनाने अपने घर आया था। परिवार में दो बेटियां और एक बेटा है। इसके अलावा दो भाई भी हैं।

मामा बोले- रोड पर नहीं लगाए गए सांकेतिक बोर्ड

परिजन ने सड़क निर्माण कंपनी और ठेकेदार पर गंभीर लापरवाही का आरोप लगाया है। मामा लाजिम खान ने कहा कि निर्माण कार्य में सुरक्षा नियमों की अनदेखी की जा रही है। डायवर्ट रोड पर कोई सूचना या सांकेतिक बोर्ड नहीं लगाए गए थे।

फलों से भरा मिनी ट्रक निर्माणाधीन पुलिया में गिरा था

मृतक कय्यूम के परिचित अली हसन ने सड़क निर्माण कंपनी पर गंभीर लापरवाही के आरोप लगाए हैं। उन्होंने बताया कि इस सड़क पर लगातार दुर्घटनाएं हो रही हैं। एक दिन पहले ही फलों से भरा मिनी ट्रक निर्माणाधीन पुलिया में गिर गया था, जिसमें चालक और क्लीनर गंभीर रूप से घायल हो गए थे। अली हसन के अनुसार, इससे पहले भी कई हादसे हो चुके हैं, जिनका मुख्य कारण सुरक्षा संकेतों की कमी है। उन्होंने कहा कि पुलिया निर्माण के दौरान डायवर्ट रोड पर कोई सूचना बोर्ड या चेतावनी संकेत नहीं लगाए गए थे, जिसकी वजह से यह हादसा हुआ।

विश्व जल दिवस पर कदंब के पेड़ की छांव में प्रकृति की पाठशाला आयोजित

सीहोर,(निप्र)। विश्व जल दिवस के अवसर पर जन अभियान परिषद द्वारा वन संवाद कार्यक्रम आयोजित किया गया और कदंब के पेड़ की छांव में प्रकृति की पाठशाला लगाकर जल एवं पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया गया। कार्यक्रम में संभाग समन्वयक श्री वरुण आचार्य ने कहा कि प्रकृति का श्रृंगार ही वन है और हम यदि इन्हें कटने से बचा पाएं जो हम अपनी पृथ्वी मां के सच्चे सपूत कहलाएंगे। उन्होंने कहा कि हम सभी को अपनी आदतों में पर्यावरण हितेषी कार्यों को अपनाना चाहिए और जल, जंगल, जमीन, जलवायु की चिंता करते हुए इनका संरक्षण करना चाहिए। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए प्रदेश सरकार द्वारा जल गंगा संवर्धन अभियान भी संचालित किया जा रहा है।

नर्मदापुरम के गेहूं के खेत में लगी आग भूसा मशीन से चिंगारी की आशंका

7-8 एकड़ गेहूं की फसल जली; कई किसानों को नुकसान

नर्मदापुरम,(निप्र)। नर्मदापुरम जिले में रविवार दोपहर खेतों में खड़ी गेहूं की फसल में अचानक आग लग गई। कुछ ही देर में आग ने विकराल रूप ले लिया और आसपास के क्षेत्र को अपनी चपेट में ले लिया। घटना कांद्राखेड़ी और सावलखेड़ा के बीच खेतों में हुई। दोपहर करीब 12:30 बजे अचानक आग भड़क उठी, जिससे ऊंची-ऊंची लपटें उठने लगीं। सूचना मिलते ही ग्रामीण मौके पर पहुंचे और झाड़ियों तथा पाइपलाइन के जरिए आग बुझाने का प्रयास शुरू किया। आग की तीव्रता को देखते हुए सिवनी मालवा, इटारसी और नर्मदापुरम से दमकल वाहन मौके पर पहुंचे। कड़ी मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया गया, लेकिन तब तक 7 से 8 एकड़ में खड़ी गेहूं की फसल जलकर पूरी तरह नष्ट हो चुकी थी। प्रारंभिक जानकारी के अनुसार, खेत में भूसा मशीन से काम किया जा रहा था। आशंका जताई जा रही है कि मशीन से निकली चिंगारी के कारण आग लगी, हालांकि इसकी आधिकारिक पुष्टि अभी नहीं हुई है। ग्रामीणों के मुताबिक, इस आग में गोविंद रघुवंशी की 3 एकड़, सत्यनारायण रघुवंशी की 3 एकड़, जयप्रकाश रघुवंशी की 2 एकड़ और नारायण रघुवंशी की 2 एकड़ गेहूं की फसल जल गई। इसके अलावा आग की चपेट में आकर एक भूसा मशीन भी जलकर नष्ट हो गई।

प्रशासन ने शुरू की जांच

तहसीलदार सुनील गढ़वाल ने बताया कि सूचना मिलते ही पटवारी और आरआई को मौके पर पंचनामा बनाने के लिए भेजा गया है। जांच के बाद ही नुकसान का सही आकलन और आग लगने के कारण स्पष्ट हो पाएंगे। वहीं थाना प्रभारी खुमान सिंह के अनुसार, भूसा मशीन से आग लगने की आशंका है।

रोजगार मेलों से संवर रहा युवाओं का भविष्य

सीहोर,(निप्र)। प्रदेश सरकार द्वारा युवाओं को रोजगार उपलब्ध कराने और उन्हें आत्मनिर्भर बनाने के उद्देश्य से निरंतर सार्थक प्रयास किए जा रहे हैं। इसी क्रम में शासन के निर्देशानुसार सीहोर जिले में रोजगार विभाग, उद्योग विभाग एवं अन्य संबंधित विभागों द्वारा प्रतिमाह रोजगार मेलों का आयोजन किया जा रहा है। ये रोजगार मेले न केवल युवाओं को निजी क्षेत्र की प्रतिष्ठित कंपनियों में रोजगार के अवसर प्रदान कर रहे हैं, बल्कि उन्हें स्वरोजगार की दिशा में भी अग्रसर होने के लिए प्रेरित कर रहे हैं।

इन रोजगार मेलों में विभिन्न निजी कंपनियां साक्षात्कार के माध्यम से युवाओं का चयन करती हैं, वहीं स्वरोजगार से संबंधित विभागों द्वारा योजनाओं के स्टॉल लगाकर युवाओं को शासन की जनकल्याणकारी योजनाओं की जानकारी दी जाती है। साथ ही, युवाओं को कम ब्याज दर पर ऋण उपलब्ध कराकर स्वयं का व्यवसाय स्थापित करने के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है।

रोजगार एवं स्वरोजगार से जुड़ रहे युवा

इसी पहल का सकारात्मक परिणाम 17 मार्च को आयोजित रोजगार मेले में देखने को मिला, जहां सीहोर के युवा मयंक गौर ने स्वरोजगार की दिशा में एक और मजबूत कदम बढ़ाया। मयंक ने मेले में लगाए गए स्टॉलों पर उद्यम क्रांति योजना एवं पीएमएफएमई योजना सहित विभिन्न योजनाओं की विस्तृत जानकारी प्राप्त की। उन्हें यह जानकर उत्साह मिला कि इन योजनाओं के माध्यम से बेहद सरल शर्तों पर ऋण प्राप्त कर अपना व्यवसाय शुरू किया जा सकता है।

मयंक पहले भी रोजगार मेले का लाभ उठा चुके हैं। उन्होंने बताया कि पूर्व में आयोजित रोजगार मेले के माध्यम से उन्हें पीएमएफएमई योजना के तहत ऋण प्राप्त हुआ था, जिससे उन्होंने सफलतापूर्वक अपना पोल्ट्री फार्म स्थापित किया। आज उनका व्यवसाय निरंतर प्रगति कर रहा है और अब वे अपनी प्रोसेसिंग यूनिट स्थापित करने की दिशा में भी कदम बढ़ा रहे हैं।

मयंक की यह सफलता की कहानी इस बात का प्रमाण है कि यदि सही मार्गदर्शन और अवसर मिलें, तो युवा न केवल स्वयं को आत्मनिर्भर बना सकते हैं, बल्कि अन्य लोगों के लिए भी रोजगार के अवसर सृजित कर सकते हैं। मयंक ने कहा कि रोजगार मेले जैसे आयोजन युवाओं के लिए अत्यंत उपयोगी हैं, क्योंकि यहां उन्हें एक ही स्थान पर रोजगार और स्वरोजगार दोनों के विकल्प मिलते हैं। उन्होंने शासन और जिला प्रशासन का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि इस प्रकार के आयोजन युवाओं के भविष्य को संवारने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

औबेदुल्लागंज-बैतूल हाईवे पर ट्राले-हार्वेस्टर की टक्कर

2 लोग घायल, 2 किमी लंबा जाम लगा, डेढ़ घंटे से ज्यादा देर थमे रहे पहिए

नर्मदापुरम,(निप्र)। नर्मदापुरम में औबेदुल्लागंज-बैतूल नेशनल हाईवे पर बागदेव पुलिया के पास सोमवार सुबह करीब 8 बजे एक ट्राले और हार्वेस्टर की आमने-सामने की टक्कर हो गई। हादसे में ट्राले का अगला हिस्सा क्षतिग्रस्त हो गया और ड्राइवर सहित दो लोग घायल हो गए। बीच सड़क पर वाहनों के फंसने से हाईवे पर 2 किलोमीटर लंबा जाम लग गया। सूचना पर पहुंची केसला थाना पुलिस ने घायलों को एंबुलेंस से इटारसी भेजा और क्रेन की मदद से सुबह 9.30 बजे वाहनों को हटाकर यातायात बहाल करा दिया है।

सुबह 8 बजे हुआ एक्सीडेंट, 2 किमी लंबा लगा जाम

हाईवे पर बागदेव पुलिया के पास ट्राले और हार्वेस्टर की आमने-सामने से भिड़ंत हो गई। टक्कर इतनी तेज थी कि ट्राले का अगला हिस्सा पूरी तरह क्षतिग्रस्त हो गया और ड्राइवर व एक अन्य व्यक्ति घायल हो गए। हादसे के बाद ट्राला और हार्वेस्टर दोनों बीच सड़क पर ही खड़े हो गए। इससे नेशनल हाईवे पर ट्रैफिक रुक गया और देखते ही देखते 2 किलोमीटर लंबी वाहनों की कतार लग गई।

9.30 बजे बहाल हुआ यातायात

क्रेन की मदद से सुबह करीब 9.30 बजे दोनों क्षतिग्रस्त वाहनों को सड़क से हटाकर एक तरफ किया गया। इसके बाद हाईवे पर वाहनों की आवाजाही शुरू हो सकी और धीरे-धीरे वाहनों को निकाला गया। बता दें कि 11 मुखी हनुमान मंदिर से केसला माता मंदिर तक जंगल क्षेत्र होने के कारण फोरलेन निर्माण का कार्य बंद पड़ा है। ऐसे में कुछ हिस्से में पुरानी सड़क और बाकी हिस्से में नए निर्माणाधीन रास्ते से ही वाहनों की आवाजाही हो रही है।

पुलिस ने क्रेन से हटवाए वाहन, घायलों को इटारसी भेजा

एक्सीडेंट और जाम की सूचना मिलते ही केसला थाना प्रभारी अपने स्टॉफ के साथ मौके पर पहुंचे। पुलिस ने सबसे पहले घायल ड्राइवर और दूसरे व्यक्ति को बाहर निकालकर एंबुलेंस की मदद से इलाज के लिए इटारसी भेजा। इसके बाद बीच सड़क पर फंसे हार्वेस्टर और ट्राले को हटाने के लिए क्रेन बुलाई गई।

केसला थाना प्रभारी उमाशंकर यादव ने बताया ट्राले और हार्वेस्टर की टक्कर में दो लोग घायल हुए हैं। एक्सीडेंट के बाद हार्वेस्टर और ट्राला सड़क पर ही थे, जिससे अन्य वाहन नहीं निकल पा रहे थे। इस वजह से जाम लगा। क्रेन से दोनों वाहनों को हटाया गया। जिसके बाद हाईवे पर ट्रैफिक शुरू हुआ। काफी लंबी वाहनों की कतार लग गई थी।

पिपरिया में भाजपा नेता पर जानलेवा हमला

पिपरिया,(निप्र)। पिपरिया के बनखेड़ी ब्लॉक में शनिवार शाम भाजपा नेता और उप सरपंच के बेटे सुनील कुमार उर्फ सोनू साहू पर जानलेवा हमला हुआ। नया गांव पंचायत के पास हुई इस घटना में आरोपियों ने पहले बाइक को टक्कर मारी और फिर लोहे के हथौड़ों से उन पर वार किए। इस मामले में पुलिस ने केस दर्ज कर लिया है, वहीं सरपंच संघ ने लामबंद होकर कार्रवाई की मांग की है। सोनू साहू ने पुलिस को बताया कि शनिवार को जब वे बाइक से अपने खेत जा रहे थे, तब पूर्व सरपंच हरिबाबू उर्फ रम्मू पटेल और खुमान पटेल ने अपनी डस्टर गाड़ी से उन्हें पीछे से टक्कर मार दी। जान बचाने के लिए भागते समय सामने से आए गोपाल पटेल और एक व्यक्ति ने उन्हें धक्का देकर गिरा दिया। आरोपियों ने 'तेरी नेतागिरी आज यहीं खत्म कर देंगे' कहते हुए लोहे के हथौड़ों और लातों से उन पर हमला कर दिया।

सिर और शरीर पर आई गंभीर चोटें

हमले में सोनू साहू के माथे, हाथ, पैर और कमर पर गंभीर चोटें आई हैं। आरोपियों ने मौके से भागते समय उन्हें जान से मारने की धमकी भी दी। गनीमत रही कि रास्ते से दूसरी मोटरसाइकिल को आता देख हमलावर वहां से फरार हो गए।

पुलिस और सरपंच संघ की सक्रियता

थाना प्रभारी विजय सनस के मुताबिक, मामले में धारा 109 (हत्या का प्रयास) और अन्य धाराओं के तहत केस दर्ज कर लिया गया है। इधर, घटना के विरोध में रविवार शाम सरपंच संघ के अध्यक्ष लखन पटेल और महासचिव गजेंद्र पटेल के नेतृत्व में बड़ी संख्या में सरपंचों ने थाने पहुंचकर ज्ञापन सौंपा और आरोपियों की जल्द गिरफ्तारी की मांग की।

हनुमान जी का गदा, त्रिशूल, चांदी का मुकुट चोरी:नर्मदापुरम में 3 मंदिरों में चोरी

लोग बोले- कॉलोनी में सुरक्षा व्यवस्था बढ़ाने पर जोर

नर्मदापुरम,(निप्र)। शहर के रसूलिया स्थित साईं ग्रीन सिटी कॉलोनी में चोरों ने धार्मिक स्थलों को निशाना बनाते हुए तीन मंदिरों से भगवान की सामग्री चोरी कर ली। रविवार सुबह जब रहवासी मंदिर पहुंचे तो दान पेटी, कलश, गदा, त्रिशूल, चांदी का मुकुट और बड़े घंटे गायब मिले। घटना के बाद कॉलोनी में हड़कंप मच गया। रहवासियों के अनुसार चोरों ने एक साथ तीन मंदिरों में वारदात को अंजाम दिया।

देवी मंदिर से दान पेटी, कलश और मंदिर का घंटा चोरी हुआ। हनुमान मंदिर से हनुमान जी की गदा गायब मिली। शंकर मंदिर से त्रिशूल, दान पेटी, पूजन सामग्री, बड़ा घंटा और चांदी का मुकुट चोरी कर लिया गया। चोरी का पता रविवार सुबह पूजा के लिए पहुंचे लोगों को लगा, जिसके बाद तुरंत पुलिस को सूचना दी गई।

सीसीटीवी फुटेज खंगाल रही पुलिस

सूचना मिलने पर देहात थाने से एएसआई दिनेश मेहरा टीम के साथ मौके पर पहुंचे और तीनों मंदिरों का निरीक्षण किया। कॉलोनी में लगे सीसीटीवी कैमरों की फुटेज खंगाली जा रही है और संदिग्धों से पूछताछ की जा रही है। पुलिस का कहना है कि जल्द ही आरोपियों की पहचान कर ली जाएगी।

रहवासियों में सुरक्षा को लेकर चिंता

लगातार मंदिरों को निशाना बनाए जाने से कॉलोनी के लोग चिंतित हैं। उनका कहना है कि जब चोर भगवान के मंदिरों को नहीं छोड़ रहे, तो आम घर भी सुरक्षित नहीं हैं। उन्होंने क्षेत्र में पुलिस गश्त बढ़ाने और सुरक्षा व्यवस्था मजबूत करने की मांग की है।

पहले भी हो चुकी है ऐसी वारदात

कुछ दिन पहले सर्किट हाउस घाट स्थित मंदिर में भी चोरी की घटना सामने आई थी, जहां एडीशनल एसपी के बंगले के पास मंदिर का कलश चुरा लिया गया था। उस मामले में कोतवाली पुलिस ने आरोपियों को गिरफ्तार किया था, जो नशे के आदी निकले थे।

मुख्यमंत्री ने संत-वृंद को सिंहस्थ -2028 के लिए किया आमंत्रित

भगवान श्रीकृष्ण के विराट व्यक्तित्व में सांदीपनि आश्रम का योगदान महत्वपूर्ण

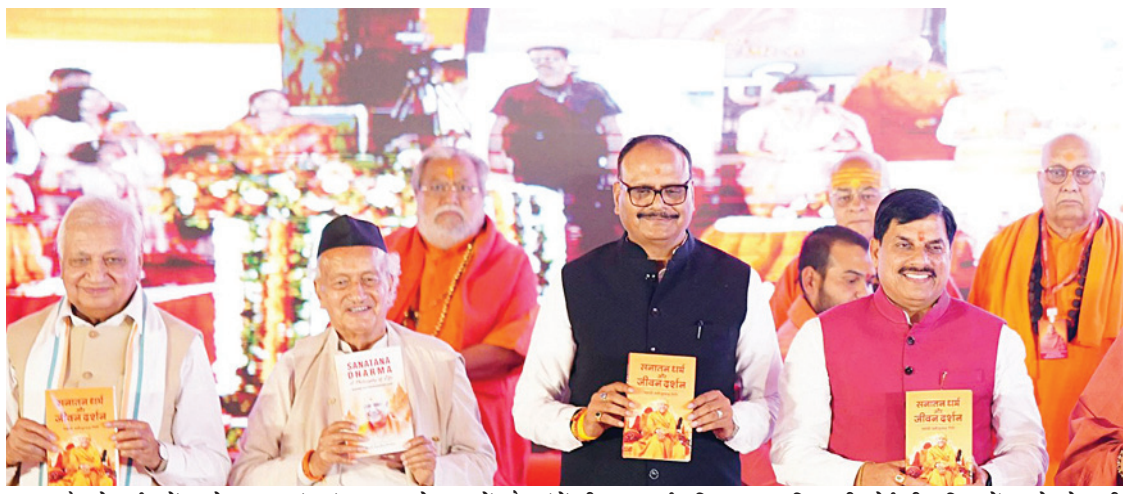

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि मध्यप्रदेश से मथुरा-वृंदावन-गोकुल क्षेत्र का 5000 वर्ष से जीवंत संपर्क रहा है। भगवान श्रीकृष्ण बृज में पराक्रम करने के बाद शिक्षा ग्रहण करने उज्जैन के सांदीपनि आश्रम पधारे थे। इस नाते विश्व के सम्मुख भगवान श्री कृष्ण का जो विराट व्यक्तित्व आया उसमें उज्जयिनी का योगदान रहा। मथुरा-गोकुल के समान मध्यप्रदेश भी सनातन के विचार को बनाए रखने और उसके विस्तार में योगदान देता रहा है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव वृंदावन में जीवनदीप आश्रम के लोकार्पण कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। कार्यक्रम में सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत, श्री पंच दस नाम जूना अखाड़ा महामंडलेश्वर जीवनदीप पीठाधीश्वर स्वामी यतींद्र आनंद गिरि, महामंडलेश्वर अवधेशानंद जी, साध्वी ऋतंभरा सहित समस्त संत वृंद तथा बिहार के राज्यपाल श्री आरिफ मोहम्मद खान भी मौजूद रहे। कार्यक्रम का शुभारंभ बालकों द्वारा प्रस्तुत हनुमान चालीसा के साथ हुआ। इस अवसर पर मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने वृंदावन में जीवनदीप आश्रम लोकार्पण समारोह में 'सनातन धर्म और जीवन दर्शन' पुस्तक का विमोचन किया।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि उज्जयिनी में वर्तमान में सिंहस्थ-2028 के लिए तैयारियां जारी हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने जीवनदीप आश्रम के लोकार्पण में पधारे समस्त संत वृंद को सिंहस्थ-2028 के लिए आमंत्रित करते हुए उनसे उज्जैन पधारने का अनुरोध किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने स्वामी यतींद्र आनंद गिरि जी की आध्यात्मिक यात्रा और समाज के लिए उनके द्वारा किए गए कार्यों का भी उल्लेख किया। संघ प्रमुख डॉ. भागवत ने कहा कि वर्तमान में विश्व के कई देशों की व्यवस्था लड़खड़ा रही है। सनातन धर्म-संस्कृति की ध्वजा कई विपरीत परिस्थितियों को झेलने के बाद भी पूर्ण गरिमा के साथ लहरा रही है। इसमें हमारे आश्रमों और संतों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। उन्होंने प्रदेश के बड़वानी जिले में सुश्री भारती ताई द्वारा गरीब बच्चों के लिए संचालित विद्यालय की सराहना की। पद्मभूषण से सम्मानित साध्वी ऋतंभरा ने कहा कि जीवनदीप आश्रम से वृंदावन की भव्यता में और वृद्धि होगी। संसार में विद्यमान बाधाओं से बढ़कर हमारी मन की आंतरिक बधाएं होती हैं, जो किसी कार्य को पूर्ण होने से रोकती हैं। उन्होंने कहा कि अगर हम लक्ष्य प्राप्ति के लिए मनसा वाचा कर्मणा, शत-प्रतिशत प्रयास करें तो दुनिया की कोई भी शक्ति हमें अपने ध्येय की प्राप्ति से रोक नहीं सकती।

बिहार और केरल के पूर्व राज्यपाल श्री आरिफ मोहम्मद खान ने कहा कि भारतीय संस्कृति में ज्ञान की धारा प्रवाहमान है। भविष्य में जीवन दीप आश्रम, ज्ञान के संरक्षण एवं संवर्धन का बड़ा केंद्र बनेगा। हमारे संतजन जनकल्याण के कार्य को समर्पित है। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने वृंदावन में श्री बांके बिहारी मंदिर में ठाकुर जी के दर्शन-पूजन कर सभी के लिए मंगलकामना की।

टीबी मुक्त भारत अभियान को देना होगा जनआंदोलन का रूप : उप मुख्यमंत्री

100 दिवसीय अभियान का प्रदेश में किया शुभारंभ

भोपाल (नप्र)। उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल ने विश्व टीबी दिवस के अवसर पर गांधी मेडिकल कॉलेज, भोपाल से प्रदेश में 100 दिवसीय टीबी मुक्त भारत अभियान का शुभारंभ किया। उन्होंने कहा कि यह केवल एक शासकीय कार्यक्रम नहीं, इस अभियान को जनआंदोलन का रूप देने होगा। अभियान में स्वास्थ्य अमले के साथ समाज के प्रत्येक वर्ग की भागीदारी आवश्यक है। उन्होंने कहा कि टीबी को जड़ से समाप्त करने के लिए समय पर पहचान, उपचार और पोषण अत्यंत महत्वपूर्ण है। यदि रोग की प्रारंभिक अवस्था में पहचान हो जाए, तो इसका प्रभावी और सरल प्रबंधन संभव है। इस दिशा में जागरूकता बढ़ाना और लोगों को जांच के लिए प्रेरित करना सभी की जिम्मेदारी है।

उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने प्रदेश के आम नागरिकों, जनप्रतिनिधियों, समाजसेवियों एवं स्वयंसेवी संगठनों से निक्षय पोषण योजना में सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करने की अपील की। उन्होंने टीबी मरीजों को पोषण सहायता प्रदान करने में समाज के जागरूक नागरिकों, समाजसेवियों से सक्रिय सहयोग आह्वान किया। उन्होंने पूर्व में अभियान में सहयोग देने वाले सभी वर्गों का आभार व्यक्त किया और स्वास्थ्य अमले–डॉक्टर, नर्स, पैरामेडिकल स्टाफ एवं फील्ड वर्कर्स–की निरंतर सेवा, समर्पण और कठिन परिश्रम की सराहना की। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि प्रदेश में पूर्व में किए गए समेकित प्रयासों की तरह ही इस बार भी सभी की सहभागिता से हम टीबी को हराकर टीबी मुक्त भारत के लक्ष्य को निश्चित रूप से प्राप्त करेंगे।

उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि राज्य सरकार स्वास्थ्य क्षेत्र में किसी भी प्रकार के संसाधनों की कमी नहीं आने दे रही है। स्वास्थ्य संस्थानों के सशक्तीकरण, उन्नयन, आधुनिक उपकरणों की उपलब्धता, चिकित्सा शिक्षा संस्थानों के विस्तार और पर्याप्त चिकित्सकीय मानव संसाधन सुनिश्चित करने के लिए निरंतर कार्य किया जा रहा है। सरकार का लक्ष्य है कि प्रदेश के किसी भी मरीज को संसाधनों के अभाव में अन्यत्र रेफर करने की आवश्यकता न पड़े और उसे स्थानीय स्तर पर ही गुणवत्तापूर्ण उपचार उपलब्ध हो। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने स्क्रीनिंग प्रक्रिया और निक्षय पोर्टल में एंट्री की प्रक्रिया का अवलोकन किया। उन्होंने एआई इनेबल्ड हैंडहेल्ड एक्स-रे की **13,428** सेवाओं को सुदृढ़ करने कार्यप्रणाली समझी। **फोकस क्षेत्रों** के लिए भी नवाचार कार्यक्रम के दौरान **की पहचान** किए जा रहे हैं। स्टाफ उप मुख्यमंत्री श्री की कमी को दूर करने शुक्ल ने निक्षय पोषण योजना के हेतु तकनीक का उपयोग करते हुए अंतर्गत टीबी मरीजों को फूड पारंपरिक एक्स-रे मशीनों के साथ-बास्केट वितरित किए। इसके साथ साथ प्रदेश में 86 एआई-सक्षम ही टीबी जागरूकता क्विज में उत्कृष्ट हैंडहेल्ड एक्स-रे मशीनों का प्रदर्शन करने वाले छात्रों को उपयोग किया जाएगा। इससे सम्मानित कर प्रोत्साहित किया। दूरस्थ एवं घनी आबादी वाले

एमडी एनएचएम डॉ सलोनी क्षेत्रों में भी तेज और सटीक सिडाना ने बताया कि मध्यप्रदेश स्क्रीनिंग संभव हो सकेगी। डीन, 100 दिवसीय निक्षय भारत गांधी मेडिकल कॉलेज डॉ कविता अभियान (7 दिसंबर 2024 से सिंह ने जानकारी दी कि प्रदेश में 24 मार्च 2025) के दौरान देश में टीबी प्रबंधन के क्षेत्र में लगातार अग्रणी रहा है। इस अवधि में 23 सुधार हुआ है। सक्रिय केस संवेदनशील जिलों के ग्रामीण क्षेत्रों फाइंडिंग, बेहतर रिपोर्टिंग और में सघन स्क्रीनिंग अभियान चलाया उपचार व्यवस्था के कारण टीबी गया, जिसमें संभावित मरीजों की नोटिफिकेशन दर में उल्लेखनीय पहचान कर उनका उपचार वृद्धि हुई है, जो वर्ष 2022 में 6 सुनिश्चित किया गया और उन्हें प्रतिशत थी और वर्ष 2026 में आवश्यक पोषण सहयोग भी प्रदान बढ़कर 11.48 प्रतिशत हो गई है। किया गया। उन्होंने बताया कि इस यह वृद्धि इस बात का संकेत है बार अभियान को और अधिक कि अधिक से अधिक मरीजों की प्रभावी बनाने के लिए आधुनिक पहचान कर उन्हें उपचार से जोड़ा तकनीकी साधनों का व्यापक जा रहा है। उन्होंने कहा कि उपयोग किया जा रहा है। उन्होंने भविष्य में भी इसी तरह की बताया कि इस बार प्रदेश में समन्वित रणनीति, तकनीकी आधुनिक तकनीकी का उपयोग कर एआई मैपिंग के द्वारा हेल्थ पैरामीटर्स के आधार पर प्रीडिक्टिव एनालिसिस से प्रदेश में 13,428 फोकस क्षेत्रों की पहचान की गई है, जिनमें मुख्य रूप से शहरी क्षेत्र शामिल हैं। इन चिन्हित क्षेत्रों में लक्षित रणनीति के तहत सघन स्क्रीनिंग, जांच एवं उपचार की व्यवस्था सुनिश्चित की जाएगी।

डॉ. सिडाना ने बताया कि रे डियोडायग्नोसिस

महाकाल मंदिर के पास उज्जैन में गरजा बुलडोजर

16 अवैध बिल्डिंगों को किया गया जमींदोज, सुरक्षा के तगड़े इंतजाम

उज्जैन (नप्र)। विश्व प्रसिद्ध महाकालेश्वर मंदिर के पास बेगम बाग क्षेत्र में 16 अवैध बिल्डिंगों पर बुलडोजर कार्रवाई हुई है। यह मुस्लिम बाहुल्य क्षेत्र है जो कि महाकाल मंदिर पहुंच मार्ग पर है। महाकाल मंदिर के नीलकंठ द्वार के पास कार्रवाई हुई है। यह प्रॉपर्टी उज्जैन विकास प्राधिकरण की है, जिसे 30 वर्ष की लीज पर आवासीय उपयोग के लिए दिया गया था। बावजूद इसके यहां धर्म विशेष के लोगों ने नियम विरुद्ध इसका व्यावसायिक उपयोग किया। लीज समाप्ति के बाद लीज का नवीनीकरण नहीं हो सका। जब उज्जैन विकास प्राधिकरण ने नोटिस दिए तो संबंधित लोग न्यायालय पहुंच गए। लोअर कोर्ट, हाई कोर्ट और सुप्रीम कोर्ट से स्टे खारिज होने के बाद अवैध अतिक्रमण पर अब यह कार्रवाई की जा रही है।

सुबह नौ बजे शुरू हो गई है कार्रवाई- मंगलवार की सुबह 9 बजे शुरू हुई कार्रवाई में किसी प्रकार का कोई विरोध प्रदर्शन देखने को नहीं मिला। दरअसल, यहां पिछले एक वर्ष के भीतर इसी प्रकार 42 बिल्डिंग को जमींदोंज किया गया था, तब जरूर विरोध हुआ था। आज कार्रवाई शांतिपूर्ण चल रही है। यहां 50 से अधिक पुलिस अधिकारी और जवान तैनात किए गए हैं। जिनमें सीएसपी, टीआई और जवान मौजूद हैं। वहीं, करीब 100 की संख्या में प्रशासन का भी अमला भी मौजूद है। जिसमें विकास प्राधिकरण सीईओ, नगर निगम की टीम, एसडीएम, तहसीलदार, पटवारी, निगमकर्मी शामिल है।

महाकाल मंदिर के पास है यह एरिया- वहीं, जिस जगह पर कार्रवाई चल रही है, यह महाकाल मंदिर के पास है। मुस्लिम बाहुल्य होने के कारण अति संवेदनशील क्षेत्र माना गया है। इसलिए यह रास्ता वाहनों के लिए पूरी तरह बंद कर दिया गया है। केवल श्राद्धलु पैदल जा रहे हैं।

1985 में आवंटित की गई थी भूमि- दरअसल, पूरा मामला इस प्रकार है कि उज्जैन विकास प्राधिकरण ने वर्ष 1985 में बेगम बाग क्षेत्र में भूखंड आवासीय तौर पर 30 साल की लीज पर दिए थे। भूखंड धारकों ने इन भूखंडों का उपयोग आवासीय तौर पर करने की बजाय पूरी तरह व्यावसायिक तौर पर कर लिया। जो कि नियम विरुद्ध था।

फ्लाईओवर की दीवार पर चला युवक, पत्नी बनाती रही वीडियो

जान जोखिम में डालकर रील, राहगीर ने चेताया, फिर भी करता रहा खतरनाक स्टंट

जबलपुर (नप्र)। जबलपुर में फ्लाईओवर पर रील बनाने को लेकर बार-बार चेतावनी के बावजूद लोग बाज नहीं आ रहे हैं। सोशल मीडिया पर एक बार फिर एक खतरनाक वीडियो तेजी से वायरल हो रहा है, जिसमें एक युवक फ्लाईओवर ब्रिज की ऊंची दीवार पर चलकर स्टंट करता नजर आ रहा है। वीडियो में दिख रहा है कि युवक की पत्नी नीचे खड़े होकर मोबाइल से उसका वीडियो शूट कर रही है, जबकि उनके साथ उनका बेटा भी मौजूद है। इस दौरान पास से गुजर रहे एक राहगीर ने पूरी घटना को कैमरे में कैद किया और युवक को आगाह भी किया कि जरा सा संतुलन बिगड़ा तो जान जा सकती है, लेकिन इसके बावजूद स्टंट जारी रहा। युवक फ्लाईओवर की ऊंची दीवार पर चल रहा है और पत्नी मोबाइल से उसका वीडियो शूट कर रही है। उनके साथ उनका बेटा भी मौजूद था। मामले को गंभीरता से लेते हुए पुलिस ने तुरंत संज्ञान लिया है। वरिष्ठ अधिकारियों ने मदन महल थाना पुलिस को निर्देश दिए हैं कि युवक की पहचान कर उसके खिलाफ कार्रवाई की जाए। अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक सूर्यकांत शर्मा ने साफ चेतावनी दी है कि फ्लाईओवर या किसी भी सार्वजनिक स्थान पर खतरनाक स्टंट करने वालों के खिलाफ सख्त कानूनी कार्रवाई की जाएगी।

प्रोफेसर ने बस में महिला से की अश्लील हरकत

पीड़िता ने चुपके से वीडियो बनाया, कॉलेज में छात्र-छात्राएं धरने पर बैठे, मांगा इस्तीफा

मैहर (नप्र)। मैहर जिले में सतना से रामनगर जा रही एक बस में सोमवार को महिला यात्री से अश्लील हरकत का मामला सामने आया है। पीड़िता ने वीडियो बनाकर शिकायत की, जिसके आधार पर पुलिस ने अमरपाटन पीजी कॉलेज के असिस्टेंट प्रोफेसर आलोक सिन्हा के खिलाफ केस दर्ज किया है।

पुलिस के मुताबिक, पीड़िता सतना से बस में सवार हुई थी। भटनवारा के पास बगल की सीट खाली हुई, जिस पर आलोक सिन्हा बैठ गया। उसने महिला से बातचीत करने की कोशिश की। कुछ देर बाद अश्लील हरकतें करने लगा।

महिला ने इन हरकतों को अपने मोबाइल फोन में रिकॉर्ड कर लिया। बस के अमरपाटन पहुंचते ही वह थाने गई और शिकायत दर्ज कराई। इसके बाद आरोपी ने महिला पर समझौते का दबाव बनाया। वह नहीं मानी तो जान से मारने की धमकी देकर फरार हो गया।

टीआई बोले- वीडियो को सबूत माना- अमरपाटन थाना प्रभारी विजय सिंह परस्ते ने बताया कि आरोपी के खिलाफ भारतीय न्याय संहिता की धारा 74 और 351(3) के तहत केस दर्ज किया गया है। महिला से वीडियो रिकॉर्डिंग को साक्ष्य के रूप में लिया गया है। फिलहाल पुलिस आरोपी की तलाश में जुटी है।

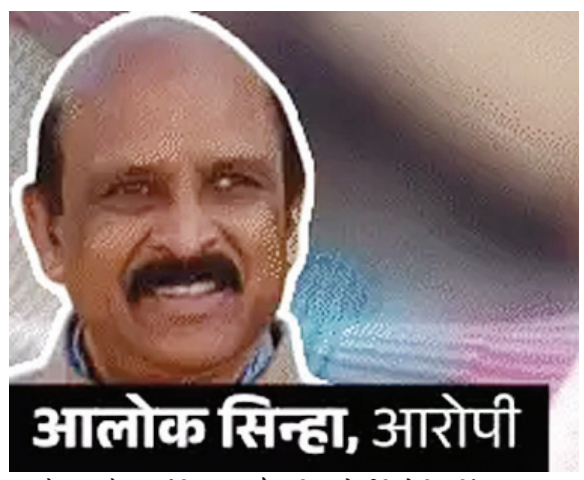

ऐसे हुई आरोपी की पहचान

महिला ने बताया कि आरोपी ने बातचीत की कोशिश के दौरान कहा था कि उसका नाम आलोक सिन्हा और वह अमरपाटन पीजी कॉलेज में असिस्टेंट प्रोफेसर है। जब वह कॉलेज के बाहर उतरा तो बस में सफर कर रहे छात्रों से उसके बारे में पूछा। उन्होंने मोबाइल में उसके फोटो दिखाए। इसके बाद पुलिस ने नामजद एफआईआर की।

पत्नी दिल्ली में, बेटी कनाडा में इंजीनियर

आरोपी आलोक सिन्हा मूलतः दिल्ली का रहने वाला है। वह 2015 से आमरपाटन में पदस्थ है। मैहर में अकेला रहता है। पत्नी दिल्ली में रहती है। वह हाउस वाइफ है। आरोपी की एक बेटी इंजीनियर है, जो शादी के बाद कनाडा शिफ्ट हो गई है।

अप्रैल माह में शुरु होगा समर कैंप, नई प्रतिभाओं को मिलेगा मंच : सारंग

भोपाल। सहकारिता, खेल एवं युवा कल्याण मंत्री श्री विश्वास कैलाश सारंग ने मंगलवार को टीटी नगर स्टेडियम, भोपाल स्थित मेजर ध्यानचंद हॉल में खेल एवं युवा कल्याण विभाग के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ विभागीय कार्यों की विस्तृत समीक्षा बैठक की। बैठक में विभागीय गतिविधियों और आगामी कार्य योजनाओं पर चर्चा कर आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। बैठक में मंत्री श्री सारंग ने अप्रैल माह में होने वाले समर कैंप की तैयारियों पर विशेष जोर देते हुए निर्देश दिए कि इसका आयोजन पुख्ता किया जाए, जिससे अधिक से अधिक नए बच्चे खेल मैदान तक पहुंचें और उनकी प्रतिभा को प्रारंभिक स्तर से ही पहचानकर उन्हें उत्कृष्ट खिलाड़ी के रूप में निखारा जा सके। मंत्री श्री सारंग ने कहा कि खेल अधोसंरचना के विकास को गति देने के उद्देश्य से विभाग का स्वयं का सिविल विंग स्थापित करने की दिशा में ठोस कार्य योजना के साथ एक प्रस्ताव तैयार करें।

तीन साल की गारंटी वाला इंडक्शन 6 महीने में ब्लास्ट

नरसिंहपुर में खाना बना रही मां और दो बच्चे बचे, खाने में बिखरे कांच के टुकड़े

नरसिंहपुर (नप्र)। मध्यप्रदेश के नरसिंहपुर में मंगलवार दोपहर खाना बनाते समय इलेक्ट्रिक इंडक्शन तेज धमाके के साथ फट गया। हादसे के वक्त किचन में मौजूद मां और उनके दो बच्चे बाल-बाल बच गए।

मामला खैरीनाका गांव का है। गृहिणी हेमा जाट ने बताया कि बेटा स्कूल से आया था और उसे भूख लगी थी। वह उसके लिए खिचड़ी बना रही थीं।

जैसे ही बर्तन उतारने की कोशिश की गई, इंडक्शन में तेज धमाका हो गया। कांच चकनाचूर होकर खिचड़ी और दूध में गिर गया, जिन्हें तुरंत फेंक दिया गया।

गैस खत्म, इसलिए इंडक्शन का इस्तेमाल- परिवार के मुताबिक, गैस सिलेंडर खत्म होने के बाद पिछले कुछ दिनों से इंडक्शन पर ही खाना बनाया जा रहा था। आशंका है कि लगातार उपयोग और ओवरहीटिंग के कारण हादसा हुआ।

6 महीने पुराना, 3 साल की गारंटी- हेमा के पति धर्मेंद्र जाट ने बताया कि इंडक्शन 6 महीने पहले गुलाब चौराहा स्थित दुकान से 2400 रुपए में खरीदा गया था और इस पर 3 साल की गारंटी थी। उन्होंने बताया कि इंडक्शन प्रेस्टीज कंपनी का था। घटना के बाद दुकानदार ने इसे वापस ले लिया है और नया देने का भरोसा दिया है।

मांडू के ऐतिहासिक दरवाजे में फंसा ट्रॉला

6 घंटे तक जाम,जीपीएस के कारण रास्ता भटका था, क्रेन से खींचकर पीछे किया, दीवार डैमेज

मांडू (धार) (नप्र)। मांडू-धार रोड पर प्रसिद्ध आलमगीर दरवाजे में मंगलवार सुबह 9 बजे एक 50 फीट लंबा कंटेनर फंस गया। उसे क्रेन की मदद से दोपहर 3 बजे हटाया जा सका। कंटेनर से दरवाजे से सटी दीवार क्षतिग्रस्त हो गई है। दोनों तरफ से यातायात भी बाधित हुआ, जिसमें मांडू आने-जाने वाले वाहन फंस गए थे। कुछ बसें यात्रियों को दरवाजे के पास उतारकर लौट गईं।

सूचना मिलने पर मांडू पुलिस के एएसआई दिनेश वर्मा टीम के साथ पहुंचे। स्थानीय लोगों की भीड़ भी जमा हो गए। गुजरात के इस कंटेनर के ड्राइवर पिंटू ने बताया कि वाहन में धरमपुरी के लिए सामग्री भरी हुई थी। उसे रास्ते की जानकारी नहीं थी। वह जीपीएस को फॉलो करते हुए यहां पहुंचा था।

50 फीट लंबा, 9 फीट 6 इंच ऊंचा है कंटेनर- पुलिस ने बताया कि आलमगीर दरवाजे में फंसने वाले कंटेनर की लंबाई लगभग 50 फीट (15.24 मीटर) है। यह एक हाई क्यूब कंटेनर है। इसकी ऊंचाई 9 फीट 6 इंच है। वाहन में 30-40 टन तक सामग्री भरी हुई है। कंटेनर फंसने के बाद यहां से गुजरने वाला ट्रैफिक डायवर्ट कर दिया गया था।

वास्तुकला के नजरिये से भी दरवाजा अहम

मांडू को सिटी ऑफ जॉय कहा जाता है। यहां के प्रवेश द्वार इसके गौरवशाली इतिहास के गवाह हैं। आलमगीर दरवाजा मांडू के उन 12 मुख्य द्वारों में से एक है, जो न केवल सुरक्षा की दृष्टि से, बल्कि वास्तुकला की दृष्टि से भी बहुत अहम है। इस दरवाजे का नाम मुगल बादशाह औरंगजेब के नाम पर रखा गया है, जिन्हें आलमगीर की उपाधि दी गई थी।

20 फीट से अधिक लंबे वाहन नहीं निकल सकते

मांडू के प्राचीन दरवाजों की बनावट ऐसी है कि 20 फीट से अधिक लंबे वाहन यहां नहीं निकल पाते हैं। यहां आने वाले देशी-विदेशी पर्यटक और स्थानीय वाहन, जिनकी लंबाई 19 फीट से अधिक होती है, वे अक्सर आलमगीर दरवाजे के बाहर ही रुक जाते हैं। इसके बाद पर्यटक टैक्सी या अन्य छोटे वाहनों से मांडू का भ्रमण करते हैं। भारतीय पुरातत्व विभाग के सीए प्रशांत पाटणकर का कहना है कि हम पिछले 26 साल से इन दरवाजों के अतिरिक्त वैकल्पिक मार्ग बनाने के लिए कई बार पत्र लिख चुके हैं। संबंधित विभाग ने अब तक इस पर कोई ध्यान नहीं दिया है।

घाट क्षेत्र में रोड संकरी है। दरवाजों के बीच की चौड़ाई भी कम है। इस कारण कई बार वाहन इन दरवाजों से टकरा जाते हैं। वाहनों का कंपन इन्हें कमजोर भी कर रहा है।